मेक इन इंडिया

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

स्वच्छ भारत
एक कदम स्वच्छता की ओर

रक्षक

छ:माही पत्रिका, अंक–13 (अप्रैल 2022 से सितंबर 2022)

कीटनाशक, फफूंदनाशी, शाकनाशी, बीज, उर्वरक, बॉयो पेस्टिसाइड्स, सूक्ष्म पोषक तत्व

हि इ लि
समृद्धि हेतु सुरक्षा

हिल (इंडिया) लिमिटेड
(भारत सरकार का उद्यम)

राजभाषा कीर्ति पुरस्कार

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के द्वारा हिंदी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन हेतु डॉ0 सिबा प्रसाद मोहंती, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, हिल (इंडिया) लिमिटेड को वर्ष 2021–22 के लिए माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री श्री अमित शाह जी के द्वारा प्रथम कीर्ति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। यह हिंदी दिवस समारोह पंडित दीनदयाल उपाध्याय इन्डोर स्टेडियम, सूरत (गुजरात) में आयोजित किया गया था।

रक्षक

समृद्धि हेतु सुरक्षा

छःमाही पत्रिका अंक–13 अप्रैल, 2022 से सितंबर, 2022 तक

मुख्य संरक्षक
श्री सुशांत कुमार पुरोहित
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

संरक्षक
श्री डी.एन.वी. श्रीनिवास राजू
निदेशक (वित्त)

श्री शशांक चतुर्वेदी
निदेशक (विपणन)

संपादक
श्री अजीत कुमार
सहायक प्रबन्धक (राजभाषा)

परामर्श समिति
श्री सुनील गौड़
श्री अनिल यादव
श्री राजेन्द्र थापर
श्री विजय कुमार गांधी
श्री अनिल सूद

सहयोग
श्री ओम प्रकाश साह
श्री अनुभव कुमार

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाओं की मौलिकता का पूर्ण दायित्व स्वयं लेखकों का है। अतः पत्रिका में निहित रचनाओं के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड प्रबंधन नहीं है।

» अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक की कलम से 2
» संदेश (निदेशक–वित्त) 3
» संदेश (निदेशक–विपणन) 4
» संपादकीय 5
» भारतीय कृषि में ड्रोन की उपयोगिता 6
» बजट 2023–24: भारत में तकनीकी ग्रैड कीटनाशकों के लिए अलग एच.एस.कोड की स्वीकृति 9
» कीटनाशकों के प्रयोग में सावधानियां 10
» वर्क प्लेस पर स्मार्ट वर्किंग 12
» केंद्रीय सतर्कता आयोग 14
» अंतरराष्ट्रीय मानकीकरण संगठन (आई.एस.ओ.) 16
» भाषा की परिभाषा, प्रकार और महत्व 18
» स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी की भूमिका 20
» दिल्ली प्रदुषण 23
» पोस्ट ऑफिस फिक्सड डिपाजिट 24
» वित्तीय संचालन क्या है? 25
» अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन वित्त के विभिन्न स्रोतों का वर्णन 27
» वित्त अधिनियम 2022 द्वारा किए गए संशोधन : मुख्य विशेषताएं 29
» इंटरनेट : ज्ञान का सुपर हाईवे 30
» डेटा साइंस का आज के युग में महत्व 32
» कंप्यूटर और इंटरनेट में हिंदी का महत्व 34
» आदमी की निगाह में औरत 38
» आधुनिक नारी 41
» अपने जीवन की कदर जानो 42
» स्वामी विवेकानंद की आध्यात्मिक अनुभूतियां 43
» सतनाम पंथ संत गुरू घासीदास 46
» खुशी का राज 49
» अनुशासन 50
» एक भारत श्रेष्ठ भारत 52
» एक भक्त को कैसा होना चाहिए 54
» आइये मनायें – छठ महापर्व 55
» मौत पीछा नहीं छोड़ती 57
» खुद को पहचानो 58
» झरने का पानी 59
» तुम कभी न भर पाओगे 59
» भारत के भविष्य 60
» सच्चा दोस्त/जाने के बाद 61
» अनजान मित्रता 62
» नारी शक्ति 62
» हिल, निगमित कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन 63
» हिल (इंडिया) लिमिटेड– हिन्दी पखवाडे का आयोजन 64
» राजभाषा विचार संगोष्ठी 65
» हिन्दी पखवाड़ा, 2022 समापन एवं पुरस्कार वितरण 66
» हिल (इंडिया) लिमिटेड– हिन्दी पखवाडे का आयोजन (बठिंडा यूनिट) 68
» हिल (इंडिया) लिमिटेड में स्वतंत्रता दिवस समारोह–2022 (गुरूग्राम) 70
» हिल (इंडिया) लिमिटेड में स्वतंत्रता दिवस समारोह–2022 (रसायनी/बठिंडा यूनिट) 71
» हिल में स्वच्छता पखवाड़ा 2022 72
» हिल (इंडिया) लिमिटेड रक्तदान शिविर 73
» सेवानिवृत्ति/स्वेच्छा सेवानिवृत्ति 74
» प्रशासनिक शब्दावली 76

अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक की कलम से

हिल (इंडिया) लिमिटेड की गृह पत्रिका ''रक्षक'' का नवीन अंक आपको सौंपते हुए मुझे अपार प्रसन्नता हो रही है। यह पत्रिका राजभाषा हिन्दी के प्रति रूचि बढ़ाने तथा गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम, राजभाषा नियम, अधिनियम एवं नीतियाँ से पाठकों को अवगत कराने के साथ–साथ कंपनी की विभिन्न गतिविधियों का भी दर्पण है। पत्रिका के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने से कार्मिकों की लेखन प्रतिभा में वृद्धि होती है।

आप सभी जानते हैं कि हिल (इंडिया) लिमिटेड जन–स्वास्थ्य एवं कृषि के क्षेत्र में अपना उत्कृष्ट योगदान देने के साथ–साथ एक ही स्थान पर कृषक समुदाय की सभी कृषि आदानों की आवश्यकताओं को समय पर एवं उचित दर पर पूरा करना तथा स्वच्छ और सुरक्षित प्रौद्योगिकी के माध्यम से गुणवत्ता वाले उत्पादन प्रदान करता है। इसमें फसलों की उत्पादकता को बढ़ाना और कंपनी की उत्पाद रेंज, निर्यात, दक्षता और उत्पादकता बढ़ाने के साथ–साथ सार्वजनिक स्वास्थ्य को भी बढ़ाना है। मैं यह बात भी गर्व के साथ बताना चाहूँगा कि हिल (इंडिया) लिमिटेड लंबे समय तक चलने वाली कीटनाशक मुक्त मच्छरदानी (एल.एल.आई.एन.) का विनिर्माणन करने वाला भारत सरकार का एक मात्र उपक्रम है। एल.एल.आई.एन. भारत सरकार के स्वास्थ्य मंत्रालय द्वारा देश में मलेरिया नियंत्रण एवं रोकथाम हेतु ग्रसित क्षेत्रों में वितरण किया जाता है। हिल स्वास्थ्य मंत्रालय को उच्च गुणत्तावान एल.एल.आई.एन. देने के लिए प्रतिबद्ध है। हिल (इंडिया) लिमिटेड ने देश के विभिन्न क्षेत्रों में समय–समय पर किसानों के लिए ''एकीकृत कीट एवं कीटनाशकों के सुरक्षित एवं विवेकपूर्ण उपयोग पर'' प्रशिक्षण देकर अपना सामाजिक दायित्व भी निभाया है। इस प्रकार के प्रशिक्षणों से किसानों की फसल लागत में कमी आएगी और उनका पशुधन, भूमिगत जल, पक्षी एवं वातावरण भी सुरक्षित रहेगा। हिल (इंडिया) लिमिटेड देश के ग्रामीण और कृषक समुदाय को उचित मूल्य और सर्वोत्तम गुणवत्ता पर जन–स्वास्थ्य और कृषि रसायन उत्पादों के निर्माण और आपूर्ति के लिए प्रतिबद्ध है।

यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि हिल को राजभाषा हिन्दी उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए इस वर्ष सूरत में हिन्दी दिवस एवं अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर आयोजित पुरस्कार वितरण समारोह में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा लागू नीति पुरस्कार योजना के अन्तर्गत माननीय गृहमंत्री के कर–कमलों से 'क' क्षेत्र में प्रतिष्ठित प्रथम कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया गया है तथा रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, रसायन एवं पेट्रो रसायन विभागों से वर्ष 2021 के लिए राजभाषा हिन्दी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुए हैं। संगठन के प्रधान कार्यालय में ही नहीं अपितु अधीनस्थ यूनिटों में भी राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में प्रगति हुई है। हमारे कार्मिक विभिन्न विषयों पर पत्रिका में लेखन कर इस पत्रिका को जन उपयोगी बना रहे हैं। जिसके फलस्वरूप नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–2), दिल्ली की बैठक एवं पुरस्कार वितरण समारोह में पत्रिका ''रक्षक'' को वर्ष 2021 के लिए उत्कृष्ट पत्रिका के लिए राजभाषा शील्ड प्राप्त हुई है।

हिन्दी में मौलिक लेखन को प्रोत्साहित करने एवं हिन्दी के प्रचार–प्रसार में पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान दे रही है। मुझे आशा है कि पत्रिका में निहित विभिन्न विषयों से संबंधित जानकारी सुधी पाठकों के लिए उपयोगी एवं रूचिकर सिद्ध होगी।

भविष्य में भी आप सभी कर्तव्यनिष्ठता और अधिक परिश्रम से संगठन को उच्च शिखर पर पहुंचाने के लिए अपना सर्वश्रेष्ठ प्रयास करते रहें। मेरी हार्दिक शुभकामनाएं सदैव आपके साथ है।

(सुशांत कुमार पुरोहित)
अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक

संदेश

यह पत्रिका ''रक्षक'' का नवीनतम अंक आपको सौंपते हुए मुझे अति प्रसन्नता हो रही है। राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार करना हमारा सामाजिक दायित्व होने के साथ–साथ संवैधानिक अनिवार्यता भी है। रक्षक पत्रिका हिल के कार्मिकों की हिन्दी में लेखन क्षमता बढ़ाने के साथ–साथ पाठकों को उपयोगी जानकारी देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। हिल (इंडिया) लिमिटेड का कारोबार जन–स्वास्थ्य, कृषि रसायन, बीज और उर्वरक का निर्माण एवं विपणन है, जिसका सीधा संबंध आम जनता और किसानों से है। हिल के कारोबार को प्रोत्साहित करने और किसानों के बीच संपर्क स्थापित करने में राजभाषा हिन्दी निःसंदेह एक सेतु का कार्य कर रही है। आज हिन्दी को विश्व की सशक्त तथा व्यापक भाषाओं की श्रेणी में होने पर गर्व है। मेरा यह मानना है कि भाषा की उन्नति ही राष्ट्र उन्नति का द्योतक है।

हिन्दी सारे देश को एकता के सूत्र में बांधती चली आई है। स्वतंत्रता आंदोलन के दिनों में अनेक सेनानियों ने हिन्दी को अपनाया, स्वयं उसका प्रयोग किया और अन्य लोगों को इस भाषा के प्रयोग के लिए प्रोत्साहित किया, जिससे स्वतंत्रता आंदोलन का संदेश सारे देश में जन–जन तक फैला। जिसके परिणामस्वरूप देवनागरी लिपि में लिखी जाने वाली हिन्दी, भारतीय संविधान के अनुच्छेद 343(1) के अनुसार संघ की राजभाषा बनी। आज हिन्दी अपने एक सीमित दायरे से बाहर निकलकर एक नए आकाश में अनेक रूपों में उड़ान भर रही है। यही कारण है कि कंपनी में काम–काज राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्टतापूर्वक हो रहा है। जिसके परिणाम स्वरूप हिल को राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा प्रतिष्ठित प्रथम कीर्ति पुरस्कार से समानित किया गया है। इसके अतिरिक्त नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम–2) दिल्ली से एवं हिन्दी सलाहकार समिति के द्वारा हिल को राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्यान्वयन एवं पत्रिका के लिए शिल्ड देकर सम्मानित किया गया है। हम राजभाषा विभाग गृह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों की प्राप्ति के लिए कृत संकल्प है। प्रधान कार्यालय के साथ–साथ सभी अधीनस्थ यूनिटों में भी राजभाषा हिन्दी का कार्यान्वयन दिनों–दिन बढ़ता जा रहा है।

मुझे आशा है कि इस पत्रिका के माध्यम से पाठकों को संगठन भी गतिविधियों की जानकारी मिलने के साथ–साथ पाठकों को सुरूचिपूर्ण एवं ज्ञानवर्धक लेख पढ़ने का अवसर मिलेगा। राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में 'रक्षक' अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करें, यही मेरी हार्दिक शुभकामना है।

डी.एन.वी. श्रीनिवास राजू
निदेशक (वित्त)

संदेश

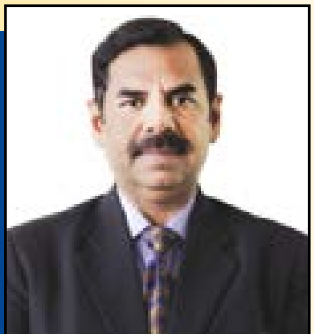

रक्षक पत्रिका का अंक 13 आपको प्रस्तुत करते हुए अपार प्रसन्नता हो रही है। हमारा सदैव यह प्रयास रहता है कि प्रेरणा और प्रोत्साहन के माध्यम से राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार अनवरत बढ़ाते रहें। पत्रिका के माध्यम से अपने विचारों को व्यक्त करने से कार्मिकों की लेखन प्रतिभा में वृद्धि होती है। कंपनी की गतिविधियों को जनसाधारण तक पहुंचाने में भी 'रक्षक' अपनी भूमिका निभाने में सफलता प्राप्त कर रही है। भाषा केवल अभिव्यक्ति का नहीं बल्कि देश को एक सूत्र में पिरोने का भी सशक्त माध्यम है। इस पत्रिका के माध्यम से हम राजभाषा हिन्दी का प्रचार–प्रसार करने के साथ–साथ कंपनी के कार्यकलापों, योजनाओं, उपलब्धियों और कारोबार संबंधी नवीनतम जानकारी के अतिरिक्त अन्य उपयोगी सामग्री पाठकों को उपलब्ध कराने का प्रयास करते हैं। यह हर्ष का विषय है कि पत्रिका अपने उद्देश्य का सफलतापूर्वक पालन कर रही है।

जैसा कि मैंने अपने पिछले अंक के संबोधन में कहा था कि कंपनी जन–स्वास्थ्य के साथ–साथ खड़ी फसलों की सुरक्षा के लिए उचित मूल्य पर गुणवत्तायुक्त कीटनाशकों की आपूर्ति करता है। फसलों को कीटों से बचाने के लिए कीटनाशकों को उचित मात्रा और उचित समय पर प्रयोग करने के लिए हिल द्वारा देश के विभिन्न राज्यों में किसानों को प्रशिक्षण भी दिया जाता हैं।

भारत के संविधान में हिन्दी भाषा को संघ की राजभाषा घोषित किया गया है। तद्नुसार केन्द्र सरकार द्वारा अपने मंत्रालयों, कार्यालयों और सार्वजनिक क्षेत्रों के उपक्रमों के लिए राजभाषा नियम, अधिनियम बनाए गए हैं। संवैधानिक दायित्वों के साथ–साथ हिन्दी हमारी भाषायी एकता की भी परिचालक है। अतः हमारा नैतिक कर्तव्य है कि हम हिन्दी का अधिक से अधिक प्रयोग करें। इस छःमाही के दौरान हमने अपने निगमित कार्यालय एवं अधीनस्थ यूनिटों में हिन्दी का अधिक से अधिक प्रचार–प्रसार करने के उद्देश्य से एवं राजभाषा विभाग के निर्देशों के अनुसार हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन करने के साथ–साथ कार्मिकों को अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए कार्यशाला के माध्यम से प्रशिक्षित भी किया गया।

यह हमारे लिए गौरव का विषय है कि हिल को राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा राजभाषा हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए माननीय गृहमंत्री के कर–कमलों से 'क' क्षेत्र में प्रतिष्ठित प्रथम कीर्ति पुरस्कार प्रदान किया गया है। रसायन एवं उर्वरक मंत्रालय, रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग से राजभाषा हिन्दी के श्रेष्ठ कार्यान्वयन के लिए प्रथम पुरस्कार तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से भी हिल को राजभाषा हिन्दी एवं गृह पत्रिका 'रक्षक' के लिए शिल्ड देकर सम्मानित किया गया है।

मुझे विश्वास है कि कंपनी के सभी कार्मिक टीम भावना से निरंतर कार्य करते हुए सभी क्षेत्रों में छवि उज्जवल बनाएंगे और कंपनी की प्रतिष्ठा निखारने में ग्राहकों को अच्छी सेवा देने में अपना अमूल्य सहयोग देंगे।

राजभाषा हिन्दी के प्रचार–प्रसार में ''रक्षक'' अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करे, यही मेरी हार्दिक कामना है।

शशांक चतुर्वेदी
निदेशक (विपणन)

संपादकीय

राजभाषा पत्रिका ''रक्षक'' का नवीन अंक आपको सौंपते हुए मुझे अपार हर्ष की अनुभूति हो रहा है। गृह पत्रिका किसी भी संगठन के कार्मिकों की रचनात्मक प्रतिभा को अभिव्यक्त करती है। देश–विदेश में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए बहुत से प्रयास किए जा रहे हैं। गृह पत्रिकाओं का प्रकाशन भी इन प्रयासों की एक कड़ी है। आज सरकारी तथा निजी क्षेत्र में हिन्दी को जनव्यापी बनाने में इन गृह पत्रिकाओं का बहुत बड़ा योगदान रहता है।

प्रत्येक अंक के साथ पत्रिका अपने नए कलेवर एवं नई रचनाओं के साथ पाठकों के लिए ज्ञानवर्धक बनी हुई है। प्रस्तुत अंक में सम्मिलित अधिकांश रचनाएं अवश्य ही आपके कोमल मन को स्पंदित करेंगी। इस अंक में भारतीय कृषि में ड्रोन की उपयोगिता, कीटनाशकों के प्रयोग में सावधानियां, भाषा की परिभाषा– प्रकार और महत्व, कम्प्यूटर एवं इंटरनेट में हिन्दी का महत्व, अपने जीवन की कदर जानो, स्वामी विवेकानन्द की अध्यात्मिक अनुभूतियां जैसी उपयोगी लेखों के साथ–साथ कंपनी में होने वाली विभिन्न गतिविधियों के सचित्र वर्णन को सम्मिलित किया गया है। हिल (इंडिया) लिमिटेड के निगमित एवं अधीनस्थ यूनिटों में राजभाषा हिन्दी से संबंधित विभिन्न संगोष्ठियों, कार्यशालाओं के साथ–साथ हिन्दी के प्रचार–प्रसार एवं कार्मिकों की हिन्दी के प्रति रूचि बढ़ाने हेतु सितंबर माह में राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय के निर्देशानुसार हिन्दी पखवाड़े का आयोजन किया गया, जिसमें विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। इन प्रतियोगिताओं में कार्मिकों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया। राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की राजभाषा नीतियों के अनुपालनार्थ अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में किया जाता है। इन्हीं प्रयासों के फलस्वरूप राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा लागू कीर्ति पुरस्कार योजना के अन्तर्गत कंपनी को प्रथम पुरस्कार मिला। यह पुरस्कार हमारे लिए अत्यन्त प्रेरणादायी है। इसी वर्ष रसायन और उर्वरक मंत्रालय की हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक में कंपनी को हिन्दी के उत्कृष्ट कार्यान्वयन के लिए प्रथम तथा नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति से हिन्दी के कार्यान्वयन तथा गृह पत्रिका ''रक्षक'' के लिए राजभाषा शिल्ड के रूप में प्रतिष्ठित पुरस्कार प्राप्त हुए है। इन प्रेरणादायी पुरस्कार के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड की ओर से हार्दिक आभार। भविष्य में भी राजभाषा हिन्दी के प्रयोग प्रचार एवं प्रसार के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड सदैव सघन प्रयास करती रहेगी।

मुझे आशा ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास है कि यह अंक उपरोक्त उपयोगी विषयों से संबंधित जानकारी जनमानस तक पहुँचाने के साथ–साथ पाठकों के लिए उपयोगी एवं रोचक साबित होगा।

अजीत कुमार

सहायक प्रबंधक (राजभाषा)

भारतीय कृषि में ड्रोन की उपयोगिता

कृषि प्रभाग

शशांक चतुर्वेदी
निदेशक (विपणन), निगमित कार्यालय

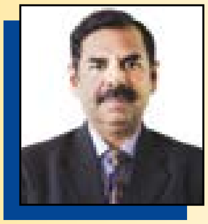

दुनियाभर में कृषि कार्यों के लिए आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और ड्रोन का उपयोग बढ़ रहा है। भारत में भी सरकार कृषि क्षेत्र में तकनीक के उपयोग को बढ़ावा दे रही है, ताकि बेहतर उपज के साथ–साथ किसानों की आय में भी वृद्धि हो। महाराष्ट्र, राजस्थान आदि राज्यों के तमाम किसान खेती–किसानी के कार्यों में ड्रोन का उपयोग करने लगे हैं। कृषि ड्रोन खेती के आधुनिक उपकरणों में से एक है, जिसके इस्तेमाल से किसानों को काफी मदद मिल सकती है। ड्रोन से बड़े क्षेत्रफल में महज कुछ मिनटों में कीटनाशक, खाद या दवाओं का छिड़काव किया जा सकता है। इससे न सिर्फ लागत में कमी आएगी, बल्कि समय की बचत भी होगी। सबसे बड़ा फायदा यह होगा कि सही समय पर खेतों में कीट प्रबंधन किया जा सकेगा।

कृषि क्षेत्र में दक्षता बढ़ाने के लिए ड्रोन का प्रयोग एक बड़े बदलाव की नीव रख सकता है। ड्रोन तकनीकी कुशल मानव संसाधनों की कमी और अन्य भारी मशीनों और उपकरणों के लिए भी विकल्प सिद्ध हो सकता हैं। कुछ हद तक, यह कृषि प्रबंधन करने का एक सस्ता और किफायती तरीका है। ड्रोंस में नियर इन्फ्रारेड सेंसरों और मल्टी स्पेक्ट्रल कैमरों का उपयोग किया जाता हैं, उच्च गुणवत्ता वाले डेटा एकत्र किया जाता हैं, पोस्ट–प्रोसेसिंग और उच्च प्रसंस्करण में भू–रेफर्ड रिफ्लेक्शन मैप्स, एलिवेशन और वनस्पति सूचकांक का निर्माण करते हैं। जो लोग कृषि में तकनीकी सुधार एवं भागीदारी की तलाश में हैं, उनके लिए यह स्मार्ट खेती का बहुत ही अच्छा अवसर हो सकता है। एकत्रित उच्च गुणवत्ता के डेटा को पौध–स्वास्थ्य निगरानी कीटनाशक छिड़काव, प्लांट काउंटिंग, शेड्यूलिंग, सीडिंग और कटाई के उपयोग किया जा सकता है।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस सक्षम ड्रोन का उपयोग सटीक खेती के लिए किया जाता है जो उत्पादकता और इस प्रकार कृषि आय को बढ़ाता है। ड्रोन के बहुआयामी उपयोग हैं। वे कृषि कार्यों को तेज और अधिक कुशल बनाते हैं। वे उर्वरकों और कीटनाशकों का इष्टतम उपयोग करके और बीजों की समान बुवाई सुनिश्चित करके किसानों को महत्वपूर्ण धन बचाने में भी मदद करते हैं। रसायनों का छिड़काव एक समय लेने वाली प्रक्रिया है और यह स्वास्थ्य के लिए खतरा है। ड्रोन कम ऊंचाई (1–3 मीटर) पर फसलों के ऊपर उड़ सकते हैं, जिससे पोषक तत्वों और कीटनाशकों का छिड़काव प्रभावी और कुशल हो जाता है, साथ ही किसानों को कैमरों के माध्यम से खड़ी फसलों का आकलन करने की अनुमति मिलती है। यह सब न केवल उच्च उत्पादकता की सुविधा प्रदान करता है बल्कि फसल आदानों पर खर्च को भी कम करता है।

ड्रोन के लिए सरकारी समर्थन और प्रोत्साहन तब स्पष्ट हुआ जब भारत के प्रधान मंत्री ने मई 2022 में भारत के सबसे बड़े ड्रोन महोत्सव–भारत ड्रोन महोत्सव का उद्घाटन किया। प्रधान मंत्री ने ड्रोन के उपयोग को भारतीय कृषि के लिए एक मील का पत्थर कहा और विश्वास व्यक्त किया कि इससे अधिक अवसर पैदा होंगे। भारत सरकार ने किसान ड्रोन की एक नई योजना के तहत विभिन्न कृषि–संबंधित प्रशिक्षकों, किसान उत्पादक संगठनों (एफपीओ) और कस्टम हायरिंग सेंटर (सीएचसी) को ड्रोन खरीदने और बढ़ावा देने के लिए भारी सब्सिडी दी है। ये ड्रोन सरकारी एजेंसियों के लिए भी मददगार हैं क्योंकि इनका उपयोग उत्पादन अनुमानों के फसल मूल्यांकन या कृषि बीमा की प्रक्रिया, भूमि रिकॉर्ड के डिजिटलीकरण के लिए किया जा सकता है, और दावा प्रसंस्करण में तेजी ला सकता है और पारदर्शिता ला सकता है।

कई राज्य सरकारों ने रूचि दिखाई है जैसे कि आंध्र प्रदेश सरकार ने 200 किसान ड्रोन खरीदने का फैसला किया है, जो श्रमिकों की कमी और स्वास्थ्य संबंधी खतरों की समस्या का समाधान करेगा। अत्यधिक बारिश के कारण खेतों में पारी भर गया, कर्नाटक ने पारदर्शिता लाने के लिए फसल मूल्यांकन के लिए ड्रोन का उपयोग करने का निर्णय लिया। तमिलनाडु ने भी कृषि और खेती को लाभदायक और टिकाऊ बनाने के लिए डिजिटल हस्तक्षेप के एक हिस्से के रूप में ड्रोन को शामिल किया है। गुजरात, राजस्थान भी डिजिटल क्रांति की यात्रा में शामिल हो गए हैं।

2020 में ड्रोन का इस्तेमाल लोकस हमलों को रोकने के लिएि किया गया, जिससे लाखों हेक्टेयर खेत की बचत हुई। किसानों को ड्रोन चलाने का प्रत्यक्ष अनुभव और उनकी उपयोगिता जैसे मिट्टी की नमी

का परीक्षण करने का अनुभव मिल रहा है, जो पारंपरिक तरीकों से संभव नहीं है। राज्य सरकारों को विश्वास है कि ड्रोन न केवल किसानों के लिए बल्कि पूरी कृषि अर्थव्यवस्था के लिए गेम चेंजर साबित होंगे।

किसान इन्फ्रारेड कैमरों का उपयोग करके खेत की फसल निगरानी कर सकते हैं और फसल की वृद्धि, संक्रमण और इनपुट की आवश्यकता के बारे में वास्तविक समय की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। इससे किसानों को किसी भी समस्या का जल्द समाधान करने में मदद मिलती है और उसे जड़ से खत्म करने के लिए सक्रिय कदम उठाने पड़ते हैं। अच्छी कृषि पद्धतियों को अपनाने में किसानों की सहायता करने के अलावा, ड्रोन के अनुप्रयोगों का उपयोग जल प्रसार क्षेत्रों, कीट संक्रमण और पशुधन की खेती के मानचित्रण के लिए भी किया जा सकता है। फसलें प्रदूषण मुक्त हो सकती हैं, जिससे उन्हें अच्छी निर्यात कीमत मिल सकती है।

ड्रोन के बहुआयामी उपयोगिता

सिंचाई निगरानी और प्रबंधनः ऐसे ड्रोन जो हाइपरस्पेक्ट्रल, मल्टीस्पेक्ट्रल तथा थर्मल सेंसर से लैस होते है, किसी खेत का कौन सा हिस्सा सूखा है या पानी की जरूरत हैं, की पहचान कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त, जब एक बार फसल बड़ी हो जाती है तो ड्रोन वनस्पति सूचकांक की गणना कर सकता है, साथ ही साथ फसल का घनत्व और स्वास्थ्य, उष्मा उत्सर्जन की मात्रा गणना कर सकता है। इस जानकारी के आधार पर, संवेदनशील फसलों के जल निकासी को अधिकतम और पानी के जमाव से बचाया जा सकता है।

फसल मानचित्रण और सर्वेक्षणः एनआईआर ड्रोन सेंसर के उपयोग से, प्रकाश अवशोषण के आधार पर पौधे के स्वास्थ्य का निर्धारण किया जा सकता हैं, जिससे समग्र भूमि के स्वास्थ्य के बारे में एक दृष्टिकोण मिल जाता है।

भू और क्षेत्र विश्लेषणः ड्रोन को फसल चक्र की शुरुआत से ही कार्यान्वित किया जा सकता है। ये ड्रोंस शुरुआती भू–विश्लेषण के लिए सटीक 3–डी नक्शे तैयार करते हैं, बीज बोने की योजना बनाने में उपयोगी पैटर्न प्रदान करते है। रोपाई के बाद ड्रोन से प्राप्त भू–विश्लेषण का डाटा सिंचाई एवं नाइट्रोजन–स्तर प्रबंधन के काम आता है। इस तरह की सतत निगरानी जल संसाधनों का बेहतर उपयोग करने में मदद कर सकती है तथा फसल पोषक तत्वों के स्तर का प्रबंधन अधिक प्रभावी ढंग से कर सकती है।

छिड़कावः ड्रोन जमीन को स्कैन करते हैं तथा तरल की सही मात्रा का छिड़काव फसल पर करते है। जमीन से सटीक दूरी और कवरेज के लिए वास्तविक समय में छिड़काव किया जाता है, जो जीपीएस से समकालिक होता है। परिणामस्वरुप दक्षता में वृद्धि के साथ–साथ रसायनों का मिट्टी में घुलना एक अप्रत्यक्ष हानिकारक प्रभाव डालता है। विशेषज्ञों का मानना है कि ड्रोन हवाई छिड़काव की कार्यक्षमता पारंपरिक मशीनरी की तुलना में पांच गुना ज्यादा होती है।

कीटनाशकों का छिड़कावः ड्रोन के माध्यम से फसलों पर कीटनाशकों का छिड़काव करना आसान हो गया है। यह हानिकारक रसायनों से मानव संपर्क को भी सीमित करता है। कृषि ड्रोन इस कार्य को पारंपरिक तरीके की तुलना में बहुत तेजी और बेहतर तरीके से अंजाम दे सकता है। आरजीबी सेंसर और मल्टीस्पेक्ट्रल सेंसर वाले ड्रोन समस्याग्रस्त क्षेत्रों की सटीक पहचान और उपचार कर सकते हैं। अन्य तरीकों की तुलना में ड्रोन से हवाई छिड़काव पांच गुना तेज होता है।

वास्तविक समय में पशुधन की निगरानीः कुछ ड्रोन, थर्मल इमेजिंग कैमरों से लैस होतें हैं जो एकल पायलट को पशुधन प्रबंधन और निगरानी करने में सक्षम बनाते हैं। यह तकनीकी किसानों को पशुधन का अधिक से अधिक आवृत्ति में और कम समय में प्रबंधन एवं देखरेख करने की सुविधा प्रदान करता है। ड्रोन ऑपरेटर आसानी से झुंड में जांच कर सकता है कि कोई पशु घायल या गुमशुदा टी नहीं है, साथ ही ऐसे पशुओं की वास्तविक समय में निगरानी कर सकता है जो बच्चो को जन्म देने वाले हैं।

पशुधन ट्रैकिंगः ड्रोन सर्वेक्षण से किसान न केवल अपनी फसलों पर नजर रख सकते हैं, बल्कि अपने मवेशियों की गतिविधियों पर भी नजर रख सकते हैं। थर्मल सेंसर तकनीक खोए हुए जानवरों को खोजने में मदद करती है।

बीज रोपणः ड्रोन से बीज रोपण, अपेक्षाकृत एक नई तकनीक है और यह व्यापक रूप से उपयोग नहीं किया जाता है, लेकिन कुछ कंपनियां ड्रोन रोपण के साथ प्रयोग कर रही हैं। अनिवार्य रूप से, निर्माता सिस्टम के साथ भिन्न– भिन्न प्रयोग कर रहे हैं, जो बीज को तैयार मिट्टी में सीधे प्रविष्ट कराने की क्षमता रखते हैं।

फसल स्वास्थ्य की निगरानीः फसलों में बैक्टीरिया आदि के बारे में शुरुआती दौर में ही पता लगाना मुश्किल होता है, मगर कृषि ड्रोन के लिए यह आसान है। ड्रोन देख सकता है कि कौन से पौधे अलग–अलग मात्रा में ग्रीन लाइट प्रदर्शित करते हैं। यह डाटा फसल स्वास्थ्य को ट्रैक करने के लिए मल्टीस्पेक्ट्रल इमेज बनाने में मदद करता है। इसके बाद लगातार निगरानी से फसलों को बचाने में मदद मिल सकती है।

मृदा विश्लेषणः ड्रोन सर्वेक्षण किसानों को उनके खेत की मिट्टी की स्थिति के बारे में जानकारी एकत्र करने की सुविधा देता है। मल्टीस्पेक्ट्रल सेंसर बीज रोपने के पैटर्न, पूरे क्षेत्र की मिट्टी का विश्लेषण, सिंचाई और नाइट्रोजन–स्तर के प्रबंधन के लिए उपयोगी डाटा को हासिल करने में मदद कर सकता है। सटीक 3डी मैपिंग से किसान अपने खेत की मिट्टी की स्थिति का अच्छी तरह से विश्लेषण कर सकते हैं।

फसल नुकसान का आकलनः ड्रोन की मदद से फसल के नुकसान का आकलन भी किया जा सकता है। मल्टीस्पेक्ट्रल सेंसर और आरजीबी सेंसर के साथ आने वाले कृषि ड्रोन खर–पतवार, संक्रमण और कीटों से प्रभावित क्षेत्रों का पता लगा सकते हैं। फिर डाटा के अनुसार संक्रमण से लड़ने के लिए रसायनों का सही मात्रा का उपयोग कर लागत को कम कर सकते हैं।

भारत में ड्रोन उपयोग की कुछ सीमायें

भारत में कृषि क्षेत्र में ड्रोन के प्रयोग के कानूनी प्रावधान हैं। नागरिक उड्डयन महानिदेशक ने ड्रोन के लिए अपनी नीति की घोषणा की है। 1 दिसंबर, 2018 से प्रभावी होने वाली नई नीति यह परिभाषित करती है कि ड्रोन को छोटे एवं दूरस्थ पायलट वाले विमान के रूप में वर्गीकृत किया गया, उन्हें कैसे उड़ाया जा सकता है और उन्हें किस प्रतिबंध के तहत संचालित करना होगा इसकी विस्तृत जानकारी इंटरनेट पर उपलब्ध है। ड्रोन संचालकों को यह सुनिश्चित करना चाहिए कि वे सरकार द्वारा जारी गाइडलाइन्स का पालन करें जब एक 250 ग्राम, से ज्यादा भार का ड्रोन उड़ान भरता है।

ड्रोंस को संचलित करने की कुशल एवं तकनीकी व्यक्तियों की आवश्यकता होती है, जो भारत जैसे देश थोड़ा मुश्किल है। उच्च गुणवत्ता के डाटा पाने की लिए कुछ महगें उपकरणों की जरूरत होती है, जिससे ड्रोंस की प्रारंभिक लागत ज्यादा होती है, जो भारत में छोटे किसानों के द्वारा इस तरह की तकनीकी को चुनने में असफल बनाती है।

निष्कर्ष

वर्तमान समय में, खेती में बढ़ते नित्य नए प्रयोगों को छोटे स्तर पर संचालित करने की आवश्यकता है। आधुनिक समय की मांग के अनुसार, कृषि में ड्रोंस के प्रयोगों को जगह देनी चाहिए। इसलिए समय की मांग यह है की भारत में भी सरकार के द्वारा ड्रोंस एवं डिजिटल तकनिकी के प्रति किसानों, लोगों को जागरूक किया जाए। हां, आर्थिक समस्या, भारतीय किसानों के लिए एक बड़ा मुद्दा है लेकिन यथासंभव सरकारी मदद के प्रावधान से इस समस्या का हाल किया जा सकता है। जागरूकता की पहल किसान मेलों, कृषि विश्वविद्यालयों, कृषि विज्ञान केंद्र से की जा सकती है। कृषि ड्रोन किसान की निगरानी करने की क्षमता में वृद्धि करने में सहायक है तथा दूरस्थ कृषि व्यवसाय के प्रबंधन को भी संभव बनाता है। अंततः यह कहा जा सकता है की ऐसी तकनीकी जो एक सैन्य कार्यो के लिए विकसित की गयी थी अब ग्रीन–टेक्नोलॉजी के रूप में विभिन्न क्षेत्रों के विकास के लिए तत्पर है। ■

बजट 2023-24: भारत ने तकनीकी ग्रेड कीटनाशकों के लिए अलग एच.एस. कोड को स्वीकृति दी

शशांक चतुर्वेदी
निदेशक (विपणन), निगमित कार्यालय

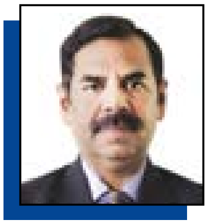

यह कीटनाशक उद्योग की लंबे समय से लंबित मांग थी तथा वित्त मंत्रालय और रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग दोनों ने सक्रिय कदम उठाया है जिससे घरेलू कीटनाशक विनिर्माताओं को बड़े पैमाने पर लाभ होगा।

केंद्रीय बजट 2022–23 में रसायन और पेट्रोरसायन विभाग, रसायन और उर्वरक मंत्रालय, भारत सरकार की तकनीकी ग्रेड कीटनाशकों के लिए पृथक एच.एस. कोड वर्गीकरण की संस्तुतियों को सवीकृति दे दी है, जिससे तकनीकी ग्रेड के उत्पादों को अध्याय 38 से अध्याय 29 में स्थानांतरित कर दिया गया है।

यह उद्योग की लंबे समय से लंबित मांग थी तथा वित्त मंत्रालय और रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग दोनों ने सक्रिय कदम उठाया है जिससे घरेलू कीटनाशक विनिर्माताओं को बड़े पैमाने पर लाभ होगा।

वर्तमान में, तकनीकी श्रेणी उत्पादों और फॉर्मूलेशन उत्पादों दोनों को अध्याय 38 के अंतर्गत वर्गीकृत किया गया है और यह समस्या पैदा करता है जब तकनीकी ग्रेड कीटनाशकों (जो उपयोग उत्पादों का निर्माण कर रहे हैं) और तैयार उत्पादों का उपयोग करने के लिए तैयार कीटनाशकों पर समान सीमा शुल्क लागू होते हैं। अतः इस एच.एस. कोड से इसको नियंत्रित किया जा सकता है।

कीटनाशक विनिर्माणन क्षेत्र के विशेषज्ञों के अनुसार तकनीकी श्रेणी उत्पादों और फॉर्मूलेशन उत्पादों के अलग एच.एस. कोड वर्गीकरण से स्वदेशी विनिर्माण को बढ़ावा मिलेगा।

साथ ही सरकार के उपरोक्त निर्णय से कृषि रसायन/कीटनाशकों के स्थानीय उत्पादन को प्रोत्साहित करने और बढ़ाने में सहायता मिलेगी, 'मेक इन इंडिया' और 'आत्मनिर्भर' कृषि रसायन क्षेत्र की दृष्टि को बढ़ावा मिलेगा।

इस सफलता के लिए वित्त मंत्रालय और रसायन एवं पेट्रो रसायन विभाग में उपस्थित सभी उच्च अधिकारियों को बहुत–बहुत धन्यवाद। ■

कीटनाशकों के प्रयोग में सावधानियां

रमन शर्मा
उप प्रबंधक (मैकेनिकल),
रसायनी यूनिट

कीटनाशकों के प्रयोग में सावधानी ही सुरक्षा है – किसान अपनी फसलों की सुरक्षा के लिए कीटनाशकों का प्रयोग करता है एवं यह कीटनाशक जहरीले तथा मूल्यवान होते हैं, इन कीटनाशकों के प्रयोग की जानकारी के आभाव में कृषक एवं कृषक परिवार को जान जोखिम का सामना करना पड़ता है, इसलिए कृषकों को इसके उपयोग एवं उपयोग के बाद क्या–क्या सावधानी रखना चाहिए इसकी जानकारी रखना अत्यंत आवश्यक है। कीटनाशकों के घातक प्रभाव से बचने के लिए आवश्यक होता है की उन पर लिखे हुए निर्देशों का पालन सही तरीके से करें एवं किसी प्रकार की लापरवाही न बरतें क्योंकि थोड़ी भी लापरवाही बहुत बड़े नुकसान का कारण बन सकती है।

कीटनाशकों के प्रयोग से पहले सावधानियां

सर्वप्रथम किसानों को फसलों के शत्रु कीटों की पहचान कर लेनी चाहिए, यदि पहचान संभव नहीं है तो स्थानीय स्तर पर उपस्थित कृषि विशेषज्ञ से कीट की पहचान करवा कर कीट के अनुरूप कीटनाशी का क्रय करना चाहिए।

- कीटनाशक का प्रयोग तभी करना चाहिए जब कीट द्वारा आर्थिक नुकसान की क्षति निम्न स्तर की सीमा से अधिक हो गयी हो।
- कीट को मारने का सही तरीका एवं समय का ध्यान रखना चाहिए।
- कीटनाशकों के विषाक्ता को प्रदर्शित करने के लिए कीटनाशक के डिब्बे पर तिकोने आकार का हरा, नीला, पीला एवं लाल रंग का निशान बना होता है। सबसे पहले लाल निशान वाले कीटनाशी का प्रयोग नहीं करना चाहिए क्योकि लाल निशान के कीटनाशक समस्त स्तनधारियों पर सबसे अधिक नुकसान करते है। लाल निशान वाले कीटनाशक की अपेक्षा पीले रंग के निशान वाले कीटनाशक कम तथा पीले रंग के कीटनाशक की अपेक्षा नीले रंग के निशान वाले कम नुकसान पहुंचाते है। सबसे कम नुकसान हरे रंग के निशान वाले कीटनाशक से होता है।
- कीटनाशक खरीदते समय हमेशा उसके उत्पादन की तिथि एवं उपयोग की अंतिम तिथि को अवश्य पढ़ लेना चाहिए ताकि पुरानी दवाई को खरीदने से बचा जा सके क्योंकि पुरानी दवा कम अथवा नहीं के बराबर असरदार हो सकती है, जिससे आर्थिक नुकसान से बचा जा सकता है।
- कीटनाशक के पैकिंग के साथ एक उपयोग करने के लिए निर्देशिका पुस्तिका अथवा लीफलेट को ध्यानपूर्वक पड़ना आवश्यक है, जिससे उपयोग का तरीका तथा मात्रा प्रयोग की जा सकती है।
- कीटनाशकों का भण्डारण हमेशा साफ सुथरी, हवादार एवं सूखे स्थान पर करें।
- यदि अलग–अलग समूहों के कीटनाशकों का प्रयोग करना हो तो एक के बाद दूसरे का प्रयोग करें।
- ऐसे कीटनाशकों का प्रयोग नहीं करें जिसके प्रयोग से पत्तों में रासायनिक अम्ल बनता हो।

विष का प्राथमिक उपचार

सभी प्रकार की सावधानी रखने के उपरांत भी यदि कोई व्यक्ति इन कीटनाशकों का शिकार हो जाये तो निम्नलिखित सावधानियां अपनायें।

- रोगी के शरीर से विष को अति शीघ्र निकलने का प्रयास करें।
- विषमार दवा का तुरंत प्रयोग करें।
- रोगी को तुरंत पास के किसी अस्पताल या डॉक्टर के पास ले जायें।
- यदि जहर खा लिया हो तो एक ग्लास गुनगुने पानी में दो चम्मच नमक का घोल मिला कर उलटी करें।
- यदि व्यक्ति ने विष सूंघ लिया हो तो रोगी को शीघ्र खुले स्थान पर ले जायें, शरीर के कपड़े ढीले कर दें, यदि दौरे पड़ रहे हो तो अंधेरे स्थान पर ले जायें।

- यदि सांस लेने में परेशानी हो रही हो तो रोगी को पेट के सहारे लिटाकर उसकी बाँहों को सामने की और फैला लें एवं रोगी की पीठ को हल्के–हल्के सहलाते हुए दबाएं तथा कत्रिम श्वांस का प्रबंध करें।

कीटनाशकों के प्रयोग करते समय सावधानियां–

शरीर को पूरी तरह से बचाने के लिये ऐसे कपड़े पहने जो पूरी तरह से शरीर को ढक सके जिससे यदि कीटनाशक रसायन कपड़ों पर लग जाये तो उसे बदला जा सकता है एवं हाथों में रबर के दस्ताने अवश्य पहनें तथा मुँह पर मास्क लगा लें एवं आँखों की सुरक्षा के लिए चश्मा लगा लें।

- बहुत जहरीले कीटनाशक को प्रयोग करते समय अकेले कार्य नहीं करें एक या दो व्यक्तियों को खेत के बाहर मौजूद रखें जिससे आपातकाल में जल्द मदद मिल सके।
- कीटनाशक को मिलाने के लिए लकड़ी के डंडे का प्रयोग करें तथा घोल को ढककर रखें ताकि उसे छोटे बच्चे एवं कोई पशु धोखे में पी न ले।
- कीटनाशक छिड़कने वाले को छिड़काव की पूरी जानकारी हो तथा उसके शरीर पर कोई घाव नहीं हो तथा छिडक़ाव के समय चलने वाली हवा से बचें।
- कीटनाशक का घोल बनाते समय किसी बच्चे या अन्य आदमी या जानवर को पास में नहीं रहने दें।

- दवा के साथ मिली हुई प्रयोग पुस्तिका को अच्छे से पड़ कर उसके अनुसार कार्य करें।
- कीटनाशक का छिडक़ाव करने के पश्चात त्वचा को अच्छी तरह से साफ कर लें।
- छिडक़ाव के समय साफ पानी की पर्याप्त मात्रा पास में रखें।
- कीटनाशक मिलते समय जिस दिशा से हवा का बहाव हो रहा है उसी दिशा में खड़े होकर कीटनाशक को मिलाएं।
- कीटनाशी का धुंआ सांस के द्वारा शरीर के अंदर नहीं जाने दें।
- एक बार जितनी आवश्यकता हो उतना ही कीटनाशी ले जायें।
- कीटनाशक छिडक़ने वाले यंत्र की जाँच कर लें, यदि यंत्र सही काम नहीं कर रहा हो तो उसकी मरम्मत कर लें तथा नोजल को कभी भी मुँह से खोलने का प्रयास नहीं करें।
- तरल कीटनाशकों को सावधानीपूर्वक मशीन में डालें एवं यह ध्यान रखें की किसी भी प्रकार मुंह, कान, नाक, आँख आदि में रसायन न जाए। यदि गलती से ऐसा हो तो तुरंत साफ पानी से बारदृबार प्रभावित अंग को धोयें।
- कीटनाशक का प्रयोग करते समय किसी प्रकार का धूम्रपान या कोई खान–पान नहीं करें।
- कीटनाशक का प्रयोग करते समय यह सुनिश्चित कर लें की कीटनाशक की मात्रा पूरी तरह से पानी में घुल गयी हो।
- हवा के विपरीत दिशा में खड़े होकर छिड़काव या भुरकाव करें।
- छिडक़ाव के लिए उपयुक्त समय सुबह या सायंकाल का हो यथा यह ध्यान रखें की हवा की गति 7 किमी प्रति घंटा से कम ही हो तथा तापमान 21 डिग्री सेंटीग्रेड के आसपास रहना सर्वोत्तम होता है।
- फूल आने पर फसलों पर कम से कम छिडक़ाव करें और यदि छिडक़ाव करना हो तो हमेशा सायंकाल में ही छिडक़ाव करें, जिससे मधुमक्खियां रसायन से प्रभावित न हो।
- कीटनाशकों का व्यक्ति पर प्रभाव दिखने लगे तो तुरंत डॉक्टर के पास ले जाए साथ ही कीटनाशी का डिब्बा भी लेकर जायें। ■

वर्क प्लेस पर स्मार्ट वर्किंग

प्रबंधन

सुनील गौड़
महाप्रबंधक (मा.सं. एवं प्र.) – प्रभारी
निगमित कार्यालय

कार्य स्थल पर सफल होने के लिए स्मार्ट वर्क करना अति आवश्यक है परन्तु कुछ चुनिंदा लोग ही इस लक्ष्य को प्राप्त कर पाते हैं। निम्नलिखित मॉडल आपके दैनिक कार्य जीवन को बदलने और टीमों का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन प्राप्त करने में सहायता करेगाः

विश्वास का निर्माण

अपने आस–पास के लोगों के कार्य में आने वाली चुनौतियों के बारे में समझने और उन्हें जानने में समय व्यतीत करें, उन्हें क्या प्रेरित करता है, वे किसमें व्यस्त रहते हैं, वे किसी परवाह करते हैं और उनकी प्राथमिकताएं क्या हैं।

यह जानकारी आपको दूसरों और आपके प्रबन्धक के साथ उनके लक्ष्यों को ध्यान में रखकर कार्य करने, योजना के संभावित जोखिमों को उजागर करते हुए अपनी चिंताओं को उचित प्रकार से साझा करने और समस्याओं के बेहतर समाधान की खोज में एक साथ सहयोग करने के लिए बेहतर संवाद स्थापित करने के लिए सक्षम बनाएगी।

सफलता को परिभाषित करना

हम अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों पर इतने केंद्रित होते हैं कि एक टीम के रूप में सफलता क्या है इसे पहचानने में हम विफल हो जाते हैं। एक टीम के रूप में सफलता प्राप्त करने के मायनों को समझे बिना आप अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों को तो प्राप्त कर सकते हैं, परन्तु टीम के रूप में विफल ही होंगे।

आपकी टीम के सफलता मापदंड को जानने से आप अपने लक्ष्यों के पार के अवसरों को स्पष्ट देख सकते हैं और उसके लिए योगदान कर सकते हैं और अपने व्यक्तिगत लक्ष्यों पर ध्यान केंद्रित करने के विपरीत अपनी टीम की सफलता का भाग बनना आपकी वृद्धि को सुपरचार्ज कर सकता है।

सहयोग प्राप्त करना

अपने समर्थक स्वयं बने। अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने से आपको क्या रोकता है इस पर विचार–विमर्श करके यह पहचानने के लिए पहल करें कि कैसे समर्थन की आवश्यकता है। इन बाधाओं पर विजय प्राप्त करने के लिए क्या किया जा सकता है और ये किसी प्रकार सहायता कर सकते हैं। अपनी आवश्यकताओं को पहचानने और उन आवश्यकताओं को पूरा करने हेतु बेहतर विधियों को खोजना आपको अपनी जॉब में प्रभावी एवं अधिक बेहतर कार्य करने के लिए सक्षम बना सकते हैं।

अपने कार्य को दर्शनीय बनाएं

यह संभव है कि आपके मैनेजर को आपकी मंशा पता हो, परन्तु जब तक आप अपने काम का प्रभाव नहीं दिखाते, तब तक उन्हें टीम में आपकी महत्वता का बोध नहीं होगा।

आप अन्हें सही समय पर अच्छी एवं बुरी दोनों सूचनाओं सहित आवश्यक अपडेट प्रदान कर सकते हैं।

अपने कार्य को प्रदर्शित करने और महत्वपूर्ण मुद्दों पर सहायता प्राप्त करने के माध्यम से आप और अधिक भविष्योन्मुखी कार्य करने के लिए अपने प्रबंधक का समर्थन प्राप्त कर सकते हैं।

ब्लाइंड स्पॉट्स को देखने में रिपोर्टिंग अधिकारी की सहायता करना

अधिकांश प्रबंधक इस बात से बेखबर होते हैं कि कार्यस्थल में दूसरे उन्हें कैसे देखते हैं और उनके व्यवहार और कार्यों का दूसरों पर क्या प्रभाव पड़ता है। ये ब्लाइंड स्पॉट्स उन्हें कुछ निर्णय लेने या इस प्रकार कार्य करने के लिए विवश कर सकते हैं जो टीम के विकास के लिए हानिकारक हैं।

ब्लाइंड स्पॉट्स का बोध कराने में रिपोर्टिंग अधिकारी की सहायता कर आप उन्हें इसकी पहचान करने में और उनके कार्यविधि में परिवर्तन करने के लिए सक्षम बना सकते हैं।

प्रतिपुष्टि केवल प्रबन्धक के लिए ही लाभकारी नहीं होती, अपितु यह उस टीम के लिए अत्यधिक उपयोगी हो सकती है जो इस प्रकार की प्रतिक्रिया प्रदान कर सकने वाले परिवर्तनों से लाभान्वित होती है।

कार्य प्राथमिकताएं संरेक्षित करें

क्या सप्ताह के किसी विशेष दिन पर आप घर से कार्य करने, अपने बच्चे की देखभाल या किसी अन्य कार्य प्राथमितकता के लिए शाम को निश्चित समय में घर पर उपलब्ध होने की आवश्यकता है?

अपनी कार्य प्राथमिकताओं को संरेक्षित करें और अपने प्रबन्धकों के समक्ष उनका मूल्यनिरूपण करें, उन्हें परिस्थिति से अवगत कराए बिना, आप भ्रम पैदा कर सकते हैं, उम्मीदों का गलत संरेखण कर सकते हैं और उसे अपना काम प्रभावी ढंग से करने में सहायता करने से रोक सकते हैं।

अपनी कार्य प्राथमिकताओं पर खुलकर चर्चा करें और अपने प्रबंधक की अपेक्षाओं के बारे में जानें। जब तक आप उनसे इस संबंध में चर्चा नहीं करते, तब तक आपका मैनेजर आपकी आवश्यकताओं का अनुमान नहीं लगा सकता और आपकी सहायता नहीं कर पाएगा।

अपनी विशिष्ट आवश्यकताओं के बारे में पारदर्शी रहें क्योंकि ये आपके दिमाग को इसके प्रभावों के संबंध में चिंता करने के बजाय काम पर ध्यान केंद्रित करने के लिए स्थानांतरित कर सकते हैं।

प्रभावी ढंग से संवाद

विभिन्न प्रकार के मुद्दों के लिए अपने प्रबंधक के संचार के पसंदीदा विधि को न जानना टीम के लिए अत्यधिक अप्रभावी हो सकता है। हो सकता है कि आप किसी अत्यावश्यक समस्या के लिए बिना यह जाने कि आपका प्रबन्धक दिन में केवल दो बार अपनी ईमेल की जांच करता है ईमेल भेज दें या ईमेल के माध्यम उचित रूप से सूचित की जा सकने वाली जानकारी मात्र एक टेक्स्ट अपडेट के माध्यम से भेजते हैं। संचार के पसंदीदा तरीके का उपयोग करके, आप सही समय पर सही चीज़ों पर उनका ध्यान आकर्षित कर सकते हैं।

अपने प्रबंधक की प्राथमिकताओं को जाने और संचार दिशा–निर्देशों पर संरेक्षित करने से आपको संवाद करने और वांछित ध्यान प्राप्त करने के लिए सही चैनलों का उपयोग करके अत्यधिक उत्पादक बनने में सहायता मिल सकती है।

उपरोक्त बातों पर ध्यान देकर आप विभिन्न रूप से अपने कार्यस्थल पर प्रभावी साबित हो सकता है। ■

केंद्रीय सतर्कता आयोग

सतर्कता

कनिष्क कांत श्रीवास्तव
केंद्रीय सतर्कता अधिकारी (अंशकालिक)

भारत में राष्ट्रीय स्तर पर भ्रष्टाचार विरोधी तीन प्रमुख संस्थाएं (केंद्रीय जांच ब्यूरो, लोकपाल तथा केंद्रीय सतर्कता आयोग) हैं जिसमें से केंद्रीय सतर्कता आयोग एक मुख्य शीर्षस्थ संस्था है। यह समस्त कार्यकारी प्राधिकारी की जवाबदेही से मुक्त तथा संसद के प्रति उत्तरदायी होता है। यह केंद्र सरकार के तहत आने वाली सभी सतर्कता गतिविधियों पर नज़र रखता है। केंद्रीय सरकारी संगठनों के लिए यह सलाहकार की भूमिका भी निभाता है।

हाल ही में भ्रष्टाचार पर नियंत्रण के लिए केंद्रीय सतर्कता आयोग द्वारा उठाए गए एक कदम के माध्यम से सरकारी संगठनों की सतर्कता इकाइयों में कर्मियों एवं अधिकारियों के पोस्टिंग तथा स्थानांतरण संबंधित कानूनों में बदलाव कर दिया गया। नए दिशा निर्देशों के आधार पर किसी एक स्थान पर अधिकारियों का कार्यकाल तीन वर्ष तक सीमित कर दिया गया है।

केंद्रीय सतर्कता आयोग एक सर्वोच्च सतर्कता संस्थान है, जो केंद्र सरकार की आने वाली सभी सतर्कता गतिविधियों पर नजर रखता है। यह केंद्र सरकार के सभी कार्यकारी प्राधिकरणों से अलग एवं उनके नियंत्रण से मुक्त होता है। यह केंद्र सरकार के अन्य प्राधिकरणों को उनके द्वारा बनाये गए कार्य योजना, समीक्षा, निष्पादन आदि पर सुधार संबंधित सलाह देता है।

केंद्रीय सतर्कता आयोग एक स्वतंत्र निकाय है। यह पूर्ण रूप से सिर्फ संसद के प्रति ही उत्तरदायी होती है, किसी अन्य विभाग या मंत्रालय के प्रति यह उत्तरदायी नहीं होती है।

सतर्कता का अर्थ

सतर्कता का तात्पर्य संस्थानों तथा कर्मियों द्वारा अपनी दक्षता तथा प्रभावशीलता स्थापित करने के लिए किए गए त्वरित प्रशासनिक कार्रवाई से है।

केंद्रीय सतर्कता आयोग का इतिहास

द्वितीय विश्व युद्ध के समय वर्ष 1941 में भारत सरकार द्वारा एक विशेष पुलिस स्थापन का निर्माण किया गया जिसका मुख्य कार्य युद्ध के दौरान भारत के युद्ध और आपूर्ति विभाग में व्याप्त रिश्वतखोरी तथा भ्रष्टाचार से संबंधित मामलों की जांच करना था।

सितम्बर 1945 में युद्ध की समाप्ति के बाद भी भारत सरकार को एक ऐसी संस्था की आवश्यकता महसूस हो रही थी जो कर्मचारियों के रिश्वतखोरी तथा भ्रष्टाचार के मामलों की जांच कर सके। इस उद्देश्य के मद्देनजर भारत सरकार ने दिल्ली विशेष पुलिस स्थापन अधिनियम, 1946 को लागू करके, सभी विभागों को इसके दायरे में लाकर इसके कार्य क्षेत्र को बढ़ा दिया। भ्रष्टाचार निरोधक अधिनियम, 1947 के तहत यह एजेंसी 1963 तक रिश्वत खोरी तथा भ्रष्टाचार का अन्वेषण करती रही।

1963 के बाद केंद्र सरकार को एक ऐसी केंद्रीय पुलिस एजेंसी की आवश्यकता महसूस होने लगी जो रिश्वत और भ्रष्टाचार के मामलों के साथ–साथ निम्नलिखित मामलों का भी अन्वेषण कर सके:–

- केंद्र सरकार के राजकोषीय कानूनों के उल्लंघन का।
- पासपोर्ट में धोखाधड़ी का अन्वेषण।
- समुद्र तथा हवाई जहाज में होने वाले अपराध।
- केंद्र सरकार के विभागों में होने वाली धोखाधड़ी इत्यादि

1 अप्रैल, 1963 को के. संथानम की अध्यक्षता में गठित भ्रष्टाचार निरोधक समिति के सुझाव पर केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो की स्थापना की गई। वर्ष 1964 में इसी समिति की सिफारिशों पर केंद्र सरकार द्वारा केंद्रीय सतर्कता आयोग का गठन किया गया। उस समय इसका कार्य केंद्र सरकार को सतर्कता मामलों में सलाह देना तथा उनका मार्गदर्शन करना था। वर्ष 1998 में केंद्रीय सतर्कता आयोग को एक अध्यादेश के माध्यम से सांविधिक दर्जा दिया गया तथा केंद्रीय सतर्कता आयोग अधिनियम 2003 के माध्यम से इसके सांविधिक दर्जे को वैधता प्रदान कर दिया गया। अब यह एक बहु सदस्यीय संस्था बन चुका था। इसमें एक मुख्य सतर्कता आयुक्त (अध्यक्ष) तथा दो अन्य सतर्कता आयुक्तों (सदस्य) की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा किया जाता है।

मुखबिर श्री सत्येंद्र दुबे की हत्या परसाल 2003 में दायर रिट याचिका पर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा दिए गए फैसले के आधार पर, पद के दुरूपयोग तथा भ्रष्टाचार के खिलाफ शिकायत प्राप्त करने तथा कार्रवाई करने के लिए केंद्रीय सतर्कता आयोग को एक नामित संस्था के रुप में प्राधिकृत किया गया। इसे सार्वजनिक हित प्रकटीकरण और सूचना प्रदाता संरक्षण संकल्प के तहत शिकायतकर्ता से संबंधित जानकारी को गुप्त रखने की ज़िम्मेदारी भी सौपी गई। इसके बाद सरकार ने अन्य विधानों तथा अधिनियमों के माध्यम से समय–समय पर आयोग की शक्तियों तथा कार्यों में वृद्धि की है।

प्रशासन

वर्तमान समय में केंद्रीय सतर्कता आयोग के पास अपना खुद का सचिवालय, विभागीय जाँच आयुक्त खंड, तथा एकमुख्य तकनीकी परीक्षक खंड है। जांच पड़ताल के लिए केंद्रीय सतर्कता आयोग दो बाहरी स्रोतों केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो तथा मुख्य सतर्कता अधिकारियों पर निर्भर रहता है।

केंद्रीय सतर्कता आयोग के कार्य

केंद्रीय सतर्कता आयोग को एक ऐसी संस्था के रूप में नामित किया गया है जो रिश्वतखोरी, कार्यालयों के दुरुपयोग तथा भ्रष्टाचार संबंधित शिकायतों को सुनता है तथा उनपर त्वरित रूप से उचित कार्रवाई की सिफारिश भी करता है। केंद्रीय सतर्कता आयोग के पास केंद्र सरकार, लोकपाल तथा मुखबिर/सूचना प्रदाता/सचेतक अपनी शिकायत दर्ज करा सकते हैं। केंद्रीय सतर्कता आयोग खुद से मामलों का अन्वेषण नहीं करता है। यह केंद्रीय अन्वेषण ब्यूरो तथा मुख्य सतर्कता अधिकारियों द्वारा जाँच/अन्वेषण का कार्य कराता है।

यह आयोग वार्षिक रिपोर्ट के माध्यम से अपने किए गए कार्यों तथा उन प्रणालीगत विफलताओं का विवरण देती है जिनके फलस्वरूप विभागों में भ्रष्टाचार पनप रहा है।

केंद्रीय सतर्कता आयोग की संरचना

यह आयोग एक बहु–सदस्यीय आयोग है इसमे एक मुख्य सतर्कता आयुक्त (अध्यक्ष) तथा दो अन्य सतर्कता आयुक्त (सदस्य) होते हैं। इसके अध्यक्ष पद पर प्रधानमंत्री तथा सदस्य पद पर गृह मंत्री एवं विपक्ष के नेता की नियुक्ति राष्ट्रपति द्वारा की जाती है। समस्त आयुक्तों का कार्यकाल 4 वर्ष या 65 वर्ष की आयु पूरी करने तक होता है।

पदच्युत

केंद्रीय सतर्कता आयुक्त तथा अन्य सतर्कता आयुक्तों को राष्ट्रपति विषम परिस्थितियों में उनके पद से हटा सकता है तथा वे खुद भी राष्ट्रपति को अपना इस्तीफा देकर अपने कार्यभार से मुक्त हो सकते हैं।

केंद्रीय सतर्कता आयोग प्रतिज्ञा प्रमाण पत्र

केंद्रीय सतर्कता आयोग प्रतिज्ञा प्रमाण पत्र या सेंट्रल विजिलेंस कमीशन सर्टिफिकेट उन भारतीयों को प्रदान किया जाता है, जिन्होंने भ्रष्टाचार के विरुद्ध जंग लड़ने के लिए ऑनलाइन शपथ ले रखी होती है।

निष्कर्ष

केंद्रीय सतर्कता आयोग की छवि एक सलाहकार निकाय के रूप में प्रचलित है। इसके पास दोषियों के विरुद्ध कार्रवाई या आपराधिक मामला दर्ज करने का अधिकार नहीं है और न ही इसके पास संयुक्त सचिव तथा उससे उच्च स्तर के अधिकारियों के खिलाफ अन्वेषण का आदेश देने का अधिकार है। यही कारण है कि इसे एक शक्तिहीन संस्था माना जाता है। बावजूद इसके यह किसी भी प्रकार के भ्रष्टाचार आदि की शिकायत पर त्वरित कार्रवाई का आदेश जांच एजेंसी को देता है तथा आयोग द्वारा जारी रिपोर्ट में प्रणालीगत कमियों तथा अपने कार्यों का विवरण भी देता है। ■

अंतरराष्ट्रीय मानकीकरण संगठन (आई.एस.ओ.)

बिजय कुमार महाराणा
यूनिट प्रमुख, बठिंडा यूनिट

आईएसओ 9001 क्या है?

आईएसओ 9001 प्रमाणन एक गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली को लागू करने और बनाए रखने पर केंद्रित है और उन आवश्यकताओं को निर्दिष्ट करता है जिन्हें प्रमाणित होने के लिए संगठनों, कंपनियों और व्यवसायों को पूरा करना होगा। यह ग्राहकों को सुनिश्चित करता है कि आपके उत्पाद और सेवाएं लगातार उनकी आवश्यकताओं को पूरा करते हैं और आप लगातार सुधार कर रहे हैं। यह आकार या उद्योग की परवाह किए बिना किसी भी संगठन को दिया जा सकता है। कई प्रमुख कंपनियों को अपने आपूर्तिकर्ताओं के लिए आईएसओ 9001 प्रमाणपत्र की आवश्यकता होती है।

इसकी शुरुआत कहाँ से हुई?

आईएसओ की स्थापना 23 फरवरी 1947 में हुई थी और इसका मुख्यालय जेनेवा स्विजरलैंड में है। लंडन में 14 अक्टूबर 1946 में आईएसओ की पहली बैठक हुई थी।

यह विचार कि एक गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली किसी उत्पाद या सेवा की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकती है, पहली बार 1970 के दशक में पेश की गई थी। यह मानकीकरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगठन के माध्यम से नहीं था, बल्कि फोर्ड और रक्षा मंत्रालय जैसे कई बड़े संगठनों ने अपने गुणवत्ता प्रबंधन मानकों को जारी किया था। इस विचार की त्वरित स्वीकृति पर रक्षा मंत्रालय का सबसे अधिक प्रभाव पड़ा, क्योंकि यह विभिन्न आपूर्तिकर्ताओं की एक बड़ी संख्या से निपटता था; उनके साथ व्यापार करने के लिए, आपके व्यवसाय को उनके गुणवत्ता प्रबंधन मानकों की आवश्यकताओं को पूरा करना था।

बीएसआई ने 1971 में पहला यूके मानक, बी.एस 9000 प्रकाशित किया, जिसे विशेष रूप से इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग के लिए डिज़ाइन किया गया था। उन्होंने बीएस 5179 और 5750 भी जारी किए, जो रक्षा मंत्रालय के मानकों के बेहद करीब थे। ये पहली बार गुणवत्ता आश्वासन की जिम्मेदारी ग्राहक से आपूर्तिकर्ता तक ले गए – तीसरे पक्ष के निरीक्षकों के उपयोग को लागू करना।

यह 1980 के दशक तक नहीं था कि अंतर्राष्ट्रीय मानकीकरण संगठन ने यूके के मानकों को अपने अंतरराष्ट्रीय दिशानिर्देशों और प्रमाणन के लिए योग्यता में लागू किया। उन्होंने 1987 में पहला आईएसओ 9000 प्रकाशित किया।

आईएसओ के फायदे

आईएसओ यह एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त गुणवत्ता मानक प्रमाण पत्र है, आईएसओ प्रमाणपत्र से हमे क्या बेनिफिट मिलते है यह निम्नानुसार हैं:

1. आईएसओ यह व्यवसाय या उद्योग में आने वाले अवरोधों को कम करने में मदद करती है।
2. आईएसओ से एक बहुत अच्छा फायदा यह होता है की, इसमे बहुत साफ़–सुथरा व्यवहार होता है और इससे नये ग्राहक आकर्षित होते है और उनका विश्वास बढ़ने में मदद होती है।
3. व्यापार के बीच प्रतिस्पर्धा के साथ अपना स्थान बाजार में बनाए रखने के लिए और उत्पादन और सेवाओं की उच्च गुणवत्ता प्रदान करने के लिए आईएसओ महत्वपूर्ण है।
4. आईएसओ यह उद्योग या व्यवसाय में शुद्धता और बढ़ोत्तरी मिलने में बहुत महत्वपूर्ण है।
5. आईएसओ से बाजार में सेवा और उत्पादों के प्रति विश्वसनीयता बढ़ने में मदद होती है।
6. आईएसओ सर्टिफ़िकेट से कम लागत में उत्पादकता बढ़ने के साथ पैसे और समय दोनों को बचाने में मदद मिल जाती है।
7. मानक परिभाषित मानकों की लगातार गुणवत्ता सुनिश्चित करता है, जिससे आपके उत्पादों और सेवाओं से जुड़े ग्राहकों की अपेक्षाएँ कम हो जाती है और ग्राहक समाधानी होता है।
8. आईएसओ यह प्रमाणित करता है की, ये संस्था या प्रबंधन प्रणाली निर्माण प्रक्रिया, सेवा दस्तावेज़ प्रक्रिया में सभी शामिल हैं।

9. तो किसी कंपनी के लिए या फिर कोई व्यापार करने लिए आईएसओ प्रमाणपत्र होना बहुत जरूरी है क्योंकि इससे यह पता चलता है की आपके उत्पादों की गुणवत्ता और शुद्धता कैसी है।

"आईएसओ" प्रमाणन के प्रकारः

- आईएसओ 9001:2008 – गुणवत्ता प्रबंधन
- आईएसओ 10012 – माप प्रबंधन प्रणाली
- आईएसओ 14001:2015 – पर्यावरण प्रबंधन
- आईएसओ 2700:2013 – सूचना सुरक्षा प्रबंधन
- आईएसओ 22008:2005 – खाद्य सुरक्षा प्रबंधन
- आईएसओ 29990 – अनौपचारिक शिक्षा और प्रशिक्षण के लिए शिक्षण सेवाएं
- आईएसओ 20000:1 – आईटी सेवा प्रबंधन प्रणाली
- आईएसओ 50001 – ऊर्जा प्रबंधन

आईएसओ का आधारः

आईएसओ 9001 प्लान–डू–चेक–एक्ट कार्यप्रणाली पर आधारित है और एक संगठन में प्रभावी गुणवत्ता प्रबंधन प्राप्त करने के लिए आवश्यक संरचना, जिम्मेदारियों और प्रक्रियाओं के दस्तावेजीकरण और समीक्षा के लिए एक प्रक्रिया–उन्मुख दृष्टिकोण प्रदान करता है।

1. **योजनाः** उद्देश्य और प्रक्रियाएं स्थापित करें।
2. **करनाः** प्रक्रियाओं को लागू करें।
3. **जांचः** उद्देश्यों के खिलाफ क्रियाओं की निगरानी और माप करें।
4. **कार्यवाही करनाः** लगातार सुधार के लिए कार्रवाई करें।

9001 मानक आईएसओ अनुपालन आईएसओ 9001:2000 मानक के लिए एक सप्लायर गुणवत्ता प्रणाली दर्ज करके प्रदर्शन किया है, प्रक्रिया है आपूर्तिकर्ता प्रलेखन की समीक्षा शामिल है और साइट पर आडिट एक प्रमाणीकरण शरीर द्वारा प्रदर्शन किया पर सुधारात्मक के लिए किसी भी कमियों को सही लागू क्रियाओं का अनुमोदन मिला, एक प्रमाण पत्र दिया पंजीकरण देने है, निगरानी है आपूर्तिकर्ता गुणवत्ता प्रणाली के रखरखाव के आश्वासन का दौरा किया..

- हाँ, एसटीक्यूसी प्रमाणन सेवा अंतरराष्ट्रीय स्तर पर मान्यता प्राप्त है। उत्पाद स्कोप के बहुमत के लिए प्रमाणीकरण योजनाओं, इसके अलावा, एसटीक्यूसी प्रमाणन सेवा भी सबंधी योजना के लिए है, एनएबीसीबी, भारत द्वारा मान्यता प्राप्त हैं।
- आईएसओ मानकीकरण के लिए अंतर्राष्ट्रीय संगठन है जो वर्तमान में 91 देशों की राष्ट्रीय मानक निकायों शामिल हैं के लिए खड़ा है, इसका कार्य करने के लिए एक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर वस्तुओं और सेवाओं के आदान प्रदान को बेहतर बनाने के प्रयास में वैश्विक मानकों का विकास है। आईएसओ 9001 मानक गुणवत्ता प्रबंधन मानक है।

मूल रूप से आईएसओ 1987 में प्रकाशित हुआ था। आईएसओ 9001 में 1994, 2000 और फिर 2008 में संशोधन हुए। नवीनतम संशोधन सितंबर 2015 में प्रकाशित हुआ था।

आईएसओ 9001 का इतिहासः

- संशोधन
- 20 खंड और 20 आवश्यक प्रक्रियाएं
- 3 श्रव्य मानकः 9001, 9002 और 9003

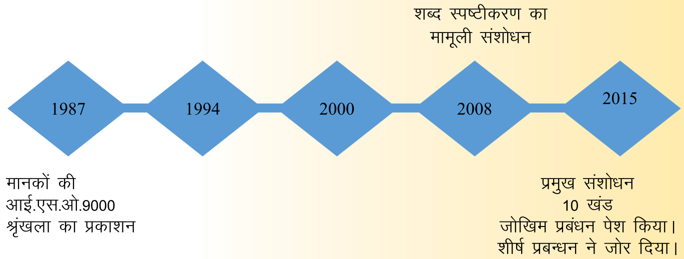

आईएसओ 9001 का मौजूदा संशोधन – प्रमुख अपडेटः

2015 आईएसओ 9001 संशोधन में पेश किए गए परिवर्तनों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि आईएसओ 9001 बदलते परिवेशों के अनुकूल बना रहे जिसमें संगठन संचालित होते हैं।

आईएसओ 9001:2015 में कुछ प्रमुख अपडेट में शामिल हैंः

– नई शब्दावली का परिचय

– कुछ सूचनाओं का पुनर्गठन

– प्रक्रिया दृष्टिकोण के अनुप्रयोग को बढ़ाने के लिए जोखिम आधारित सोच पर जोर

– सेवाओं के लिए बेहतर प्रयोज्यता

– नेतृत्व की आवश्यकताओं में वृद्धि ■

भाषा की परिभाषा, प्रकार और महत्व

भाषा प्रभाग

डॉ0 विशेष कुमार श्रीवास्तव
राजभाषा अधिकारी, रसायनी यूनिट

मनुष्य एक सामजिक प्राणी है। समाज के विकास में भाषा का विकास असंभव है। व्यक्ति का सामाजिक जीवन का आधार भाषा है। भाषा के अभाव में सामाजिक जीवन की कल्पना भी नही की जा सकती है। इन्ही कारणों से भाषा का उदगम हुआ है।

मनुष्य अन्य प्राणियों से अधिक संवेदनशील और बुद्धिमान प्राणी है। अपने आपको अभिव्यक्त करना उसकी प्रवृत्ति है। सामाजिक प्राणी होने के कारण वह निरंतर समाज के अन्य सदस्यों के साथ विचारों और भावो का आदान प्रदान करता है। प्रारम्भ में वह संकेतों या अस्पष्ट ध्वनियों का प्रयोग करता था। ध्वनि समूह के संयोजन से वस्तु विशेष के प्रतीक बन गए जिनसे धीरे धीरे भाषा का विकास हुआ। "भाषा" विचारों के आदान प्रदान का सबसे सुगम साधन हैं।

भाषा की परिभाषा

''भाषा ध्वनि–प्रतिकों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा मनुष्य बोलकर या लिखकर स्पष्टता के साथ अपने विचारों को दूसरे व्यक्ति तक पहुंचा सकता है और दूसरों की बात समझ सकता हैं"

"भाषा परिवर्तनशील होती है। समय के साथ–साथ आवश्यकतानुसार भाषा का स्वरुप बदलता रहता है और भाषा नया रूप धारण कर लेती है।"

''भाषा मनुष्य के विचारों के आदान प्रदान का माध्यम है। ''

"भाषा मनुष्यो द्वारा उच्चारित होने वाले ध्वनि संकेतों की वह व्यवस्था है जिसके द्वारा किसी विशेष समुदाय के लोग विचारात्मक स्तर पर परस्पर सम्प्रेषण कर सकते हैं।"

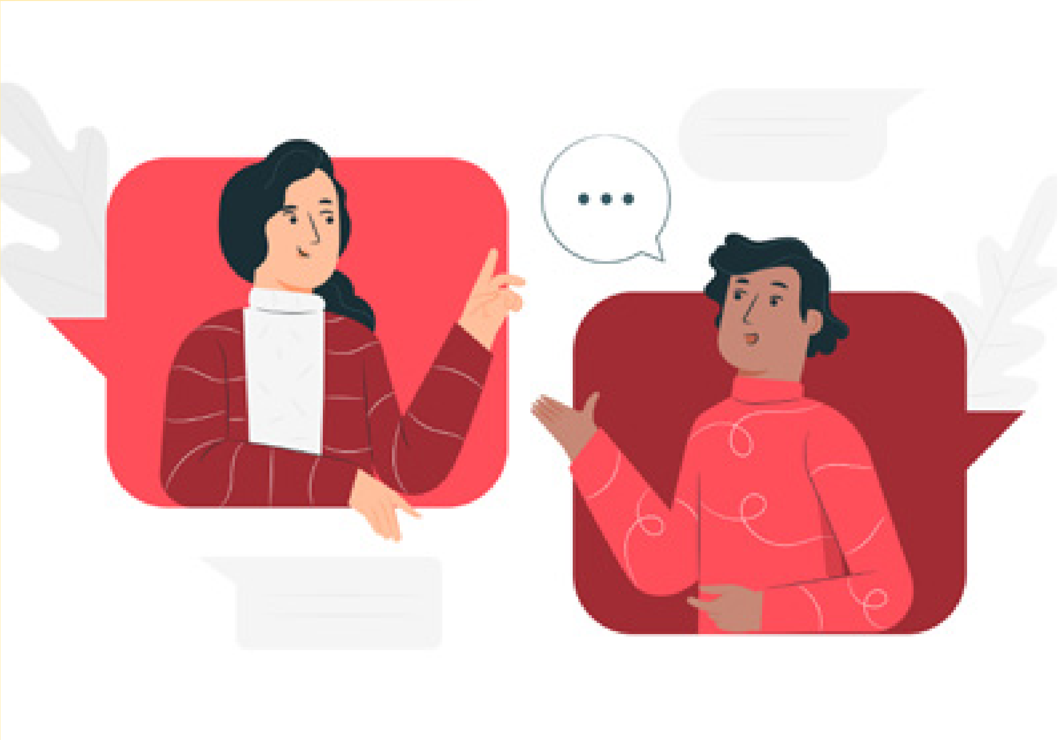

भाषा के तीन प्रकार हैं लिखित, मौखिक और सांकेतिक। जब श्रोता सामने होता है तो बोलकर हम अपनी बात कहते हैं और जब वो सामने नहीं होता तो लिखकर हम अपनी बात उस तक पहुँचाते है। भाषा का जो मूल रूप है वह मौखिक होता है इसे सिखने के लिए किसी प्रयत्न की आवश्यकता नही होती यह स्वतः ही सीखी जाती है जबकि लिखित भाषा को प्रयत्नपूर्वक सीखना पड़ता है।

मौखिक भाषा

यह भाषा का मूल रूप है और सबसे प्राचीनतम है। मौखिक

भाषा का जन्म मानव के जन्म के साथ ही हुआ है। मानव जन्म के साथ साथ ही बोलना शुरू कर देता है। जब श्रोता सामने होता है तब मौखिक भाषा का प्रयोग किया जाता है। जो मौखिक भाषा की आधारभूत इकाई होती है वो होती है "ध्वनि"। इन्ही ध्वनियो से शब्द बनते है जिनका वाक्यों में प्रयोग किया जाता है।

लिखित भाषा

जब श्रोता सामने न हो तो उस तक बात पहुँचाने के लिए मनुष्य को लिखित भाषा की आवश्यकता पड़ती है। लिखित भाषा को सिखने के लिए प्रयत्न और अभ्यास की जरूरत होती है। यह भाषा का स्थायी रूप है, जिससे हम अपने भावो और विचारों को आने वाली पीढियों के लिए सुरक्षित रख सकते है। इसके द्वारा हम ज्ञान का संचय करते है।

प्रत्येक व्यक्ति जन्म से ही अपनी मातृभाषा सीख लेता है। अशिक्षित लोग भी अनेक भाषाएँ बोल और समझ सकते है। भाषा का मूल और प्राचीन रूप मौखिक ही है। लिखित रूप बाद में विकसित हुआ है। इसलिए हम कह सकते है– भाषा का मौखिक रूप प्रधान रूप है और लिखित रूप गौण है।

सांकेतिक भाषा

जिन संकेतो के माध्यम से छोटे बच्चे या गूंगे लोग अपनी बात दुसरे को समझाते है तो इन संकेतो को सांकेतिक भाषा कहा जाता है। इसका अध्ययन व्याकरण में नहीं किया जाता है।

उदाहरण– यातायात नियंत्रित करने वाली पुलिस, गूंगे बच्चों की वार्तालाप, छोटे बच्चों के इशारे।

भाषा की लिपि

संसार में विभिन्न भाषाओ को लिखने के लिए अनेक लिपियाँ प्रचलित है। जैसे हिंदी, मराठी, नेपाली, संस्कृत ये सब "देवनागरी" लिपि में लिखी जाती है। उर्दू "फारसी" लिपि में लिखी जाती है तथा अंग्रेजी "रोमन" लिपि में लिखी जाती है। तो ऐसी कई लिपि है जिनकी माध्यम से भाषाओ को लिखा जाता है।

लिखित भाषा का अपना महत्व होता है। लिखित भाषा ही ज्ञान के भण्डार को एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक पहुँचाती है। इसी के द्वारा हम अपने पूर्वजो, प्राचीन वैज्ञानिको तथा विद्वानों के ज्ञान को ग्रहण करते है। लिखित भाषा के प्रचार व प्रसार की शक्ति बहुत अधिक होती है। यह किसी भी भाषा को नियमित तथा मानक रूप प्रदान करती है इसलिए समाज पढ़े–लिखे व्यक्ति का सम्मान करता है।

मौखिक भाषा को लिखित स्थायी रूप देने के लिए भाषा के लिखित रूप का विकास हुआ। प्रत्येक ध्वनि का अपना चिह्न या वर्ण होता है। वर्णों की इसी व्यवस्था को लिपि कहते है। लिपि ध्वनियो को लिखकर प्रस्तुत करने का एक प्रकार है।

"भाषा की ध्वनियो को जिन लेखन चिन्हों के द्वारा प्रकट किया जाता है, उन्हें लिपि कहा जाता है।"

अथवा

"मौखिक ध्वनियों को लिखित रूप में लिखित रूप में प्रकट करने के लिए निश्चित किये गए चिन्हों को लिपि कहते है।"

अपने ज्ञान, भाव और विचारों को स्थिर, स्थायी और विस्तृत बनाने हेतु लिपि की आवश्यकता होती है। संसार की विभिन्न भाषाएँ अलग–अलग लिपियों में लिखी जाती है। लिपि कई तरह की होती है जैसे– देवनागरी, रोमन, गुरुमुखी, फारसी, रुसी आदि।

कुछ भाषाएँ और उनकी लिपियाँ इस प्रकार हैः–

क्रं.स.	भाषा	लिपि
1.	हिन्दी	देवनागरी
2.	संस्कृत	देवनागरी
3.	मराठी, नेपाली	देवनागरी
4.	अंग्रेजी, फ्रेंच, जर्मन	रोमन
5.	पंजाबी	गुरूमुखी
6.	उर्दू, अरबी, फारसी	फारसी
7.	रूसी	रूसी

इसको समझने के लिए बोली और उप भाषा को समझना भी ज़रूरी है–

बोली– किसी छोटे जगह में स्थानीय व्यवहार में प्रयुक्त होने वाली भाषा का अल्पविकसित रूप बोली कहलाता है, जिसका कोई लिखित रूप या साहित्य नहीं होता. अर्थात क्षेत्र–विशेष में साधारण सामाजिक व्यवहार में आने वाला बोल–चाल का भाषा–रूप ही बोली है।

उपभाषा– उपभाषा का क्षेत्र विस्तृत होता है. यह प्रदेश में बोल चाल में प्रयोग की जाती है. इसमें साहित्य लेखन भी किया जाता है। एक उपभाषा क्षेत्र के अंतर्गत एक से अधिक बोलियाँ हो सकती है।

भाषा– भाषा एक विस्तृत क्षेत्र में बोली और लिखी जाती है. इसी में साहित्य की रचना होती है। ■

स्वतंत्रता संग्राम में हिन्दी की भूमिका

डॉ० पुष्पा रानी
प्रोफेसर, पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
कुरूक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरूक्षेत्र

भारतीयों ने राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलन और स्वाधीनता का नारा हिन्दी में ही गंजायमान किया। झांसी की रानी, तात्यां टोपे, मंगल पांडे, भगत सिंह, राजगुरू सुखदेव, महात्मा गाँधी, रानाडे, मालवीय, सुभाषा चन्द्र बोस, जवाहर लाल नेहरू, लाल बहादुर शास्त्री, सभी के स्वतंत्रता आंदोलन की भाषा हिन्दी ही रही है। कश्मीर से कन्याकुमारी तक जनमानस की भाषा हिन्दी विकसित हुई है। इसी प्रकार मॉरीशस, बाली, इंडोनेशिया आदि देशों से संपर्क भाषा बनकर हिन्दी ने व्यापक रूप स्थापित किया। देश में फैली हुई अनेक भाषाओं और संस्कृतियों के बीच यदि भारतीय जीवन की उदात्तता एवं एकात्मकता किसी एक भाषा में दिखाई देती है तो वह हिन्दी में ही है। चाहे सब लोग हिन्दी न जानते हों, फिर भी इसके द्वारा अपना काम चला लेते है और उन्हें इसमें कोई कठिनाई भी नहीं होती है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी ने देशवासियों से कहा था, जैसे अंग्रेज अपनी मातृभाषा अंग्रेजी में बोलते हैं उसे व्यावहार में लाते हैं वैसे ही आप हिन्दी को भारत माता की एक भाषा बनाने का गौरव प्रदान करें। हिन्दी सभी जानते हैं, समझते हैं। इसे राष्ट्रभाषा मानकर हमें अपने कर्त्तव्य का पालन करना चाहिए। हिन्दी मात्र एक भाषा या सम्प्रेषण का साधन न होकर राष्ट्रीयता की पहचान है। यही कारण है कि हमारे यहाँ देश के अलग–अलग प्रांतों में मनीषियों ने स्वतंत्रता आंदोलन में इसे प्रचार–प्रसार का साधन बनाया।

स्वतंत्रता प्राप्ति के पूर्व हिन्दी के ही माध्यम से भारत के अनेक सन्तों, सुधारकों, मनीषियों और नेताओं ने अपने विचारों का प्रचार एवं प्रसार किया था। अपनी दूरदर्शिता के कारण देश के सभी भूभागों के अधिकांश जनसमुदाय को एकता के सूत्र में पिरो सकती थी, और वह भाषा हिन्दी थी। यही कारण था कि जहाँ उत्तर प्रदेश के कबीर, पंजाब के नानक, सिंध के सचल, काश्मीर की लल्द्या, बंगाल के बाउल, असम के शंकरदेव आदि संतों ने जिस सांस्कृतिक एकता को आधार बनाकर अपने काव्य की रचना की थी, वहाँ दक्षिण के वेमना आलवार आदि संतों की कविता की मूलभूमि वही थी। इनके संदेश से कहीं भी भाषागत विघटन का स्वर नहीं उभरा बल्कि सभी की रचनाएं उत्तर से दक्षिण तक और पूरब से पश्चिम तक समान रूप से समादृत थी। जिन साधु संतों के मठ और अखाड़े सारे देश में फैले हुए थे उनमें कहीं भी भाषा का झगड़ा नहीं था और यह प्रेम का मार्ग हिन्दी के माध्यम से प्रशस्त हुआ।

बंगाल के अद्वितीय सुधारक राजा राममोहनराय हिन्दी के माध्यम से केशवचन्द्र सेना जैसे मनीषी अपने विचारों के प्रचार के लिए इसे अपनाया। आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती और महात्मा गाँधी ने गुजराती होते हुए भी, राष्ट्रीयता और समाज सुधार की अपनी भावधारा को हिन्दी के द्वारा सारे देश में फैलाया। स्वराज्य हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है का नारा देने वाले बालगंगाधर तिलक ने मराठी होते हुए भी सन् 1920 में बनारस में हिन्दी में भाषण दिया। उनके ये विचार हिन्दी की व्यापकता एवं स्वतंत्रता संग्राम के लिए सुपुष्ट प्रमाण प्रस्तुत करता है। 'आनन्दमठ' के बंकिमचन्द्र चटर्जी ने अपने 'बंगदर्शन' नामक ग्रन्थ के पाँचवें खण्ड में लिख दिया कि हिन्दी भाषा की सहायता से भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों में बिखरे हुए लोग जो ऐक्य बन्धन स्थापित कर सकेंगे। वास्तव में वे ही सच्चे स्वतंत्रता सेनानी कहलाने के लायक हैं। भारत की स्वतंत्रता संग्राम की वाहिका और वर्तमान में देश प्रेम का अमूर्त वाहन हिन्दी ही है। हिन्दी राष्ट्रभाषा के रूप में व्यवहत होती है, भले ही संविधान ने इसे राष्ट्रभाषा का दर्जा न दिया हो।

स्वतंत्रता में देशभक्ति तथा राष्ट्रीय चेतना का सर्वोपरि स्थान था। इन दोनों भावों ने भारतवासियों को व्यापक राष्ट्र के लिए समर्पण एवं बलिदान के लिए तैयार किया और प्रान्तीय की सीमा से निकलकर बृहत भारत के स्वप्न को साकार करने में लग गए और देशकर्मी एक भारत को स्वतंत्र करने के लिए एक जुट हो गए। उस समय हिन्दी भी किसी न किसी रूप में सभी ओर पहुँच गई थी और स्वतंत्रता सेनानियों को व्यापक स्तर पर स्वतंत्रता की भाषा के रूप में स्वीकार्य भी थी। दक्षिण, महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, बंगाल आदि के बलिदानी हिन्दी के माध्यम से स्वतंत्रता की अलख जगाकर सफलता प्राप्त कर रहे थे और अंग्रेजों को मुँह की खानी पड़ रही थी। वे हिन्दी के सामर्थ्य से आश्चर्यचकित थे। तिलक, राजगोपालाचार्य, बोस, गाँधी, लाजपतराय, भगत सिंह सभी स्वतंत्रता सेनानियों ने देशभक्ति और राष्ट्रीय चेतना के दीपक प्रज्वलित किए। उनमें से कोई हिन्दी भाषी क्षेत्र के नहीं थे लेकिन राष्ट्रीय स्तर पर संवाद के लिए हिन्दी को व्यवहत करते थे।

आज व्यवसायिकता पर अधिक ध्यान दिया जाता है, देश भक्ति से संबंधित अध्याय नगण्य हो गया हैं। स्वतंत्रता के बाद देश में वंश जाति धर्म क्षेत्र प्रान्त इत्यादि के आधार पर जो कुछ भी होता चला आ रहा है उसने देशवासियों के मन में देशभक्ति और राष्ट्रीयता के भाव को तिरोहित कर दिया है।

हिन्दी की व्यापकता, स्वीकार्यता का जादू या कि हिन्दी को राष्ट्रभाषा बनाने का संकल्प जिन महान राष्ट्रनायकों ने लिया उनमें एक दो को छोड़कर सभी की स्वयं की मातृभाषा हिन्दी नहीं थी। सभी को यह भी पता था कि पूरे भारत में आसानी से समझी जाने वाली कोई भाषा थी तो वह हिन्दी ही है। हमें यह भी स्मरण रखना चाहिए कि महात्मा गाँधी के स्वाधीनता संग्राम के दिनों में अन्य कार्यक्रमों के साथ गैर हिन्दी भाषी प्रान्तों में हिन्दी सीखना भी एक कार्यक्रम हुआ करता था।

भारत की सभी भाषाओं के लेखकों ने परतन्त्रता की हताशा में लिखना नहीं छोड़ा, उन्होंने इस बात की परवाह नहीं कि उन्हें शासन का कोपभाजन बनना पड़ेगा इस बात को भी उन्होंने अधिक महत्व नहीं दिया कि कितने लोग उनको पढ़ते हैं। वे लिखते गए बल्कि स्वतंत्रता की प्यास ने उनकी लेखनी को और अधिक धारदार बना दिया था। अखबार पर छापे पड़े, संपादक को जुर्माने और जेल की सजा सुनाई। फिर भी कलम के सिपाहियों ने स्वतंत्रता के लिए जागते हुए अपनी लेखनी से देशवासियों में स्वतंत्रता के जन्मसिद्ध अधिकार को पाने का साहस एवं विश्वास पैदा किया।

अकबर इलाहाबादी के शब्दों में "खीचों न कमानों को न तलवार निकालो, जब तोप मुकाबिल हो तो, अखबार निकालो" को सार्थक करते हुए हिन्दी पत्र–पत्रिकाओं की भूमिका अविस्मरणीय रही। न्यू इंडिया हिन्दी, लीडर, अमृत बाजार, पत्रिका, इंडियेडेंट इंडिया, मनोरमा, विशाल भारत, रिव्यू, प्राताप, कर्मवीर प्रभा ट्रिव्यून, सैनिक, बम्बई समाचार, आज भविष्य, वर्तमान, चाँद माधुरी सैनिक, समय हंस, सुधा आदि अनेक पत्र–पत्रिकाओं ने स्वतंत्रता संग्राम में योग्यदान दिया।

वर्ष 1857 में मुम्बई में आर्य समाज की स्थापना हुई। अखिल भारतीय स्तर पर आर्य समाज ने स्वभाषा, स्वधर्म, स्वदेश और स्वराज्य का आन्दोलन छोड़ा। आर्यसमाज का स्वभाषा आंदोलन राष्ट्रभाषा हिन्दी के लिए महत्त्वपूर्ण सिद्ध हुआ। प्रत्येक आर्यसमाजी के लिए हिन्दी आर्यभाषा का अध्ययन अनिवार्य था। आर्यसमाज ने हिन्दी को शिक्षा का माध्यम बनाकर पंजाब उत्तर प्रदेश, राजस्थान, बिहार आदि प्रान्तों में शिक्षण संस्थाएँ स्थापित की। आर्य दर्पण के अलावा कई दैनिक पत्रों का प्रकाशन भी आर्य समाज की प्रेरणा से हुआ। आर्य समाज ने भारत के बाहर कीनिया, तंजानिया, फीजी, मॉरिशस, त्रिनिटाड, सूरीनाम, लंदन आदि में भी हिन्दी के प्रचार का कार्य किया। स्वाधीनता आंदोलन में हिन्दी के प्रति विभिन्न प्रान्तों के अन्तर्गत नेताओं ने हिन्दी का राष्ट्रीय एकता की दृष्टि से देखा। 'वन्देमातरम्' राष्ट्रीय गीत के रचयिता बंकिमचन्द्र चटर्जी ने 'बंगदर्शन' में लिखा था कि हिन्दी भाषा की सहायता से भारतवर्ष के विभिन्न प्रदेशों के मध्य में जो एकता बंधन संस्थापन करने में समर्थ होंगे वही सच्चे भारत बन्धु पुकारे जाने योग्य हैं।

सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम की असफलता की पड़ताल करते हुए भारतीय स्वतंत्रता प्रेमियों को जो सबसे बड़ी कमी दिखाई दी वह थी संपर्क भाषा की कमी, डॉ0 देवकीनन्दन खत्री, डॉ0 भाभा ने मुम्बई में 30 सितम्बर, 2013 को आयोजित कार्यशाला के पेपर, श्रीगोपाल प्रसाद व्यास की पुस्तक 'बिना हिन्दी सब सून' का जिक्र इस प्रकार किया। भारतेन्दु का जन्म वर्ष 1850 में हुआ। जब भारतेन्दु 8–9 वर्ष के थे तब उन्होंने अपने पिता से पूछा, कि 1857 की जनक्रांति विफल क्यों हुई। इस प्रकार पिता ने कहा यह मेरठ से शुरू हुई। इसके बाद लाखों–लाख मंगल पाण्डे का साथ देने के लिए रणक्षेत्र में उतर पड़े। उनके ह्रदयों में अंग्रेजो के खिलाफ आग तो थी ही, परन्तु देश के अलग–अलग क्षेत्रों की भाषाएँ अलग–अलग थी, अतः इन क्रांतिकारियों की बीच संवाद स्थापित कर पाना मुश्किल हो रहा था, कोई समुचित संपर्क भाषा न थी। भारतेन्दु के पिता बोले तुम्हें मालूम ही है कि चार कोस पर बदले पानी, आठ कोस पर बदले वाणी। यह सुनकर भारतेन्दु बोले, मैं इस संपर्क–संवाद का निर्माण करूँगा ताकि अंग्रेजी के समक्ष हमारा स्वतन्त्रता आन्दोलन कमजोर न पड़े। इस कार्य को भारतेन्दु ने 23–24 वर्ष की आयु में खड़ी बोली का विकास करके किया। वहीं खड़ी बोली कुछ सुधारों के साथ आज हमारी प्रिय भाषा है। निज भाषा को लेकर उनकी ये पंक्तियाँ आज भी समीचीन लगती हैं निज भाषा उन्नति अहैं, सब उन्नति को मूल, बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिंय को सूल।

तत्कालीन राष्ट्रनायको समाज सुधारकों, भारतीय पुनर्जागरण के अग्रदूतो शिक्षाशास्त्रियों, कवियों और साहित्यकारों ने हिन्दी को स्वतन्त्रता संग्राम के लिए उपयुक्त पाया वर्ष 1878 में बंकिमचन्द्र चट्टोपाध्याय ने बंगदशनि में लिखा था अगर हम भारत की एकता, अखण्डता चाहते है तो हिन्दी को अपनाना होगा। वर्ष 1898 में स्वामी विवेकानन्द ने रामकृष्ण मिशन की स्थापना की। इसके माध्यम से उन्होंने हिन्दी भाषा में ही अपना प्रचार–प्रसार देश में किया। भारतेन्दु के नेतृध्तव में साहित्यकारों के एक वर्ग ने हिन्दी के प्रचार–प्रसार के कार्य को अपना उद्देश्य बना लिया वर्ष 1885 में भारतेन्दु जी का देहान्त हो गया। भारतेन्दु की निज भाषा ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरूद्ध संग्राम लड़ने वालों के मन में राष्ट्रभाषा के रूप में हिन्दी को माध्यम बनाया। हिन्दी खड़ी बोली के माध्यम से महापुरूषों ने जन–जन तक आजादी का संदेश पहुँचाकर राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ करने में अपनी महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।

स्वतंत्रता संग्राम के दौरान विदेशी सरकार ने राजनीतिक सामाजिक धार्मिक ऐतिहासिक और आर्थिक परिस्थितियों के अनुसार कानून बनाकर भारतीय जनजीवन को प्रभावित किया। प्रतिक्रियास्वरूप

नवजागरण आया ओर विरोध हुआ। बंग–भंग आंदोलन, रोलेट एक्ट का विरोध, साइमन कमीशन बहिष्कार आदि के परिणामस्वरूप देश में एकसूत्रता बढ़ी। इस एकसूत्रता को पुष्ट करने के लिए एक सक्षम अभिव्यक्ति साधन के रूप में हिन्दी अपना राष्ट्रीय कर्त्तव्य निर्वाह करने का अवसर ही नहीं मिला बल्कि उसने अपना राष्ट्रीय रूप भी स्थापित किया था। जनसाधारण से जब कभी कोई हिन्दू, सिख, मुसलमान, ईसाई नेता अपनी बात कहना चाहते थे तो बातचीत का माध्यम हिन्दी ही होती थी।

राष्ट्रीय और सामाजिक आंदोलन के दौरान मैथिलीशरण गुप्त, अयोध्यासिंह उपाध्याय जैसे कवियों ने परिष्कृत भाषा का उपयोग कर हिन्दी को गौरवपूर्ण स्थान दिलाने में मदद की। रामधारी सिंह दिनकर ने हिन्दी को हिन्दी की परम्परा साम्प्रदायिकता की परम्परा नहीं बल्कि एकता उदारता, सामाजिक समानता और वैयक्तिक स्वतन्त्रता की परंपरा है। इसके अतिरिक्त महावीर प्रसाद द्विवेदी, देवकी नन्दन खत्री, प्रेमचन्द, रामचन्द्रशुक्ला, प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी, पंत, महादेवी आदि रचनाकारों ने हिन्दी को लोकप्रिय तथा मानक बनाने में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

स्वतंत्रता आंदोलन में समाज सुधारकों और राजनेताओं ने हिन्दी के महत्व को समझा तथा इसे अपनाया। दयानन्द सरस्वती, पटेल, तिलक आदि ने हिन्दीतर भाषी होते हुए भी हिन्दी के प्रचार–प्रसार पर बल दिया। स्वामी दयानन्द ने धार्मिक आध्यात्मिक दृष्टि से बालगंगाधर तिलक ने राजनैतिक दुष्टि से भारतीय गौरव की स्थापना की थी। लोकमान्य तिलक ने भारतीयों से आग्रह किया था कि देश की एकता के लिए हिन्दी सीखें। उन्होंने लिखा कि राष्ट्र के संगठन के लिए आज ऐसी भाषा की आवश्यकता है जिसे सर्वत्र समझा जा सके। किसी जाति को निकट लाने के लिए एक भाषा का होना महत्त्वपूर्ण है। एक भाषा के माध्यम से आप अपने विचारों को दूसरों पर व्यक्त कर सकते हैं।

प्राचीन समय में जो भूमिका संस्कृत भाषा की थी, आज वही हिन्दी की है। वस्तुतः संस्कृत भाषा का अतिक्रमण कर अधिभाषा हो गई थी, इसलिए वह अपने समय के गुरूतर दायित्वों का निवर्हण कर सकती थी। हिन्दी को भी भारत की राष्ट्रीय जरूरतों की पूर्ति के लिए अधिभाषा की तरह देखना, मानना होगा, जैसे संस्कृत केवल पंजाब की भाषा नहीं थी, वेसे हिन्दी मेरठ–दिल्ली या उत्तर भारतीयों की नहीं थी। समूचे भारत की भाषा थी।

भारत के अजाद होने के समय जिस हिन्दी साम्राज्यवाद की आशंका व्यक्त कर छठें सातवें दशक के भारत के भाषायी ओर सांस्कृतिक परिवेश को विषक्त करने की कोशिशें की गई वे निर्मूल ओर निराधार थी, क्योंकि हिन्दी का जितना आत्मीय संबंध जनपदीप भाषाओं से है, अन्य भाषाओं से उतना कम नहीं है। हिन्दी साम्राज्यवाद की बात उन लोगों द्वारा प्राचारित की गई थी जिनके कुठ निहित स्वार्थ थे। ये लोग हिन्दी के विरूद्ध तमिल और बंगला जैसी भारतीय भाषाओं की स्थापना का आन्दोलन नहीं चला रहे थे बल्कि हिन्दी की राह में अंग्रेजी का रोड़ा अटकाकर अपने स्वार्थों को सदैव के लिए सुनिश्चित कर लेना चाहते थे। हमें यह बात अच्छी तरह से समझनी होगी कि भारतीय भाषाओं की दीर्घ जीविता ओर विकास हिन्दी के साथ अनिवार्य रूप से संबद्ध है। कई विदेशी शासकों ने हिन्दी का रास्ता अपनाकर भावनात्मक रूप से अपने को जोड़ने में सफलता प्राप्त की लेकिन ब्रिटेन शासनकाल में तत्कालीन गर्वनर जनरल लार्ड बिलियम बेंटिग ने मैकाले को लोकशिक्षा समिति का प्रमुख नियुक्त किया गया था। मैकाले अपनी भाषा, संस्कृति धर्म का कट्टर समर्थक था और भारतीय भाषा, संस्कृति धर्म से उसे घृणा थी। उसकी शिक्षा नीति का दंश आज भी हम झेल रहे हैं। लेकिन यही हिन्दी भाषा थी जिसने अंग्रेजों के विरूद्ध प्रतिरोध और आपसी एकजुटता का स्वर बुलन्द किया और लोगों में जागृति आई। इन सबका परिणाम यह हुआ कि अंग्रेजों के विरूद्ध 1857 की पहली क्रांति सभी दिशाओं में एक ही सुर, एक स्वर सभी क्षेत्रों, धर्मों, जातियों में एक ही तरह का संकल्प गजब की जागृति ओर राष्ट्रीय चेतना, अंग्रेजों द्वारा फूट डालने वाली चाल भी यहाँ मात खा गई। इसी संग्राम ने नेताओं, द्वारा विदेशी के साथ ही विदेशी भाषा के बहिष्कार की आवाज उठाईगई, उससे सफलता भी मिली। पूरे देश में एकता की लहर लाने का श्रेय हिन्दी भाषा को दी थी।

महात्मा गाँधी ने राष्ट्र निर्माण और स्वतन्त्रता दिलाने में अभूतपूर्व और महत्वपूर्ण योगदान हैं। उनका कहना था –मेरे लिए हिन्दी का प्रश्न स्वराज्य का प्रयन है। हिन्दी को हम राष्ट्रभाषा मानते हैं। "अगर स्वराज्य अंग्रेजी बोलने वाले भारतीयों का और उन्हीं के लिए होने वाला हो तो निःसन्देह अंग्रेजी ही राष्ट्रभाषा होगी। लेकिन अगर स्वराज्य करोडो भूखे मरने वालों, करोड़ों निरक्षर दलितों, अन्त्यजों का हो और उन सबके लिए होने वाला हो तो हिन्दी ही एकमात्र राष्ट्रभाषा हो सकती है। हिन्दी का निर्माण राष्ट्र के योग्य ही हुआ है और यह बहुत वर्षों पहले राष्ट्रभाषा की भांति व्यवहत हो चुकी है।

देश की स्वतंत्रता आंदोलन में हिन्दी की भूमिका महत्त्वपूर्ण रही है। सन् 1857 में जब हमारे देश में स्वतंत्रता संग्राम का आगाज हुआ, उस समय पूरे देश में जो क्रांति की ज्वाला भड़की, उसका आधार हिन्दी ही थी। हिन्दी ने ही देशवासियों की जिजीविषा, राष्ट्रप्रेम, आस्थावादों, आत्मीयता, कर्मनिष्ठा, राष्ट्रप्रेम, दायित्वबोध, सहिष्णुता, समन्वयवादिता एवं प्रबल स्वातंत्रय, अभीरसा को प्रखरता से उजागर किया। यही कारण है कि देशवासियों में देशभक्ति की भावना का ऐसा प्रबल ज्वार आया कि जिसने अंग्रेजों को झकझोर कर रख दिया। हालांकि 1857 का संग्राम किन्ही कारणों से मुकाम तक नहीं पहुँच पाया, परन्तु इस संग्राम में सत्यग्राहियों, राष्ट्रभक्तों और प्रबुद्ध नागरिकों में स्वातंत्रय बोध का प्रबल भाव करने का जो कार्य किया हिन्दी ने ही किया। इस बात का साक्षी भारतीय जनमानस पर हिन्दी कितना व्यापक प्रभाव है। जब राष्ट्रीय एकता एवं सद्भावना की बात चली तो राष्ट्रकवि मैथिलीशरण

गुप्त की इन पंक्तियों को कैसे भूल सकते है जिन्होंने देश की राजभाषा हिन्दी के संबंध में अपने उद्गार व्यक्त किए हैं।

''है भाग्य भारत की हमारी मातृभाषा हरी भरी।

हिन्दी हमारी मातृभाषा और लिपि है देवनागरी।।''

भारत में राजनीतिक एवं धार्मिक एकता के अलावा भारत में सांस्कृतिक एकीकरण में भी हिन्दी की बड़ी भूमिका है। देश में वेद पुराण और समस्त प्राचीन ग्रन्थ संस्कृत अथवा अन्य किसी भाषा में हो परन्तु रामायण, श्रीमदभगवद्गीता व भारतीय दर्शन के अन्य ग्रन्थों की सूक्ष्मता और गहराई से समझाने का सामर्थ्य हिन्दी भाषा में सबसे अधिक हो भारत जैसे देश जहाँ कई भाषाएँ बोली जाती है और ऐसी में एक दूसरे से संपर्क करने के लिए भी एक सर्वमान्य भाषा की ज़रूरत होती है ओर हमारी सांस्कृतिक विरासत एवं साहित्य की भाषा के साथ–साथ जनता की संपर्क भाषा बनने को श्रेय हिन्दी का ही मिल पाया है। हिन्दी सदा से देश को जोड़ने का कार्य कर रही है चाहे वह राष्ट्रीय आन्दोलन हो या सांस्कृतिक ओर आध्यात्मिक। दक्षिण के शंकराचार्य, वल्लभाचार्य, मधवाचार्य आदि आचार्यों ने दर्शनिक विचारों को आत्मसात् किया। चारो दिशाओं से जो सांस्कृतिक लोकजागरण का मंत्र लेकर भाव–भगति का उद्बोधन हुआ उसका पूर्ण सर्जनात्मक साक्ष्य एवं दाय हिन्दी साहित्य में सुरक्षित है। स्वतंत्रता आंदोलन की राष्ट्रभक्ति, त्याग और ओज के प्रेरक गीतों की थाती हिन्दी में है। जैन, बौद्धो, नाथों की विचार सारणियां आदि को हिन्दी ने सजोकर रखा है। सूफियों की प्रेमसाधना हिन्दी में है। उपेक्षितों विरस्कृतों के उत्थान समता, समानता की आकांक्षा की हुंकार हिन्दी में है, देश–विदेशों के साहित्य से होड़ लेने की क्षमता हिन्दी में है। हिन्दी का प्रचुर साहित्य उसकी आन्तरिक संवेदना को सभी भारतवासी जान ओर समझ सकें। भारतीय भाषाओं के श्रेष्ठ साहित्य का हिन्दी में अनुवाद होना चाहिए। भाषाभेद के बावजूद भारतीयता की अवधारण एवं भारतीय साहित्य की परिकल्पना तभी सकार होगी। भारत राष्ट्र की बहुविध भाषा हिन्दी हो सके तो राष्ट्रीयता और अधिक सुदृढ़ होगी। ज्ञान–विज्ञान, पठन–पाठन, न्याय व्यापार शिक्षा संविधान सभी क्षेत्रों में जहाँ जहाँ अंग्रेजियत प्रतिष्ठित है वहाँ–वहाँ हिन्दी या भारतीय भाषाओं को स्थान मिलना चाहिए। हिन्दी की सरल रचनात्मक प्रकृति, राष्ट्रीय स्तर पर प्रचार–प्रसार एवं भाषायी क्षमता को देखते हुए राष्ट्रीय एक्ता को सुदृढ़ बनाने के लिए अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भारतीय अस्मिता बनाने के लिए हिन्दी की सर्वतोमुखी स्वीकृति आवश्यक है। जरा हमें विचार करना होगा हिन्दी अपने देश से अंग्रेजों के दो सौ वर्षों का खूटा उखाड़ सकती है तो हिन्दी विश्व की भाषा क्यों नहीं बन सकती जिसे आज हम विश्वगुरू बनाने की बात कह रहे हैं। ■

उमाशंकर प्रसाद
सहायक (मा.सं.), निगमित कार्यालय

दिल्ली प्रदूषण

दिल्ली शहर में प्रदूषण की समस्या बहुत गंभीर है। शहर में प्रदूषण उद्योग और वाहनों से आता हैं। उद्योग अनुपचारित धुएं के रूप में वायु प्रदूषण पैदा करता है जिसमें कई खतरनाक गैसें होती है। उद्योग नदी और उसकी सहायक नदी में हजारों लीटर जहरीले अनुपचारित अपशिष्ट का भी निर्वहन करता है। शहर की हवा और पानी अधिक विषैला हो गया है जिससे कई स्वास्थ्य संबंधी जटिलताएं पैदा हो रही है।

इस अत्यंत गंभीर समस्या का एक मात्र समान पर्यावरण को बचाने में लोगों की सामूहिक भागीदारी है। सरकार को शक्ति से कारवाई करनी चाहिए। प्रदूषण फैलाने वाले वाहनो और पी.यू.सी. प्रमाणपत्र नहीं रखने वाले वाहनों की निगरानी के लिए विभिन्न स्थानों पर मोबाईल प्रवर्तन दल तैनात किए गए हैं।

अगर हम में से हर कोई अपने पर्यावरण के लिए कुछ करने का संकल्प लेता है, तो मुझे यकीन है कि दिल्ली रहने के लिए एक बेहतर शहर बन पाएगा। ■

पोस्ट ऑफिस फिक्सड डिपॉजिट

वित्त प्रभाग

आरती गुप्ता
प्रबन्धक (वित्त), निगमित कार्यालय

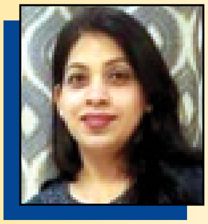

पोस्ट ऑफिस फिक्स्ड डिपॉज़िट, जिसे आधिकारिक तौर पर 'पोस्ट ऑफिस टाइम डिपॉज़िट अकाउंट' कहा जाता है। यह एक सरकारी योजना है। इस योजना के तहत निवेशक देश के किसी भी पोस्ट ऑफिस में अपना पैसा रख सकते हैं। यह ज़्यादा सस्ती भी है और इस प्रकार आबादी के एक बड़े हिस्से के लिए यह अधिक पसंदीदा विकल्प है। इसके अलावा 5 साल के लिए डिपॉज़िट, टैक्स सेविंग स्कीम के रूप में योग्य है जिसका अर्थ है कि आयकर अधिनियम, 1961 की धारा 80सीए के अनुसार 1.5 लाख रु0/वित्तीय वर्ष की टैक्स कटौती का क्लेम किया जा सकता है।

पोस्ट ऑफिस फिक्सड डिपॉजिट के लाभ

- जोखिम ना लेने वाले निवेशकों के लिए पोस्ट ऑफिस फिक्स्ड डिपॉज़िट में अपने पैसों को निवेश करना एक पसंदीदा विकल्प है। पोस्ट ऑफिस टाइम डिपॉज़िट (पी.ओ.टी.डी.) अकाउंट में निवेश के निम्नलिखित लाभ हैं:
- यह एक सरकारी योजना है, इसलिए निवेशकों के लिए यह अधिक सुरक्षित है
- एक गैर–लाभकारी संगठन है, इसका मुख्य ध्यान सामाजिक कल्याण है और यह पी.ओ.टी.डी. (पोस्ट ऑफिस टाइम डिपॉज़िट) की विशेषता है
- पोस्ट ऑफिस नेटबैंकिंग के ज़रिए ऑनलाइन के साथ–साथ ऑफलाइन भी अकाउंट खोला जा सकता है।
- टैक्स (टी.डी.एस.) अर्जित ब्याज पर नहीं लगाया जाता है।
- 5 साल के लिए किए गए डिपॉज़िट (आई.टी.आर.) फाइल करते समय सकल वेतन से टैक्स कटौती प्राप्त करते हैं। (धारा 80सी के अनुसार 1.5 लाख रु0 प्रति वित्तीय वर्ष)।
- डिपॉज़िट अकाउंट को सिंगल या ज्वॉइंट रूप से (3 सदस्यों तक) किया जा सकता है।
- एक डाकघर से दूसरे में आसान ट्रांसफर।

- नाबालिग वैध अभिभावक के तहत टाइम डिपॉज़िट अकाउंट खोल सकते हैं।
- किसी भी पोस्ट ऑफिस में एक से अधिक फिक्स्ड डिपॉज़िट अकाउंट खोले जा सकते हैं।
- अकाउंट खोलने के बाद भी कोई व्यक्ति नॉमिनी जोड़ सकता है।
- पोस्ट ऑफिस में फिक्स्ड डिपॉज़िट करने से पहले, पोस्ट ऑफिस एफडी कैलकुलेटर का उपयोग करने की सलाह दी जाती है। पैसाबाज़ार.कॉम निशुल्क एफ.डी. कैलकुलेटर का उपयोग कर आप जान सकते हैं कि कितनी अवधि केलिए कितनी राशि जमा कर आपको कितना ब्याज मिलेगा।
- इंस्ट्रूमेंट में जमा राशि, अवधि (महीनों या वर्षों में) और वर्तमान डाकघर के लिए चुनी गई अवधि के लिए जमा ब्याज दर की आवश्यकता होती है।
- पोस्ट ऑफिस फिक्स्ड/टाइम डिपॉज़िट में निवेश का एक बड़ा फायदा यह है कि अर्जित ब्याज पर टैक्स (टी.डी.एस.) नहीं काटा जाता है। ऐसा इसलिए है, क्योंकि यह विशेष रूप से हर वर्ग को लाभ देने के लिए बनाया गया हैऔर सरकार द्वारा उनसे टैक्स नहीं लिया जाता है।
- आयकर रिटर्न (आई.टी.आर.) दाखिल करते समय, कोई व्यक्ति आयकर अधिनियम, 1961 की कटौती धारा 80सीसी का क्लेम करने के लिए पोस्ट ऑफिस में फिक्स्ड डिपॉज़िट को अपने निवेश में जोड़ सकते हैं। आयकर अधिनियम, 1961 की धारा के तहत अधिकतम 1.5 लाख रु0 की टैक्स कटौती का लाभ भी लिया जा सकता है।

भारत में किसी भी डाकघर के साथ टाइम डिपॉज़िट या फिक्स्ड डिपॉज़िट अकाउंट खोलने के लिए किसी व्यक्ति के लिएनिम्नलिखित योग्यता शर्तें दी गई है:

- व्यस्क हो।
- नाबालिग, जिसकी उम्र 10 वर्ष से अधिक्त हो।
- नाबालिग की ओर से कानूनी अभिभावक। ■

वित्तीय लेखांकन क्या है ?

सजल अग्रवाल
सहायक प्रबन्धक (वित्त), निगमित कार्यालय

लेखांकन व्यवसाय की भाषा है। यह एक सूचना प्रणाली है जो व्यावसायिक गतिविधियों को मापती है, सूचना को संसाधित करती है और वित्तीय जानकारी और निर्णय निर्माताओं को परिणाम बताती है। लेखांकन एक वृक्ष है जबकि वित्तीय लेखांकन इसकी एक शाखा है।

वित्तीय लेखांकन की परिभाषाएँ?

अमेरिकन अकाउंटिंग एसोसिएशन (ए.ए.ए.) के अनुसार "सूचना के उपयोगकर्ताओं द्वारा सूचित निर्णय और निर्णय की अनुमति देने के लिए आर्थिक जानकारी को पहचानने, मापने और संचार करने की प्रक्रिया" को वित्तीय लेखांकन या फाइनेंसियल एकाउंटिंग कहा जाता है।

अमेरिकन इंस्टीट्यूट ऑफ सर्टिफाइड पब्लिक अकाउंटेंट्स (ए.आई.सी.पी.ए.) के अनुसार "एक सेवा गतिविधि जिसका कार्य मात्रात्मक जानकारी प्रदान करना है, मुख्य रूप से प्रकृति में वित्तीय, आर्थिक संस्थाओं के बारे में जो आर्थिक निर्णय लेने में उपयोगी होने का इरादा रखती है" को वित्तीय लेखांकन या फाइनेंसियल एकाउंटिंग कहा जाता है।

वित्तीय लेखांकन का उद्देश्य

- व्यवस्थित रिकॉर्ड रखने के लिए।
- व्यावसायिक संपत्तियों की सुरक्षा के लिए।
- परिचालन लाभ या हानि का पता लगाने के लिए।
- व्यापार की वित्तीय स्थिति का पता लगाने के लिए।
- तर्कसंगत निर्णय लेने की सुविधा के लिए।

वित्तीय लेखांकन के कार्य

- व्यापार लेनदेन के बारे में डेटा रिकॉर्डिंग।
- उपयोगी रिपोर्ट में व्यावसायिक गतिविधि के परिणामों का सारांश।
- यह आश्वासन देते हुए कि व्यवसाय उद्देश्य के अनुसार चल रहा है।
- संगठन के लिए निर्णय निर्माताओं के लिए डेटा प्रदान करना, जैसे स्टॉकहोल्डर, आपूर्तिकर्ता, बैंक और सरकारी एजेंसियां।

वित्तीय लेखांकन की प्रकृति

लेखा प्रणाली रिकॉर्ड, विश्लेषण, मात्रा, संचय, संक्षेप, वर्गीकृत, रिपोर्ट करने और एक संगठन पर आर्थिक घटनाओं और उनके प्रभावों की व्याख्या करने और वित्तीय विवरण तैयार करने के लिए किए गए चरणों की एक श्रृंखला है। लेखा प्रणाली को उन निर्णय निर्माताओं की जरूरतों को पूरा करने के लिए डिज़ाइन किया गया है जो वित्तीय जानकारी का उपयोग करते हैं। हर व्यवसाय में किसी न किसी प्रकार की लेखांकन प्रणाली होती है। ये लेखा प्रणाली बहुत जटिल या बहुत सरल हो सकती हैं, लेकिन किसी भी लेखांकन प्रणाली का वास्तविक मूल्य उस जानकारी में निहित है जो सिस्टम प्रदान करता है।

- **लेखांकन एक प्रक्रिया है:** लेखांकन को एक प्रक्रिया के रूप में पहचाना जाता है क्योंकि यह वित्तीयजानकारी एकत्र करने, प्रसंस्करण और संचार करने का विशिष्ट कार्य करता है।
- **लेखांकन एक कला है:** लेखांकन वित्तीय आंकड़ों की रिकॉर्डिंग, वर्गीकरण, सारांश और अंतिम रूप देने की एक कला है।
- **लेखांकन एक साधन है और अंत नहीं है:** लेखांकन एक इकाई के वित्तीय परिणामों और स्थिति का पता लगाता है और एक ही समय में, यह इस जानकारी को अपने उपयोगकर्ताओं को बताता है। इस प्रकार, लेखांकन स्वयं एक उद्देश्य नहीं है, यह एक विशिष्ट उद्देश्य प्राप्त करने में मदद करता है। इसलिए यह कहा जाता है कि लेखांकन 'अंत का एक साधन है' और यह अपने आप में एक अंत नहीं है।
- **वित्तीय जानकारी और लेनदेन के साथ लेखांकन सौदों:** लेखांकन वित्तीय लेनदेन को रिकॉर्ड करता है और उसी को वर्गीकृत करने के बाद की तिथि और उनके परिणाम को अंतिम रूप देकर अपने उपयोगकर्ताओं को बताने के लिए तय करता है।
- **लेखांकन एक सूचना प्रणाली है:** लेखांकन को मान्यता दी जाती है और उसे सूचना के भंडार के रूप में जाना जाता है। एक सेवा समारोह के रूप में, यह प्रक्रियाओं को इकट्ठा करता है और किसी भी इकाई की वित्तीय जानकारी का संचार करता है।

वित्तीय लेखांकन का दायरा–लेखांकन को उपयोग करने का एक बहुत व्यापक दायरा और क्षेत्र मिला है।

- आधुनिक दुनिया में, न केवल सभी व्यावसायिक संस्थानों में, बल्कि कई गैर–व्यापारिक संस्थानों जैसे स्कूल, कॉलेज, अस्पताल, चौरिटेबल ट्रस्ट क्लब, सहकारी समिति आदि और भी सरकार और स्थानीय स्व–सरकार में लेखांकन प्रणाली का अभ्यास किया जाता है। पेशेवर व्यक्ति जैसे चिकित्सा व्यवसायी, वकील, चार्टर्ड अकाउंटेंट आदि का अभ्यास करना भी कुछ उपयुक्त प्रकार के लेखांकन तरीकों को अपनाते हैं।
- वास्तव में, लेखांकन विधियों का उपयोग उन सभी द्वारा किया जाता है जो वित्तीय लेनदेन की एक श्रृंखला में शामिल हैं।
- चूंकि लेखांकन एक गतिशील विषय है, इसलिए सामाजिक–आर्थिक परिवर्तनों में परिवर्तन के साथ परिचालन और कार्यक्षेत्र का क्षेत्र हमेशा बढ़ता रहा है। इस क्षेत्र में निरंतर अनुसंधान के परिणामस्वरूप लेखांकन सिद्धांतों और नीतियों के आवेदन के नए क्षेत्र उभर कर सामने आए हैं। राष्ट्रीय लेखांकन, मानव संसाधन लेखांकन और सामाजिक लेखांकन, लेखांकन प्रणालियों के अनुप्रयोग के नए क्षेत्रों के उदाहरण हैं।

लेखांकन की आवश्यक विशेषताएं

- पहचानः इसकी पहचान होनी चाहिए।
- मापः यह व्यवसाय के लिए डेटा को माप रहा है।
- रिकॉर्डिंगः यह एक व्यवस्थित तरीके से वित्तीय लेनदेन की रिकॉर्डिंग से संबंधित है, खातों की उचित पुस्तकों में उनकी घटना के तुरंत बाद।
- वर्गीकृत करनाः यह रिकॉर्ड किए गए डेटा के व्यवस्थित विश्लेषण से संबंधित है ताकि एक ही स्थान पर समान प्रकार के लेनदेन को संचित किया जा सके। यह फ़ंक्शन लीडर को बनाए रखने के द्वारा किया जाता है जिसमें विभिन्न खाते खोले जाते हैं जिनसे संबंधित लेनदेन पोस्ट किए जाते हैं।
- सारांशः यह उपयोगकर्ताओं के लिए उपयोगी तरीके से वर्गीकृत डेटा की तैयारी और प्रस्तुति से संबंधित है। इस फ़ंक्शन में वित्तीय विवरणों की तैयारी शामिल है जैसे आय विवरण, बैलेंस शीट, वित्तीय स्थिति में परिवर्तन का विवरण, कैशफ़्लो का विवरण, मूल्य का विवरण जोड़ा गया।
- व्याख्याः एकाउंटेंट को कार्रवाई के लिए उपयोगी तरीके से बयानों की व्याख्या करनी चाहिए। एकाउंटेंट को न केवल यह बताना चाहिए कि क्या हुआ है, बल्कि (क) ऐसा क्यों हुआ, और (ख) निर्दिष्ट शर्तों के तहत क्या होने की संभावना है।
- संचारः अंत में, लेखांकन कार्य उपयोगकर्ताओं को वित्तीय डेटा संचार करना है।

वित्तीय लेखांकन की सीमाएँः

- वित्तीय लेखांकन वैकल्पिक उपचार की अनुमति देता है।
- वित्तीय लेखांकन व्यक्तिगत निर्णय से प्रभावित होता है।
- वित्तीय लेखांकन महत्वपूर्ण गैर–मौद्रिक जानकारी की उपेक्षा करता है।
- वित्तीय लेखांकन समय पर जानकारी प्रदान नहीं करता है।
- वित्तीय लेखांकन विस्तृत विश्लेषण प्रदान नहीं करता है।
- वित्तीय व्यवसाय के वर्तमान मूल्य का खुलासा नहीं करता है।

■

अल्पकालीन तथा दीर्घकालीन वित्त के विभिन्न स्रोतों का वर्णन

कुंदन पाटिल
लेखा अधिकारी (वित्त), रसायनी यूनिट

किसी भी संगठन में वित्त के साधनों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है जिसके आधार पर एक संगठन अथवा संस्था का जन्म होता है। दीर्घकालीन, मध्यकालीन एवं अल्पकालीन वित्त के साधन संगठन के जीवन क्रम में अपरिहार्य है। प्रस्तुत इकाई में इनकी क्रमानुसार व्याख्या की गई है जो एक कम्पनी के जीवन चक्र को निश्चित करते हैं वित्त के स्रोत वर्तमान प्रतिस्पर्धी युग में वित्तीय प्रबन्धकों के लिए महत्वपूर्ण निर्णय होता है। जिसके आधार पर वे यह तय करते हैं कि, वित्त के किस स्रोत से पूंजी की औसत लागत कम हो और उसकी उत्पादकता अधिकतम हो जिससे संगठन को उसकी आवश्यकताओं की पूर्ति कर प्रतिस्पर्धी बना सकें।

दीर्घकालीन वित्त से आशय ऐसी वित्तीय आवश्यकताओं से है जो सात वर्ष से लेकर दस वर्ष या अधिक अवधि के लिए वित्त का प्रबन्ध करना पड़ता है। दीर्घकालीन वित्त का विनियोग स्थायी सम्पत्तियों में किया जाता है अर्थात तरलता नहीं के बराबर होती है। अतः दीर्घकालीन वित्त को अंश पूंजी, ऋण पूंजी तथा कम्पनी के प्रतिधारित लाभों से प्रबन्ध किया जाता है। नयी कम्पनियाँ लाभों को प्रतिधारित करने की स्थिति में नहीं होती है वे केवल अंश एवं ऋण पूंजी के स्रोत से वित्त व्यवस्था करती है।

दीर्घकालीन वित्त के स्रोत

अंश पूंजी

अंश से आशय पूंजी के एक भाग से हैं जो अनके हिस्सों में विभाजित होते हैं अर्थात पूंजी का अनुपातिक भाग जिसका प्रत्येक सदस्य अस्थाईकारी होता है अंश कहलाता है।

विषेशताएँ–

1. अंश चल सम्पत्ति माने जाते हैं जो अंशधारियों के इच्छानुसार बेचे जाते हैं।

2. अंशधारियों का दायित्व अंश में अंकित मूल्य तक सीमित होता है।

3. अंशधारी कम्पनी के स्वामी होते हैं और उन्हें प्रबन्ध का अधिकार होता है।

4. अंश पूंजी जोखिम पूंजी होती है जो अंशधारियों को वापस होने की गारंटी नहीं देती।

5. अंशधारियों को अंश पर लाभांश प्राप्त करने का अधिकार होता है।

6. अंश दीर्घकालीन स्थायी पूंजी के स्रोत होते हैं।

समताश अंश पूंजी– समताश अंश धारी कम्पनी के वास्तविक स्वामी होते हैं जो कम्पनी के जोखिम को सहन करते हैं और लाभांश प्राप्त करने का अधिकार पूर्वाधिकार अंशों पर भुगतान के बाद होता है। इन अंशों पर लाभांश की दर निश्चित नहीं होती। इनका लाभांश कम्पनी की आय के अनुपात में घटता बढ़ता रहता है। समतांश धारियों के द्वारा संचालकों की नियुक्ति होती है एवं इन्हीं के द्वारा संचालकों का चयन किया जाता है।

पूर्वाधिकार अंश पूंजी– कम्पनी के समस्त व्ययों का भुगतान करने के बाद शेष बचे लाभ पर पूर्वाधिकार अंशधारियों को पहले लाभांश प्राप्त करने का अधिकार होता है। इन अंशों पर भुगतान के बाद समता अंशधारियों को लाभांश का भुगतान किया जाता है। कम्पनी के विघटन की दशा में समस्त देनदारियों भुगतान करने के पश्चात शेष बची सम्पत्तियों से पूर्वाधिकार अंशधारियों की पूंजी वापस की जाती है लेकिन पूर्वाधिकार अंशधारियों को प्रबन्ध पर नियंत्रण का अधिकार नहीं होता। पूर्वाधिकार अंशधारियों के प्रकार है:–

1. संचयी पूर्वाधिकार अंश,
2. असंचयी पूर्वाधिकार अंश,
3. भागीदार पूर्वाधिकार अंश,
4. गैरभागीदार पूर्वाधिकार अंश,
5. शोध्य पूर्वाधिकार अंश,

6. अशोध्य पूर्वाधिकार अंश,

7. परिवर्तनशील पूर्वाधिकार अंश,

8. अपरिवर्तनशील पूर्वाधिकार अंश,

9. संरक्षित पूर्वाधिकार अंश,

10. प्रत्याभूतित पूर्वाधिकार अंश।

ऋण पूंजी

व्यवसाय उपक्रमों की वित्तीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए अंश पूंजी के अलावा जिस पूंजी का उपयोग किया जाता है उसे ऋण पूंजी कहते हैं। यह पूंजी ऋणदाताओं द्वारा प्रदान की जाती है और यह ऋण निगमों द्वारा ऋण पत्रों, बन्ध पत्रों एवं सावधि ऋणों के माध्यम से प्राप्त की जाती है। ऋण पूंजी से आशय कम्पनी द्वारा लिये गये ऋण की लिखित स्वीकृति एक पत्र के द्वारा दी जाती है जिस पर कम्पनी की मुहर लगी होती है और उस पर ऋण की राशि एवं ब्याज दर व अन्य शर्तों का उल्लेख रहता है अर्थात ऋण पत्र कम्पनी के सामान्य मुहर के अधीन निर्गमित एक ऐसा प्रपत्र है जो ऋण की स्वीकृति प्रदान करता है और उन शर्तों को भी स्पष्ट करता है जिनके अधीन वे विनिर्मित किए गये हैं और उनका शोधन होता है।

ऋणपत्र– ऋणपत्र में ऋणपत्र स्तंभ और कम्पनी की अन्य प्रतिभूतियों को सम्मिलित किया जाता है। चाहे वे कम्पनी की सम्पत्तियों पर प्रभार उत्पन्न करे या नहीं। ऋणपत्रों को समझने के लिए निम्न बिन्दु समझना आवश्यक है–

1. ऋणपत्रधारी कम्पनी के ऋणदाता होते हैं स्वामी नहीं। इन्हें मत देने का अधिकार नहीं है।

2. ऋणपत्रों का स्कन्ध बाजार में क्रय–विक्रय किया जा सकता है।

3. कम्पनी प्रविवरण जारी करके ऋणपत्रों के माध्यम से सार्वजनिक जनता से ऋण प्राप्त करती है।

4. ऋण पत्रों की अवधि बहुधा दीर्घकालीन होती है जिनका शोध्य दस वर्षों से पूर्व नहीं होता।

5. कम्पनी विघटन की स्थिति में ऋणपत्रों की रकम वापसी अंश पूंजी से पहले होती है।

ऋणपत्रों के प्रकार हैं–

1. शोध्य एवं अशोध्य ऋणपत्र,

2. पंजीकृत एवं वाहक ऋणपत्र,

3. परिवर्तनीय एवं अपरिवर्तनीय ऋणपत्र,

4. सुरक्षित एवं असुरक्षित ऋणपत्र।

सार्वजनिक ऋण– यह पूंजी का मुख्य स्रोत है। यह ऋण बहुधा बैंकों एवं वित्तीय संस्थाओं से प्राप्त किये जाते हैं जिनका भुगतान तीन वर्ष की अवधि से लेकर दस वर्ष तक की अवधि तक होता है। ये संस्थाएँ निम्न हैं। जैसे– आई.डी.बी.आई., आई.एफ.सी.आई., आई.सी.आई.सी.आई. एफ.सी.आई. एवं वाणिज्यिक बैंक आदि।

प्रतिभूतियाँ एवं बॉण्ड– दीर्घकालीन वित्त के साधनों के रूप में बन्ध पत्र एवं बांण्डों का काफी प्रचलन है। अर्थात ऐसे ऋणपत्र जो कम्पनी की सम्पत्तियों को बन्धक रखकर निर्गमित किये जाते हैं जिन्हें भारत में सुरक्षित या प्रत्याभूतित ऋणपत्र कहा जाता है। अन्य देशों में इसे बॉण्ड की रूप में जाना जाता है। बन्ध पत्र कम्पनी द्वारा लिये गये ऋण का प्रमाणपत्र है। जिससे कम्पनी की सम्पत्तियों पर प्रभाव उत्पन्न होता है। बन्ध पत्र विभिन्न प्रकार के होते हैं जो निम्न हैं–

1. ब्याज के आधार पर– वाहक एवं पंजीकृत बंधपत्र।

2. सुरक्षा के आधार पर– बन्धक बन्धपत्र, गारटीं युक्त, सम्पारिवर्क एवं उपकरण न्यास बन्धपत्र।

3. प्रावधान के आधार पर– सगंठित, विकास एवं विस्तार, निधिकरण एवं पुनर्निधिकरण, समायोजन एवं पुनर्गठन, विकास एवं विस्तार एवं क्रय धनराशि बन्धपत्र।

4. आय के आधार पर– आय, निश्चित ब्याज, भागीदार एवं लाभभागिता, स्थिरीकरण एवं कर रहित बन्धपत्र। ■

वित्त अधिनियम 2022 द्वारा किए गए संशोधन : मुख्य विशेषताएं

अंकिता काबरा
अधिकारी (लेखा), निगमित कार्यालय

1. वित्त अधिनियम 2022 धारा 115 बी.ए.बी के तहत वैकल्पिक कर व्यवस्था की योजना में संशोधन

वित्त अधिनियम 2022 ने धारा 115 बी.ए.बी में परिवर्तन किए, जो नई घरेलू निर्माण कंपनियों के लिए एक वैकल्पिक रियायती कर व्यवस्था (कर की दरः 15 प्रतिशत) प्रदान करता है, बशर्ते कंपनी 1 अक्टूबर, 2019 को या उसके बाद पंजीकृत हो और यह उस पर 31 मार्च 2023 या उससे पहले विनिर्माण गतिविधि शुरू करती है।

संशोधन– उक्त कंपनियों को राहत प्रदान करने के लिए धारा 115 बी.ए.बी की योजना में संशोधन किया गया है ताकि किसी वस्तु के निर्माण या उत्पादन की तिथि 31 मार्च, 2023 से बढ़कर 31 मार्च, 2024 किया जा सके।

2. वित्त अधिनियम 2022 धारा 115 बी.बी.डी. के तहत विदेशी कंपनियों से लाभांश पर रियायती कर के घटने को वापस लेता है।

वित्त अधिनियम 2022 ने धारा 115 बी.बी.डी. में संशोधन किया जो एक कंपनी से प्राप्त लाभांश आय पर 15 प्रतिशत की रियायती दर का प्रावधान करता है जिसमें उक्त भारतीय कंपनी इक्विटी शेयरों के नाममात्र मूल्य में 26 प्रतिशत (या अधिक) रखती है।

संशोधन– धारा 115 बी.बी.डी. के पूर्वोक्त प्रावधान निर्धारण वर्ष 2023–24 से लागू नहीं होंगे।

3. सहकारी समितियों के लिए वैकल्पिक न्यूनतम कर की योजना में संशोधन धारा 115 जेसी और जे.एफ

धारा 115 जे.सी. से 115 जे.एफ. गैर–कॉर्पोरेट निर्धारितियों (सहकारी समितियों) के लिए वैकल्पिक न्यूनतम कर को विनियमित करते हैं। वर्तमान में, वैकल्पिक न्यूनतम कर 18.5 प्रतिशत (एस.सी.+एच.ई.सी.) की दर से लागू है। यदि, हालांकि, एक अंतरराष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र में स्थित एक इकाई में एक गैर–कॉर्पोरेट निर्धारिती द्वारा आय उत्पन्न होती है, तो वैकल्पिक न्यूनतम कर की गणना 9 प्रतिशत (एस.सी.+एच.ई.सी.) की दर से की जाती है।

संशोधन– निर्धारण वर्ष 2023–24 से सहकारी समितियां 15 प्रतिशत (एस.सी़+एच.ई.सी.) की दर से वैकल्पिक न्यूनतम कर का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी होंगी। हालांकि, 9 प्रतिशत की वर्तमान दर (यदि किसी सहकारी समिति द्वारा अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय सेवा केंद्र में एक इकाई में आय उत्पन्न होती है) अप्रभावित रहेगी।

4. धारा 119 में संशोधन

धारा 119 (2)(ए) बोर्ड को आय के किसी भी वर्ग या मामलों के वर्ग के संबंध में सामान्य विशेष आदेश जारी करने का अधिकार देता है, जिसका पालन अन्य आयकर अधिकारियों द्वारा छूट के माध्यम से या कुछ वर्गों के प्रावधानों से संबंधित है। (जैसे धारा 115पी / 15एस / 139 / 211 / 234ए / 234बी / 234सी / 234ई / 270ए) राजस्व के निर्धाण और संग्रहण के कार्य के उचित और कुशल प्रबंधन के उद्देश्य से उसमें निर्दिष्ट है।

संशोधन – धारा 234एफ में प्रावधान है कि यदि कोई व्यक्ति धारा 139 (1) के तहत नियम तारीख के भीतर आय की विवरणी प्रस्तुत करने में विफल रहता है, तो वह 5,000 रूपये के शुल्क का भुगतान करने के लिए उत्तरदायी होगा। वर्तमान में यह खंड (ए) में स्पष्ट रूप से उल्लिखित नहीं है। धारा 234 एफ को लागू करने से उन व्यक्तियों पर शुल्क लगाने का एक अनपेक्षित परिणाम हो सकता है, निर्दिष्ट समय के भीतर आय की विवरणी दाखिल करने में वास्तविक कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है (जैसे दूरस्थ क्षेत्रों में तैनात सशस्त्र बलों के सदस्यों के पास अपेक्षित बुनियादी ढांचे तक पहुंच नहीं है। इसलिए आय रिर्टन दाखिल करने में कुछ वर्गों के व्यक्तियों द्वारा सामना की जाने वाली वास्तविक कठिनाइयों को ध्यान में रखते हुए और चूक के लिए शुल्क नहीं लगाने के लिए जो उनके नियंत्रण से बाहर है, धारा 243एफ का संदर्भ शामिल किया गया है (1 अप्रैल, 2022 से प्रभावी) धरा 119(2)(ए) में उल्लिखित अनुभागों की सूची ताकि बोर्ड को ऐसे आदेश या निर्देश जारी करने में सक्षम बनाया जा सके, जैसा उचित समझा जाए। ■

इंटरनेटः ज्ञान का सुपर हाईवे

सूचना प्रौद्योगिकी

ओम प्रकाश साह
कनिष्ठ सहायक, निगमित कार्यालय

पहले लोगों के शौक खेलना, पढ़ना, संगीत सुनना, चित्र बनाना, फोटोग्राफी इत्यादि हुआ करते थे। आजकल उनसे शौक के बारे में पूछिए तो हर दस में से सात लोगों का जवाब होगा इंटरनेट सर्फिंग और कमाल तो यह है कि इंटरनेट के माध्यम से खेलने, पढ़ने, संगीत सुनने और चित्र बनाने जैसे शौक भी पूरे किए जा सकते हैं।

यही कारण है कि इंटरनेट को कोई जादू, तो कोई विज्ञान का चमत्कार, तो कोई ज्ञान का सुपर हाई–वे कहता है। आप इसे जो भी कहिए, किन्तु इस बात में कोई सन्देह नहीं कि सूचना क्रान्ति की देन यह इंटरनेट न केवल मानव के लिए अति उपयोगी साबित हुआ, बल्कि संचार में गति एवं विविधता के माध्यम से इसने दुनिया को बिल्कुल बदलकर रख दिया है। तभी अमेरिका के लेखक डेव बैरी ने कहा है–''इंटरनेट, कॉल (टेलीफोन व मोबाइल) प्रतीक्षा के अविष्कार के बाद मानव संचार के इतिहास में सबसे महत्त्वपूर्ण एकल विकास है।''

सूचना एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक संसाधनों को साझा करने के लिए विभिन्न संचार माध्यमों से आपस में जुड़े कंप्यूटरों एवं अन्य इलेक्ट्रॉनिक उपकरणों का समूह, कंप्यूटर नेटर्वक कहलाता है और इन्हीं कंप्यूटर नेटवर्कों का विश्वस्तरीय नेटवर्क इंटरनेट है।

शीत युद्ध के दौरान वर्ष 1969 में अमेरिका के प्रतिरक्षा विभाग ने युद्ध की स्थिति में अमेरिकी सूचना संसाधनों के संरक्षण एवं आपस में सूचना को साझा करने के उद्देश्य से पहली बार कुछ कंप्यूटरों के एक नेटवर्क 'अरपानेट' की स्थापना की। इसी संकल्पना के आधार पर अन्य कंप्यूटर नेटवर्कों का निर्माण हुआ, जो आगे चलकर विश्वस्तरीय नेटवर्क इंटरनेट के रूप में रूपान्तरित हो गया।

इसमें विश्वभर के कंप्यूटर नेटवर्क एक मानक प्रोटोकॉल के माध्यम से जुड़े होते हैं। दुनिया के किसी भी व्यक्ति को इंटरनेट के स्वामी की संज्ञा नहीं दी जा सकती। इसका कोई मुख्यालय अथवा केन्द्रीय प्रबन्ध नहीं है। कोई भी व्यक्ति, जिसके पास किसी इंटरनेट सेवा प्रदाता कंपनी की इंटरनेट सुविधा है, अपने कंप्यूटर के माध्यम से इससे जुड़ सकता है। आज विश्व के कुल 7 अरब से अधिक लोगों में से लगभग 3 अरब लोग इंटरनेट से जुड़े हुए हैं। विश्व में चीन और अमेरिका के बाद इंटरनेट का प्रयोग करने वाले सर्वाधिक लोग भारत में ही है। हमारे देश में लगभग 25 करोड़ लोग इंटरनेट से जुड़े हैं। पूरे विश्व में इंटरनेट से जुड़ने वाले लोगों की संख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है।

कंप्यूटर नेटवर्क का अविष्कार सूचनाओं को साझा करने के उद्देश्य से

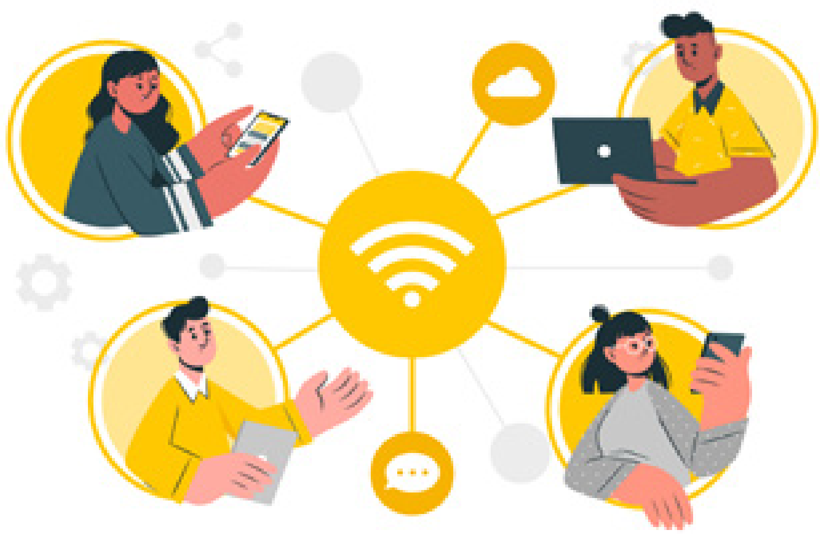

किया गया था। पहले इसके माध्यम से हर प्रकार की सूचना को साझा करना सम्भव नहीं था, किन्तु अब सूचना प्रौद्योगिकी के इस युग में दस्तावेजों एवं ध्वनि के साथ–साथ वीडियो का आदान–प्रदान करना भी सम्भव हो गया है। इंटरनेट वह जिन्न है, जो आपके सभी आदेशों का पालन करने को हमेशा तैयार रहता है।

विदेश जाने के लिए हवाई जहाज का टिकट बुक कराना हो, किसी पर्यटन स्थल पर स्थित होटल का कोई कमरा बुक कराना हो, किसी किताब का ऑर्डर देना हो, अपने व्यापार को बढ़ाने के लिए विज्ञापन देना हो, अपने मित्रों से ऑनलाइन चैटिंग करनी हो, डॉक्टरों से स्वास्थ संबंधी सलाह लेनी हो या वकीलों से कानूनी सलाह लेनी हो, इंटरनेट हर मर्ज की दवा है। इंटरनेट ने सरकार, व्यापार और शिक्षा को नए अवसर दिए हैं। सरकारें अपने प्रशासनिक कार्यों के संचालन, विभिन्न कर प्रणाली, प्रबन्धन और सूचनाओं के प्रसारण जैसे अनेकानेक कार्यों के लिए इंटरनेट का उपयोग करती हैं। कुछ वर्ष पहले तक इंटरनेट व्यापार और वाणिज्य में प्रभावी नहीं था, लेकिन आज सभी तरह के विपणन और व्यापारिक लेन–देन इसके माध्यम से संभव हैं। इंटरनेट पर आज पत्र–पत्रिकाएँ प्रकाशित हो रही हैं, रेडियो के चैनल उपलब्ध हैं और टेलीविजन के लगभग सभी चैनल भी मौजूद हैं।

इंटरनेट के माध्यम से आज शैक्षणिक पाठ्यक्रमों का संचालन किया जा सकता है। विश्व के एक छोर से दूसरे छोर पर स्थित पुस्तकालय से जुड़कर किसी विषय का विशेष ज्ञान प्राप्त किया जा सकता है। कोई भी व्यक्ति अपनी संस्था तथा उसकी गतिविधियों, विशेषताओं आदि के बारे में इंटरनेट पर अपना वेबपेज बना सकता है, जिसे करोड़ों लोग अपने इंटरनेट पर देख सकते हैं। विश्व व्यापी संजाल यानि वर्ल्ड वाइड वेब (www) वैश्विक पहुँच का सर्वोत्तम साधन सिद्ध हो रहा है। इंटरनेट सेवा प्रदाता कंपनियाँ मामूली लेकर उपभोक्ताओं को इंटरनेट सेवाएँ प्रदान करती हैं।

भारत में इंटरनेट सेवा की शुरूआत भारत संचार निगम लिमिटेड (बी.एस.एन.एल.) ने वर्ष 1995 में की थी। अब एयरटेल, रिलायंस, वोडाफोन जैसी दूरसंचार कंपनियाँ भी इंटरनेट सेवा उपलब्ध कराती हैं। पहले ई–मेल के माध्यम से दस्तावेजों एवं छवियों का आदान–प्रदान ही किया जाता था, अब ऑनलाइन बातचीत का प्रयोग लगातार बढ़ रहा है और चैटिंग के माध्यमों से हम किसी भी विषय पर बात–चीत कर सकते हैं।

इंटरनेट के माध्यम से मीडिया हाउस ध्वनि और दृश्य दोनों माध्यम के द्वारा ताजातरीन खबरें और मौसम संबंधी जानकारियाँ हम तक आसानी से पहुँच रहे हैं। नेता हो या अभिनेता, विद्यार्थी हो या शिक्षक, पाठक हो या लेखक, वैज्ञानिक हो या चिन्तक सबके लिए इंटरनेट समान रूप से उपयोगी साबित हो रहा है। अब इसके माध्यम से न केवल उच्च शिक्षा हासिल की जा सकती है, बल्कि रोजगार की प्राप्ति में भी यह सहायक साबित हो रहा है। विभिन्न प्रकार के सर्वेक्षण एवं जनमत संग्रह इंटरनेट के द्वारा भली–भाँति हो सकते हैं। इंटरनेट के इन्हीं उपयोगों को देखते हुए जॉन एलन पॉल्स ने कहा है– ''इंटरनेट दुनिया का सबसे बड़ा पुस्तकालय है, मानो जहाँ सभी पुस्तकें खुली पड़ी हों।''

इंटरनेट के कई लाभ हैं, तो इसकी कई कमियाँ भी हैं। इसके माध्यम से अनुचित सामग्रियों तक बच्चों की पहुँच आसान हो गई है। कई लोग इंटरनेट का दुरूप्योग अश्लील साइटों को देखने और सूचनाओं को चुराने में करते हैं। इससे साइबर अपराधों में वृद्धि हुई है। इंटरनेट से जुड़ते समय वायरसों द्वारा सुरक्षित फाइलों के नष्ट या संक्रमित होने का खतरा भी बना रहता है। इन वायरसों से बचने के लिए एंटी वायरस सॉफ्टवेयर का प्रयोग आवश्यक होता है। इन सबके अतिरिक्त, बहुत–से लोग इस पर अनावश्यक और गलत आँकड़े एवं तथ्य भी प्रकाशित करते रहते हैं।

अतः इस पर उपलब्ध सभी आँकड़ों एवं तथ्यों को हमेशा प्रमाणित नहीं माना जा सकता इनके इस्तमाल के समय हमें काफी सावधानी बरतने की जरूरत पड़ती है। इस तरह, इंटरनेट यदि ज्ञान का सागर है, तो इसमें 'कूड़े–कचरे' की भी कमी नहीं। यदि इसका सही इस्तेमाल करना आ जाए, तो इस सागर से ज्ञान व प्रगति के मोती हासिल होंगे और यदि गलत इस्तेमाल किया जाए तो कूड़े–कचरे के अतिरिक्त कुछ भी हाथ नहीं लगेगा। इंटरनेट पर उपलब्ध ज्ञान के सागर एवं इस माध्यम का सही ढंग से समुचित उपयोग मनुष्य की तरक्की में अहम् भूमिका निभाएगा। अतः आने वाली पीढ़ी को इसका सही इस्तेमाल सीखना अति आवश्यक है अन्यथा यह बच्चों के हाथ में धारदार तलवार साबित होगा। ■

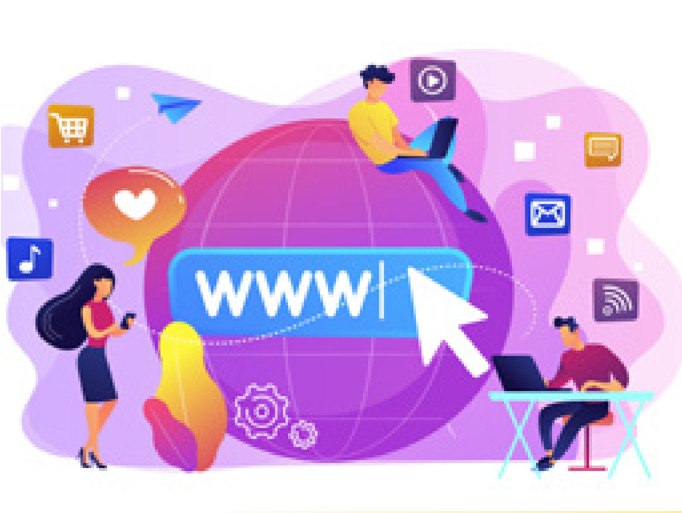

डेटा साइंस का आज के युग में महत्व

मान्सी गर्ग
प्रमुख, ए.एन.आर.ए इंस्टीट्यूट

डेटा साइंस अनुप्रयुक्त गणित और सांख्यिकी का एक क्षेत्र है जो बड़ी मात्रा में जटिल डेटा या बड़े डेटा के आधार पर उपयोगी जानकारी प्रदान करता है। डेटा विज्ञान, या डेटासंचालित विज्ञान निर्णय लेने के उद्देश्यों के लिए डेटा के दायरे की व्याख्या करने के लिए गणना की सहायता से विभिन्न क्षेत्रों के पहलुओं को जोड़ता है।

डेटा साइंस सार्थक जानकारी निकालने और भविष्य के पैटर्न और व्यवहार की भविष्यवाणी करने के लिए मशीन लर्निंग और आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस जैसी तकनीकों का उपयोग करता है। डेटा विज्ञान डेटा सेट को इकट्ठा करने, प्रसंस्करण करने और डेटा सेट से अंतदृष्टि प्राप्त करने, सेट से सार्थक डेटा निकालने और निर्णय लेने के उद्देश्यों के लिए इसकी व्याख्या करने के लिए कई विषयों के उपकरण शामिल करता है। डेटा विज्ञान क्षेत्र बनाने वाले अनुशासनात्मक क्षेत्रों में खनन, सांख्यिकी, मशीन लर्निंग, एनालिटिक्स और प्रोग्रामिंग शामिल हैं।

डेटा माइनिंग उन जटिल डेटा सेट पर एल्गोरिदम लागू करता है जो पैटर्न को प्रकट करने के लिए सेट से उपयोगी और प्रासंगिक डेटा निकालने के लिए उपयोग किए जाते हैं। सांख्यिकीय उपाय या भविष्य कहने वाला किए जाते हैं। विश्लेषक इस निकले गए डेटा का उपयोग उन घटनाओं को मापने के लिए करते हैं जो भविष्य में होने वाली घटनाओं के आधार पर होती हैं जो डेटा अतीत में हुआ था।

मशीन लर्निंग एक आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस टूल है जो बड़ी मात्रा में डेटा को प्रोसेस करता है जिसे व्यक्ति जीवन भर प्रोसेस करने में असमर्थ होगा। मशीन लर्निंग भविष्यवाणी के विश्लेषण के तहत प्रस्तुत किए गए निर्णय मॉडल को किसी घटना की संभावना से मिलान करके सही करता है जो वास्तव में एक अनुमानित समय पर हुआ था।

एनालिटिक्स का उपयोग करते हुए, डेटा विश्लेषक एल्गोरिदम का उपयोग करके मशीन लर्निंग के चरण से संरचित डेटा एकत्र और संसाधित करता है। विश्लेषक डेटा की एक समेकित भाषा में व्याख्या करता है, परिवर्तित करता है और सारांषित करता है जिसे निर्णय लेने वाली टीम समझती है। डेटा विज्ञान व्यावहारिक रूप से सभी संदर्भो पर लागू होता है और जैसे–जैसे डेटा वैज्ञानिक की भूमिका विकसित होती है, डेटा आर्किटेक्चर, डेटा इंजीनियरिंग और डेटा प्रशासन को शामिल करने के लिए क्षेत्र का विस्तार होगा।

आज के समय में हमारे पास बहुत मात्रा और बहुत प्रकार में डेटा उपलब्ध है जैसे की टेक्स्ट, ऑडियो, वीडियो और इमेज ये सब कुछ डेटा ही है हम जो भी अपने सोशल मीडिया अकाउंट, वेबसाइट पर साझा करते वो सब डेटा के ही रूप है। आज डेटा साइंस हर जगह उपयोग हो रहा है। वैसे अगर सोच तो कैसे डेटा हमारी कोई फैसला लेने में मदद करता है इसको हम एक उदाहरण से समझ सकते है। हमारा एक छातों का व्यापार है हमे यहाँ पता लगाना है कि किस महीने में कितने छाते बिकेंगें तो हमने देखा की जब बारिश ज्यादा होती है तो यहाँ जानकारी हम को पुराना डेटा देख कर पता चली। इसी तरह से जो काम पहले हम खुद करते थे। वही काम आज हमारे लिए कंप्यूटर करता है। और बहुत अच्छे से, और बहुत कम समय में करता है। लेकिन अगर हम चाहते हैं कि कंप्यूटर मेरे व्यापार के लिए कोई फैसला ले उसके लिए हम को मशीन को उसके काबिल बनाने के लिए हमारे पास जो डेटा होता है उसकी मदद से (मशीन लर्निंग) गणित की कलन विधि का उपयोग करते है। लेकिन मशीन लर्निंग लगाने से पहले किसी कोडिंग भाषा का उपयोग करके डेटा को सही करना होता है। डेटा हमारे पास बहुत जगह से आता है ओर अनिर्मित डेटा होता है उसको कुछ कोडिंग फंक्शन के द्वारा सही करना होता है डेटा वैज्ञानिक डेटा को इकट्ठा करने, समीक्षा करने, विश्लेषण करने और निष्कर्ष निकालने के लिए आंकड़ों का उपयोग करते हैं। साथ ही उचित मात्रात्मक गणितीय मॉडल लागू करते हैं।

डेटा वैज्ञानिक

एक डेटा वैज्ञानिक कंपनी के संचालन को बेहर बनाने के लिए, कई मामलों में बड़ी मात्रा में डेटा एकत्र, विश्लेषण और व्याख्या करता

है। डेटा वैज्ञानिक पेशेवर सांख्यिकीय मॉडल विकसित करते हैं जो डेटा का विश्लेषण करते हैं और डेटा सेट में पैटर्न, रूझान और संबंधों का पता लगाते हैं। इस जानकारी का उपयोग उपभोक्ता व्यवहार की भविष्यवाणी करने या व्यवसाय और परिचालन जोखिमों की पहचान करने के लिए किया जा सकता है।

डेटा वैज्ञानिक की भूमिका अक्सर एक कहानीकार की होती है जो निर्णय लेने वालों को डेटा अंर्तदृष्टि प्रस्तुत करती है जो समझने योग्य और समस्या–समाधान के लिए लागू होती है।

डेटा साइंस आज

कंपनियों उपभोक्ताओं के लिए मूल्य लाने के लिए रोजमर्रा की गतिविधियों में बड़ा डेटा और डेटाविज्ञान लागू कर रही हैं। बैंकिंग संस्थान अपनी धोखाधड़ी का पता लगाने की सफलता को बढ़ाने के लिए बड़े डेटा का उपयोग कर रहे हैं। एसेट मैनेजमेंट फर्म बड़े डेटा का उपयोग किसी सुरक्षा की कीमत के एक निश्चित समय पर ऊपर या नीचे बढ़ने की संभावना का अनुमान लगाने के लिए कर रही हैं।

नेटफ्लिक्स जैसी कंपनियां अपने उपयोगकर्ताओं को कौन से उत्पाद वितिरित करने के लिए निर्धारित करने के लिए बड़े डेटा का खनन करती हैं। नेटफ्लिक्स उपयोगकर्ताओं को उनके द्वारा देखे जाने के आधार पर वैयक्तिकृत अनुशंसाएँ बनाने के लिए एल्गोरिदम का भी उपयोग करता है। डेटा विज्ञान तेजी से विकसित हो रहा है, और इसके अनुप्रयोग भविष्य में जीवन को बदलते रहेंगे।

डेटा विज्ञान अनुप्रयोग और उदाहरण

स्वास्थ्य देखभाल : डेटा विज्ञान बीमारी की पहचान और भविष्यवाणी कर सकता है, और स्वास्थ्य संबंधी सिफारिशों को वैयक्तिकृत कर सकता है।

परिवाहन : डेटा विज्ञान वास्तविक समय में शिपिंग मार्गों को अनुकूलित कर सकता है।

खेल: डेटा विज्ञान एथलीटों के प्रदर्शन का सटीक मूल्यांकन कर सकता है।

सरकार: डेटा विज्ञान कर चोरी को रोक सकता है और कैद दरों की भविष्यवाणी कर सकता है।

ई–कॉमर्स: डेटा साइंस डिजिटल विज्ञान प्लेसमेंट को स्वचालित कर सकता है।

गेमिंग : डेटा साइंस ऑनलाइन गेमिंग एक्सपीरियंस को बेहतर बना सकता है।

सोशल मीडिया : डेटा साइंस संगत भागीदारों को इंगित करने के लिए एल्गोरिदम बना सकता है।

UberEats के डेटा वैज्ञानिकों का एक बहुत ही सरल लक्ष्य है: गर्म भोजन जल्दी से पहुँचाना। हालांकि देश भर में ऐसा करने के लिए मशीन लर्निंग, उन्नत सांख्यिकीय मॉडलिंग और स्टाफ मौसम विज्ञानी की आवश्यकता होती है। पूर्ण वितरण प्रक्रिया को अनुकूलित करने के लिए टीम को यह अनुमान लगाना होगा कि हर संभव चर, तूफान से लेकर छुट्टी की भीड़ तक, यायायात और खाना पकाने के समय को कैसे प्रभावित करेगा।

धोखाधड़ी का पता लगाना : धोखाधड़ी का पता लगाना किसी भी उद्योग का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा है। इस क्षेत्र में अक्सर डेटा साइंस और एआई का एक साथ उपयोग किया जाता है। यहां तक कि छोटी खराबी और गड़बड़ियों से भी वित्तीय नुकसान हो सकता है। रियल टाइम प्रेडिक्टिव एनालिसिस धोखाधड़ी का पता लगाने के साथ–साथ साइबर सुरक्षा को बढ़ाने में मदद करता है। डेटा साइंस की मदद से कंपनियां अपनी वित्तीय सेवाएं प्रभावी ढंग से प्रदान कर रही हैं। यह तकनीक उन्हें किसी भी गतिविधि के दौरान होने वाले संभावित धोखाधड़ी लेनदेन की पहचान करने में मदद करती है। यह किसी भी असामान्य वित्तीय गतिविधि का पता लगाने के मामले में सत्र को अवरूद्ध करने में मदद करता है।

डेटा प्रबंधन : किसी भी वित्त विशेषज्ञ के लिए भारी मात्रा में डेटा का प्रबंधन करना एक चुनौतीपूर्ण कार्य है। वह विभिन्न स्रोतों से बड़ी मात्रा में डेटा प्राप्त करता है। अधिकांश डेटा असंरचित है। डिजिटाइजिंग दस्तावेज किसी भी तरह इस मुद्दे को हल कर सकते है। लेकिन यह कुछ हद तक ही है। डेटा साइंस कुछ तकनीकों का उपयोग करके इस कच्चे डेटा से वास्तविक अंतदृष्टि निकालने की अनुमति देता है। जैसे कि डेटा माइनिंग, टेक्स्ट एनालिसिस लैंग्वेज प्रोसेसिंग आदि। यह बेहतर निर्णय लेने में मदद करता है जो बदले में अधिक लाभ और दक्षता देता है।

डेटा विज्ञान डेटा पर अध्ययन है, जो व्यापार के लिए सार्थक अंतदृष्टि निकालने में मदद करता है। यह एक बहुत–विषयक दृष्टिकोण है जो बड़ी मात्राा में डेटा का विश्लेषण करने के लिए गणित, सांख्यिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता और कंप्यूटर इंजीनियरिंग के सिद्धांतों और प्रथाओं को जोड़ता है। यह विश्लेषण डेटा वैज्ञानिकों को कंप्यूटर से सवाल पूछने और जवाब देने में मदद करता है जैसे कि क्या हुआ, क्यों हुआ, क्या होगा और परिणामों के साथ क्या किया जा सकता है। ■

कंप्यूटर और इंटरनेट में हिंदी का महत्व

सविता राव
लखनऊ विश्वविद्यालय

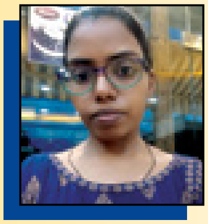

भारत की कोई आधिकारिक राष्ट्रीय भाषा नहीं है लेकिन 1987 में संशोधित नियम 1976 के अनुसार भारतीय संविधान में राजभाषा का प्रावधान है। इसमें हिन्दी के साथ अंग्रेजी को भी राजभाषा का दर्जा दिया गया है। इसके आधार पर भारतीय संसद में या तो हिन्दी या अंग्रेजी का प्रयोग सुनिश्चित किया गया है। अंग्रेजी को संसदीय कार्यवाही, न्यायतंत्र आर केंद्र तथा राज्य के बीच संचार के लिए मान्यता दी गयी है। इसमें यह भी प्रावधान हैं कि भारत के हर राज्य को स्वतंत्रता है कि वह अपनी राजभाषा का विधि पूर्वक चयन स्वयं कर सके। हालांकि राजभाषा के रूप में दो भाषाओं को मान्यता देने के बाद संविधान ने अन्य 22 क्षेत्रीय भाषाओं को अनुसूचित किया है। इन भाषाओं को अनुसूचित करने के पीछे तर्क यह है कि इन भाषाओं से संबधित राज्य अपनी भाषा में केंद्र सरकार से संबंध स्थापित कर सकते हैं। 2001 की जनगणना के अनुसार हिन्दी उत्तर भारत की सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है। लगभग 54% लोग हिन्दी को अपनी प्रथम या द्वितीय भाषा के रूप में उपयोग करते हैं और लगभग 41 प्रतिशत लोग हिन्दी का उपयोग मातृभाषा के रूप में करते हैं। यदि 2011 की जनगणना के आंकड़े देखें तो लगभग 43.63% लोग हिन्दी भाषा को अपनी प्रथम भाषा के रूप में बोलते हैं जो अब तक सबसे अधिक है और पूरे भारत में हिन्दी बोलने वाले लगभग 57.09% हैं। इस लिहाज से हिन्दी बोलने वालों की संख्या आधे से अधिक है।

हिन्दी अपनी विशेषताओं के कारण आज विश्व की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में मंदारिन (चाइनीज) और अंग्रेजी के बाद लगभग 61.5 करोड़ बोलने वालों के साथ तीसरे नंबर पर काबिज है। लेकिन जिस प्रकार से हिन्दी का वैश्वीकरण हुआ है उस लिहाज से आने वाले दिनों में यह सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा होगी। संख्यात्मक बदलाव के जरिये हम विश्व के हर कोने में हिन्दी बोलने वालों को देख भी सकते हैं।

भारत में हिन्दी एक प्रमुख भाषा है जिसका विकास समय के साथ होता जा रहा है। हिन्दी केवल आपसी संवाद का माध्यम ही नहीं है अपितु यह साहित्य की भाषा भी है। अब तो यह तकनीक की भाषा के

रूप में भी सामने आ रही है। बीता हुआ लगभग डेढ़ दशक तकनीकी रूप से हिन्दी को मजबूत बनाने के लिए जाना जाएगा। इस पूरे समय हिन्दी को तकनीकी रूप से महत्वपूर्ण भाषा बनाने के लिए तकनीकी वैज्ञानिकों, अध्यापकों, शोध–छात्रों, सरकारी, गैर–सरकारी और निजी संस्थानों ने काफी प्रयास किए हैं। इन सबके प्रयास के कारण ही आज हिन्दी ने अपनी पहचान तकनीक की दुनिया में भी बनाई है। आज जब पूरा दौर प्रौद्योगिकी की ओर शिफ्ट होता जा रहा है और सूचना क्रांति ने पूरी भाषाई दिशा ही बादल दी ऐसे में विश्वभाषा या वैश्विक (ग्लोबल) भाषा की बात करना ही तर्कसंगत होगा। क्योंकि अब पूरा विश्व ग्लोबल गाँव की तरह से कार्यान्वित है। इसमें किसी भी देश को किसी भी देश से संपर्क करने की आवश्यकता पड़ रही है। इसका प्रभाव भी यही है की अब पूरा विश्व तकनीकी के माध्यम से एक जगह एकत्रित है, जो भी सूचना चाहिए वह किसी भी भाषा में उपलब्ध हो रही है। राष्ट्रों के सांस्कृतिक, शैक्षणिक या वाणिज्यिक या चिकित्सीय संपर्क भी सूचना क्रांति के बाद आसानी से संभव हो रहे हैं।

तकनीकी भाषा को आम आदमी के नज़दीक पहुँचाने की आवश्यकता बढ़ गयी है। मुक्त बाज़ार और वैश्वीकरण के दबावों ने हिन्दी को ज़रूरत और माँग के अनुकूल ढालने में भूमिका निभाई है। विश्व में अब उसी भाषा को प्रधानता मिलेगी जिसका व्याकरण संगत होगा, जिसकी लिपि कंप्यूटर की लिपि होगी। चूँकि हिन्दी भाषा का व्याकरण वैज्ञानिक आधार पर बना है इसलिए देवनागरी लिपि कंप्यूटर यंत्र की प्रक्रिया के अनुकूल है। इसमें विश्व की किसी भी भाषा एवं ध्वनि का लिप्यांकन किया जा सकता है।

कंप्यूटर में हिन्दी की बढ़ती संभावनाओं को ध्यान में रखकर इलेक्ट्रोनिक विभाग ने भारतीय भाषाओं के लिए टेक्नॉलजी विकास नाम की परियोजनाओं के अंतर्गत कई प्रोजेक्ट भी शुरू किए हैं। इस प्रयास में आई० आई० टी कानपुर और सी–डैक (प्रगत संगणक विकास केंद्र) की भूमिका प्रमुख है। यूनिकोड इस दिशा में एक बड़ी क्रांति है। हिन्दी का यूनिकोड फॉन्ट मंगल एवं अन्य सभी भारतीय भाषाओं के फॉन्ट इनबिल्ट है। सभी को यूनिकोड समर्थित सुविधा का प्रयोग शुरू कर देना चाहिए ताकि पूरी दुनिया में हिन्दी कामकाज में एकरूपता लाई जा सके और एक कंप्यूटर से दूसरे कंप्यूटर में, दुनिया के किसी भी कोने में हमारी हिन्दी की फ़ाइल खुल जाए।

सूचना प्रौद्योगिकी के तहत मशीनी अनुवाद एवं लिप्यंतरण सहज एवं सरल हो गया है। सी–डैक, पुणे ने सरकारी कार्यालयों के लिए अँग्रेज़ी–हिन्दी में पारस्परिक कार्यालयीन सामग्री का अनुवाद करने हेतु मशीन असिस्टेड ट्रांसलेशन 'मंत्र' विकसित किया है। हिन्दी वेबसाईट के माध्यम से हिन्दी एवं देवनागरी लिपि को कंप्यूटर भाषा के रूप में विकसित करने में मदद मिल सकती है। आज वेबसाइट पर हिन्दी में इलेक्ट्रोनिक शब्दकोश उपलब्ध है। इसी तरह अंग्रेजी तथा भारतीय–भाषाओं में पारस्परिक अनुवाद प्राप्त करने की सुविधा भी उपलब्ध है। कंप्यूटर एवं इंटरनेट के सहारे शिक्षा का प्रसार तीव्र गति से होने की संभावना भी बढ़ी है। सूचना प्रौद्योगिकी में हिन्दी भाषा का प्रचलन धीरे–धीरे बढ़ रहा है। माइक्रोसॉफ़्ट, गूगल, याहू, रेडिफ आदि विदेशी कंपनियों ने अपनी वेबसाइट पर हिन्दी भाषा को स्थान दिया है।

विश्व में हो रहे अनेक प्रकार के बदलावों के कारण सामाजिक, सांस्कृतिक आदान–प्रदान काफी प्रभावित हो रहा है। भारतीय संस्कृति भी इससे अछूती नहीं रही है, अतः हिन्दी भाषा में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की सामग्री, विविध प्रकार के अन्वेषण अथवा विषयों की अभिव्यक्ति करना अनिवार्य हो गया है। जनभाषा द्वारा इन विषयों की जानकारी उपलब्ध करवा देना आवश्यक हो गया है। 1986 में भारत सरकार ने आदेश जारी किए थे कि केंद्र सरकार के सभी कार्यालयों और उपक्रमों में सभी प्रकार के यांत्रिक और इलेक्ट्रानिक उपकरण द्विभाषिक रूप में खरीदे जाएँ। मानसिक तथा तकनीकी अज्ञान के कारण इसमें तब गति नहीं आई थी, परंतु अब काफी परिवर्तन हुए हैं। आधुनिक प्रौद्योगिकी के विकास में कंप्यूटर का विकास युगांतरकारी घटना मानी जाती है। अमेरिकन विद्वान रिक ब्रिग्ज के अनुसार कंप्यूटर प्रोग्राम की सबसे वैज्ञानिक भाषा संस्कृत है, अतः देवनागरी में संगणकीय काम कठिन नहीं रहा। 1965 के बाद ही हिन्दी सॉफ़्टवेयर बनाए गए। फिर यह काम आसान हो गया।

आज विंडोज़ प्लेटफ़ॉर्म में काम करने वाले अनेक हिन्दी सॉफ़्टवेयर मार्केट में उपलब्ध हैं, जैसे, सी–डैक का अक्षर फॉर विंडोज, सुविंडोज़ और आकृति माइक्रोसॉफ़्ट ऑफिस, हिन्दी में स्क्रीन का समस्त परिवेश जैसे कमान, संदेश, फ़ाइल नाम आदि भी हिन्दी में उपलब्ध हैं। सभी भारतीय भाषाओं के की–बोर्ड भी उपलब्ध है, जिन्हें डाऊनलोड किया जा सकता है। हिन्दी तथा भारतीय भाषाओं का कार्य विंडोज–7, लिनक्स, विस्टा, एक्सपी जैसे ऑपरेटिंग सिस्टम में बहुत ही आसानी से किया जा सकता है। कंप्यूटर के आंतरिक कार्यों को सम्पन्न करने के लिए आवश्यक प्रोग्राम को परिचालन प्रणाली कहा जाता है। परिचालन प्रणाली विविध प्रकार के क्रमादेशों या प्रोग्रामों का संग्रह है। यह एक साथ प्रणाली के रूप में कार्य करता है। भाषा अनुवादित्र, डिस्क परिचालन प्रणाली, पाठ संपादन के माध्यम से यह प्रणाली कार्य करती है। स्पष्ट है कि डॉस, विंडोज, यूनिक्स, लिनक्स, मैक आदि सभी परिचालन प्रणाली में भारतीय भाषाओं के संसाधन की सुविधा मौजूद है। पुणे के सी–डैक ने इस दिशा में काफी काम

किया है। डॉस परिवेश वातावरण के अंतर्गत भारत सरकार की अनेक संस्थाओं ने शब्द संसाधन के अनेक पैकेज विकसित किए हैं जैसे एएलपी मल्टीवर्ड, शब्द रत्न, शब्दमाला, अक्षर, बाइस्क्रिप्ट, आदि। डाटा संसाधन का कार्य हिन्दी में करने के लिए सी–डैक ने जिस्ट कार्ड, आर.के. कंप्यूटर से सुलिपि और सॉफ्टबेस कंपनी ने देवबेस विकसित किया है। सुलिपि और देवबेस में केवल हिन्दी को समाहित किया है और जिस्ट कार्ड में भारतीय भाषाओं की भी भाषाओं के साथ साथ दक्षिण पूर्व एशिया और यूरोप की कुछ लिपियों को भी लिया गया है। उर्दू भाषाओं को भी। ये सभी सॉफ्टवेयर्स आईबीएम पीसी के लिए योग्य है। आईबीएम, टाटा कंपनी ने आर. के. कम्प्यूटर्स की मदद से हिन्दी डॉस नाम से एक ऐसी परिचालन प्रणाली का विकास किया है जिसके अंतर्गत कमांड और मैन्यू भी हिन्दी में दिये गए है। फाइल का नाम भी हिन्दी में दिया जा सकता है। सी– डैक के यूनिक्स परिवेश में शब्द संसाधन में स्पैलचेकर आदि सुविधाएँ मौजूद हैं। आज आम आदमी के लिए सर्वाधिक मैत्रीपूर्ण प्लेटफॉर्म है– विण्डोज़। इस प्लेटफॉर्म पर भारतीय भाषाओं में विभिन्न प्रकार के इंटरफेस विकसित किए गए हैं। प्रमुख है – लीप ऑफिस, सुविण्डोज़, आकृति ऑफिस आदि। एमएस ऑफिस में समाविष्ट सभी सॉफ्टवेयर्स में विभिन्न भारतीय लिपियों में फोंट, एमएस ऑफिस के साथ ही देने लगे हैं। लगभग सभी कंपनियों ने हिन्दी के साथ भारतीय भाषाओं को भाषा प्रौद्योगिकी के रूप में अपनी परिचालन प्रणालियों में समाहित किया है। भारतीय भाषाओं में कंप्यूटर प्रौद्योगिकी, भाषा प्रौद्योगिकी के विकास के कारण जटिल से जटिल अनुप्रयोगों में हिन्दी और भारतीय भाषाओं का व्यापक रूप से प्रयोग हो रहा है। रेल अथवा हवाई यात्रा आरक्षण व्यवस्था एक विशेष प्रौद्योगिकी के माध्यम से हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में सुलभ करवा दी गई है। चुनाव के लिए करोड़ों मतदाताओं की सूचियाँ संगणक के माध्यम से हिन्दी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में तैयार की गई है। इसी प्रकार परीक्षा के नतीजे, बिजली की रसीदें आदि भी। अब प्रत्येक भारतीय प्रादेशिक भाषा में जमीन से संबंधित रिकॉर्ड भी तैयार करना संभव हुआ है।

आज इंटरनेट पर हर कोई ब्लाग, फ़ेसबुक, वाट्सअप, गूगल, इन्स्टाग्राम, ट्विटर, ईमेल, लिंक्डइन, मैसेंजर आदि माध्यमों से परस्पर संपर्क में रह सकता है। फ़ेसबुक और इस पर भाषाई बढ़ा न होने के कारण बहुत से लोगों की दोस्ती ऐसे लोगों से संभव हो पाई जिनके नाम भी नहीं सुने थे। यूट्यूब पर भूली बिसरी फ़िल्में और हर विषय के वीडियो देखे जा सकता हैं। गूगल के नक्शे अब हिंदी में मिलने लगे हैं। विशेषज्ञों का कहना है कि इंटरनैट पर हिंदी सामग्री हर साल 95 प्रतिशत बढ़ रही है।

वर्तमान समय में मोबाइल फोन ने लैंडलाइन फोन का स्थान ले लिया है। मोबाइल फोन पर हिंदी समर्थन हेतु निरंतर कार्य चल रहा है। कई मोबाइल कंपनियाँ– सोनी, नोकिया, सैमसंग आदि हिंदी टंकण, हिंदी वाइस सर्च व हिंदी भाषा में इंटरफेस की सुविधा प्रदान कर रही है। इसके साथ ही आज आइ पैड पर हिंदी लिखने की सुविधा उपलब्ध है। अंग्रेज़ी के साथ–साथ आज हिंदी भाषा का भी नेटवर्क़ पूरे विश्व में फैलता जा रहा है। जागरण, वेब दुनिया, नवभारत टाइमस, विकिपिडिया हिंदी, भारत कोष, कविता कोष, गद्य कोष, हिंदी नेक्स्ट डॉट कॉम, हिंदी समय डॉट कॉम, आदि इंटरनेट साइटों पर हिंदी सामग्री देखी जा सकती है। आज विज्ञापन से संबंधित एसएमएस से खाता–शेष तक हिंदी तथा क्षेत्रीय भाषाओं में प्राप्त किया जा सकता है।

आज चारों तरफ 'डिजिटल भारत' की बात हो रही है। प्रत्येक इंसान तक इन्टरनेट को पहुंचाने की चाहत रखने वाले महज 30 वर्षीय व्यक्ति व सोशल नेटवर्किंग साइट फेसबुक के संस्थापक मार्क जुकरबर्ग के एजेंडे में भी गाँवों को डिजिटल दुनिया से जोड़ना प्रमुखता पा रहा है। हाल ही में (9–10 अक्टूबर 2014) दिल्ली में आयोजित 'इंटरनेट ओआरजी समिट' में उन्होंने कहा, "फेसबुक अपने कंटेंट को क्षेत्रीय भाषाओं में देने पर फोकस कर रहा है"। यह ध्यातव्य है कि एक बिलियन यूजर्स में से फेसबुक के दूसरे सबसे बड़े मार्केट भारत है जहाँ करीब 108 मिलियन एफ़बी यूजर्स हैं। मार्क जुकरबर्ग ने इस समिट में 'कनेक्टिंग द अनकनेक्टेड' अर्थात् 'वैसे लोगों को इंटरनेट से जोड़ना जो इससे दूर तथा अनभिज्ञ हैं' जैसा उद्देश्य रखते हुए पूरे समाज के लिए टेक्नोलॉजी की जरूरत बताई। यहाँ भी तकनीकी विकास में भाषायी एकता दिखती है। जब विभिन्न गाँव डिजिटल दुनिया से जुड़ेंगे तो वैश्विक व भारतीय परिक्षेत्र में विभिन्न गाँवों की विभिन्न भाषाएँ भी तकनीकी का हिस्सा होंगी और उनके बीच संप्रेषणीय आदान–प्रदान होगा जिसमें हम भाषायी एकता देख सकेंगे।

निजी सैटेलाइट टीवी चौनलों के प्रसार ने भाषाई एकता को समृद्ध करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इनके फ्री–टु–एयर से डिश कनेक्श्न और उसके बाद डाइरेक्ट टु होम तक के तकनीकी विकास ने जनता को उनकी भाषा में मनोरंजन व ज्ञान की पहुंच सुनिश्चित की है। यही बात रेडियो के निजी एफ़एम चैनलों के प्रसार एवं संचालन के साथ भी लागू होती है। आज भारत में 800 से ज्यादा टीवी चौनल और 250 तक एफ़एम चैनल उपलब्ध हैं। साथ ही ई समाचार–पत्रों के चलन ने पत्रकारिता को एक नया स्वरूप दिया है। आज अपनी मातृभाषा में समाचार–पत्र पढ़ने के लिए उस क्षेत्र विशेष में अनिवार्यतः उपस्थित रहना आवश्यक नहीं रहा। लगभग सभी प्रमुख समाचार–पत्रों

के ई–संस्करण इंटरनेट पर उपलब्ध हैं। इनके अतिरिक्त हिंदी तथा अन्य भारतीय भाषाओं में ई–बुक्स, ई–मैगजीन, ई–कॉमिक्स आदि का प्रसार भी काफी तेज गति से हो रहा है।

भारतीय भाषाओं के लिए प्रौद्योगिकी विकास (टीडीआईएल) कार्यक्रम के तहत इलेक्ट्रॉनिक्स और सूचना प्रौद्योगिकी मंत्रालय ने सूचना और संचार (आईसीटी) उपकरणों पर हिंदी उपयोग के लिए आधुनिक तकनीक विकसित की है। हिंदी के लिए टेक्स्ट टू स्पीच (टीटीएस) संश्लेषण प्रणाली सहित कई प्रकार के फॉन्ट, स्थानीयकृत लिब्रे ऑफिस, फायरफॉक्स ब्राउज़र और अन्य ओपन–सोर्स सॉफ़्टवेयर टूल वाली भाषा सीडी विकसित की गई है। अंग्रेजी से हिंदी मशीनी अनुवाद, हिंदी प्रोसेसिंग टूल्स, हिन्दी ई–लर्निंग टूल्स और हिंदी ऑप्टिकल कैरेक्टर रिकग्निशन सिस्टम के लिए काम चल भी रहा है। हिन्दी ने अपने आपको इस तरह तैयार कर लिया है की आज तकनीक में उसका उपयोग भली–भांति किया जा रहा है। इसने मनुष्य और मशीन के बीच भाषाई बाधा को समाप्त करके मशीन के उपयोग को अत्यधिक सरल बना दिया है।

माइक्रोसॉफ्ट ने स्थानीय भाषा कंप्यूटिंग की दिशा में वर्ष 2000 में शुरू किया था। उसने विंडोज ऑपरेटिंग सिस्टम में हिंदी भाषा को जोड़ा। इसके बाद माइक्रोसॉफ्ट ऑफिस 2003 लॉन्च किया जिसमें हिन्दी भाषा को पूर्ण रूप से जोड़ दिया गया।। वर्तमान में, लैंग्वेज इंटरफेस पैक्स (एलआईपी) अन्य भारतीय भाषाओं के अलावा विंडोज और ऑफिस दोनों के लिए हिंदी में भी उपलब्ध हैं।

इसके अलावा मशीन अनुवाद की दिशा में गूगल ने अन्य भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त हिन्दी के लिए अद्वितीय कार्य किया है। मशीन अनुवाद के क्षेत्र में हिन्दी ने काफी उन्नति की है। गूगल के मशीन अनुवाद सिस्टम ने हिन्दी से अन्य भारतीय भाषाओं और विश्व की अन्य भाषाओं में तथा भारतीय और विश्व की भाषाओं से हिन्दी में अनुवाद की प्रणाली विकसित कर चुका है जिसे दिन–ब–दिन अपग्रेड किया जा रहा है। इसके परिणाम बहुत अच्छे देखने को मिल रहे हैं। इसने भाषा के अवरोध को काफी हद तक कम कर दिया है। गूगल असिस्टेंट पर हिंदी दुनिया भर में दूसरी सबसे अधिक इस्तेमाल की जाने वाली भाषा के रूप में उभरी है। ये अपने उत्पादों जैसे सर्च, लेंस और अन्य में इंडिक भाषाओं के विकास पर काम कर रही है और जल्द ही Google Assistant को सभी एंड्रॉइड टीवी पर हिंदी में उपलब्ध कराएगी। गूगल के ही 'बोलो' मोबाइल एप्लिकेशन ने बच्चों को इंटरैक्टिव तरीके से हिंदी सीखने में मदद की है। अमेज़ॅन द्वारा 'एलेक्सा' को विभिन्न स्थानीय भाषाओं और हिन्दी में इंटरैक्ट करने के लिए का विकसित किया जा रहा है। इसके माध्यम से मशीन और मानव का संवाद काफी हद तक सरल हो जाएगा। भाषा प्रौद्योगिकी जनमानस तक अपनी अपनी प्रादेशिक भाषा में पहुँचे और सिर्फ हिन्दी ही नहीं बल्कि सभी भारतीय भाषाओं में नवीन टेक्नोलॉजी से काम करना आसान हो जाए। ■

आदमी की निगाह में औरत : एक विश्लेषण

महिला सशक्तिकरण

डॉ0 पूनम कुमारी
एसोसिएट प्रोफेसर हिन्दी विभाग, एस बी. कॉलेज, आरा
(वीर कुँवर सिंह विश्वविद्यालय)

बीसवीं शताब्दी का उत्तरार्द्ध नारी विमर्श का उत्कर्ष काल रहा है। स्वतंत्रता के बाद नारी–शिक्षा ने स्त्रियों में सामाजिक एवं राजनीतिक चेतना को जाग्रत किया है। राजनीतिज्ञों, लेखकों एवं लेखिकाओं ने दलित–विमर्श, आदिवासी–विमर्श की तरह ही नारी–विमर्श की पहल की है।

गत शताब्दी के अंतिम दो दशकों में यह नारी आन्दोलन का विमर्श बड़ी तेजी से राजनीतिक, सामाजिक और सांस्कृतिक रूप में सक्रिय हुआ है। बिंदास लेखिकाओं ने नारी–विमर्श को प्राथमिकता दी है। तो दूसरी ओर पुरूष लेखकों ने भी नारी सशक्तिकरण के प्रति अपनी अवधारणाएं व्यक्त की हैं।

ऐसे लेखकों में राजेन्द्र यादव का नाम पहली पंक्ति के अग्रिम चिन्तक, कथाकार, समीक्षक और सम्पादक के रूप में लिया जाता है। स्वयं हिन्दी की ख्यात कथाकार मन्नू भंडारी से प्रेम विवाह कर उन्होंने पारम्परिक वैवाहिक रीति का अतिक्रमण किया। नारी–विषयक अनेक विवादास्पद लेखों के द्वारा उन्होंने जितना खुलापन 'प्रेम' के प्रति दिखलाया है, वह उनके दबंग व्यक्तित्व, गम्भीर अध्ययन, अभिनव जीवन दर्शन तथा निर्भीक अभिव्यक्ति के उदाहरण हैं।

'आदमी की निगाह में औरत' नारी विमर्श की एक गंभीर तथा विश्लेषणात्मक पुस्तक है। इसका प्रकाशन राजकमल प्रकाशन प्रा.लि. नई दिल्ली–110002 ने सन् 2001 ई. में किया है। इसमें चार दशकों की अवधि में लिखे गए और विभिन्न हिन्दी पत्रिकाओं में प्रकाशित चौदह नारी–विषयक निबंधों को संकलित किया गया है। 'मेरी तेरी उसकी बात' शीर्षक के तहत अलग–अलग निबंधों के अलग–अलग विषय दिये गए हैं। पुस्तक का दूसरा खण्ड समीक्षात्मक आलेख से संबंधित है।

इस पुस्तक के संबंध में स्वयं लेखक राजेन्द्र यादव का कथन उदाहरणीय हैः–"स्त्री हमारा अंश और विस्तार है। वह हमारी ऐसी जन्मभूमि है जिसे हमने अपना उपनिवेश बना लिया है। हमारी सोच और संस्कृति के सारे सामन्ती ओर साम्राज्यवादी मूल्य उपनिवेशों के आधिपत्य ओर शोषण को जायज ठहराने की मानसिकता से पैदा होते हैं।

बीसवीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में दुनिया भर में जो उपनिवेष भी है। दलित हमारे घरों ओर बस्तियों से बाहर होता है। स्त्री हमारे भीतर है इसलिए उसका संघर्ष ज्यादा जटिल है।

उनकी मुक्ति स्वयं हमारी मुक्ति है। यानी गुलाम बनाये रखने वाली मानसिक गुलामी से मुक्ति। जाहिर है, न सारी बातें मेरी अपनी हैं, न उन्हें मैं पहली बार कह रहा हूँ। विचारों की दुनिया में नितान्त मौलिक कुछ नहीं होता। जाने अनजाने विचारों का समाहार होता है जिसे हम अपनी तरतीब देते है।"

'अतीत होती सदी और स्त्री का भविष्य' दो खण्डों में तथा औरतः उत्तरकथा' जैसी स्त्री–विषयक कृतियों से गुजरते हुए 'आदमी की निगाह में औरत' का प्रकाशन जब सन् 2001 ई. में हुआ, तो पिछले अनेक दशकों से चल रहे नारी–विमर्श को समझने के लिए यह पुस्तक एक अनिवार्य पठनीय पंस्तकों के रूप में पाठकों के लिए मान्य हुई है।

समीक्षित पुस्तक में राजेन्द्र यादव के नारी विषयक संचित ज्ञान तथा स्पष्ट अभिव्यंजन ने उन तमाम 'नारीवादी

आन्दोलन' को अपने लेखन से तीव्र करने वाली लेखिकाओं के आरोपों का खंडन कर दिया, कि 'नारी की मुक्ति' के लिए पुरूष–लेखक का लेखन अनुमान आधारित हैं, अनुभूत हैं, अनुभूत नहीं हैं। जैसा आरोप दलित–विमर्श, के दलित लेखकों का है कि गैर–दलित लेखकों के लेखन में सहानुभूति है, स्वानुभूति नहीं है।

राजेन्द्र यादव ने आदमी की निगाह में औरत' में जिन बिन्दुओं की ओर इशारा किया है उसका संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत है। राजेन्द्र यादव ने तीन पुरूष–लेखकों की निगाहों को उद्धृत किया है।

"जगत–घट को विष से कर पूर्ण
किया जिन हाथों ने तैयार,
लगाया उसके मुख पर, नारि,
तुम्हारे अधरों का मधु सार,
नहीं तो कब का देता तोड़
पुरुष–विष–घट यह ठोकर मार,
इसी मधु को लेने को स्वाद
हलाहल पी जाता संसार!।"

(हरिवंश राय बच्चन)

यानी स्त्री 'विष–घट' को 'मधु के स्वाद से आप्लावित कर देती है और पुरूष उसी स्वाद के कारण हलाहल का पान कर लेता है। वह भोग्या है, जो 'अभोग्य' को भी भोग्य बनाती है।

द्वितीय दृष्टिः

''एक बार जरथुस्त्र एक बुढ़िया से पूछता है–''बताओ, स्त्री के बारे में सच्चाई क्या है?'' वह कहती है– ''बहुत –सी सच्चाईयाँ ऐसी हैं, जिनके बारे में चुप रहना ही बेहतर है। हाँ अगर तुम औरत के पास जा रहे हो तो अपना कोड़ा साथ ले जाना मत भूलना।''

आशयः एक स्त्री (बुढ़िया) की निगाह में भी औरत अत्यन्त ही मायाविनी तथा रहस्यमयी होती है। उसकी अनेक सच्चाइयों को नहीं जाना जा सकता है। भारतीय निगाहों में एक नीति–कथन है–''त्रिया चरित्र, पुरूषस्य भाग्यं, देवो न जानाति, कुतः मनुष्यं।'' यानी, स्त्री का चरित्र और पुरूष के भाग्य को जब देवता नहीं जानते हैं, तो मनुष्य क्या जानेगा? बुढ़िया पुरूष को स्त्री के पास कोड़ा लेकर जाने के लिए कहती है। तुलसीदास ने इसे ही 'ताड़न का अधिकारी' कहा है।

तृतीय दृष्टि :

सहस्त्राब्दियों से पुरूषों की निगाहों में स्त्रियों का ऐसा ही दृष्टिकोण रहा है। नारी का शारीरिक सौन्दर्य भले ही पुरूष के स्नायुतंत्र को भोग–सुख देता है। लेकिन अन्ततोगत्वा उसकी शारीरिक संरचना को आवेश में भले ही पुरूष ''सुन्दर' मानकर भोगता है परन्तु वहाँ असौन्दर्य रहता है। कला के क्षेत्र में अद्यावधि ऐसी नारी महत्वपूर्ण नहीं हुई है जिसने विश्व को विश्वसनीय तथा मौलिक कृतियों से स्थायी लाभ पहुँचाने का काम किया है।

राजेन्द्र यादव के दृष्टिकोण में, पुरूष को हम सम्पूर्णता में देखते हैं। उसकी कमियों और कमजोरियों के साथ उसका मूल्यांकन करते हैं किन्तु नारी को हम सम्पूर्णता में नहीं देख पाते। कमर से ऊपर नारी महिमामयी है, करूणामयी है, सुन्दरता और शील की देवी है, वह कविता है, संगीत है, अध्यात्मक और अमूर्त्त है। कमर से नीचे वह काम कन्दरा है, कुत्सित और अश्लील है हवंसकारिणी है और सब मिलकर नरक है।

नारी के प्रति पुरूष की समस्त धारणा दो मूलभूत तत्त्वों से बनी है भय और घृणा। इसलिए पुरूष हमेशा से नारी की स्वतंत्र सत्ता से डरता रहा है। अपनी अखंडता और सम्पूर्णता में नारी दुर्जेय और अजेय है। अस्तु, आदमी (पुरूष) ने हमेशा प्रयत्न किया है कि नारी को परतंत्र और निष्क्रिय बनाया जा सके।

पुरूष ने स्त्री के खून में यह भावना, संस्कार की तरह कूट–कूटकर भर दी है कि औरत सिर्फ औरत है और शरीर है। 'हेनरी मिलर' ने औरत को सिर्फ 'कष्ट' कहा तथा पंत ने 'योनि' मात्र रह गयी मानवी कहा है।

भारत में उन्नीसवी शताब्दी के उत्तरार्द्ध तक नारी को प्रायः विघटनकारी या नेगेटिव चरित्र के रूप माना गया। यशपाल के प्रसिद्ध उपन्यास 'दिव्या' की कथा सिद्ध करती है कि नारी को अगर स्वतंत्र होना है, तो वेश्या बनने के सिवा कोई रास्ता नहीं है, अन्यथा उसकी लगाम पिता, पति और पुत्र के हाथ में है।

राजेन्द्र यादव का मानना है कि सामन्ती समाज ने स्त्री को सिर्फ तीन नाम दिये हैं– पत्नी, रखैल या वेश्या। जब औरत को पुरूष संरक्षण यानि रोटी, कपड़ा और मकान देने के साथ अपना नाम देकर सामाजिक स्वीकृति देता है, तो उसे मानता है पत्नी। लेकिन, जब संरक्षण देकर अपना नाम नहीं देता तब उसे मानता है रखैल। जहाँ वह न तो संरक्षण देता है और न सामाजिक स्वीकृति, तब नारी वेश्या होती है।

राजेन्द्र यादव ने इस पुस्तक में कुछ नारी–मुक्ति प्रसंगों के उदाहरण देकर पुरूष–वर्चस्व के समानान्तर स्त्री–जागरण को इंगित किया है यथा, औरतों को तैंतीस प्रतिशत आरक्षण देने के मुद्दा ने सभी प्रबुद्ध महिलाओं, राजनीतिक दलों की नेत्रियों सवर्णों, हरिजनों, पूँजीपतियों निर्धनों तथा विभिन्न धर्मों की अनुयायी महिलाओं को एकजुट कर दिया है। इस जागरण की पृष्ठभूमि इन्दिरा गाँधी का श्रेय सर्वाधिक है जिन्होंने भारतीय समाज और राजनीति में पुरूष वर्चस्व को एक तरह से पराजित किया और अपनी मुखर दबंगता एवं, राजनीतिक व्यक्तित्व से समकालीन स्त्री समाज का नेतृत्व किया। 'झांसी की रानी और अहिल्याबाई के बाद इन्दिरा गाँधी ही जागरण की प्रस्थान–बिन्दु है, जहाँ से राजनीति में ज्यादा और सामाजिक व्यवस्था में न्यून गति से

आधुनिक महिलाओं ने अपने अस्तित्व की पहचान–यात्रा प्रारंभ की है– गीता मुखर्जी, मालिनी भट्टाचार्य, ममता बनर्जी, जयललिता, मायावती, सुभाषिनी अली, मेधा पाटकर, उमा भारती, सुषमा स्वराज, साध्वी ऋतम्भरा, फूलन देवी, सोनिया गाँधी, वृंदा करात, लवली आनन्द, मेनका गाँधी, शबाना आज़मी, मधुकिश्वर, सरला माहेश्वरी, राजेन्द्र कुमारी वाजपेयी, शीला कौल, हेमा मालिनी, जया बच्चन तथा स्मृति ईरानी आदि शताधिक महिलाएँ हैं, जो सारी दूरियों और अन्तर्विरोधों के बावजूद जो इन महिलाओं में कामन एक तरह का है, वह इन सबका पुरूष सत्तात्मक समाज में 'औरत होने की सजा' भुगतने का अनुभव है–ठीक जन्मजात दलित होने की यातना भोगने वालों की तरह और यही उन्हें आरक्षण के लिए एकजुट करता है।

राजेन्द्र यादव ने इंगित किया है कि यह कैसी बिडम्बना है हमारे समाज की जो समाज स्त्री को देवी, अद्याशक्ति, भूमि, माँ, जगतजननी और न जाने क्या–क्या कहकर दिन–रात ऋचाएँ और श्लोक भोंकता है, अर्द्धनारीश्वर की उदात्त परिकल्पना में नारी–पुरूष की बराबरी का ढोल पीटता है और जिन्दा औरत को भून कर खा जाने की छूट चाहता है। जो औरत को जिन्दा रखने को नहीं, मार डालने को अपना धार्मिक और सांस्कृतिक अधिकार घोषित करता है।

हालाँकि सारी दुनिया में विशेष दक्षिण एशिया में कुछ महिलाएँ शीर्ष पर पहुँची गोल्डा मायर, मारगेट थेचर, इन्दिरा गाँधी, बेनजीर, भुट्टो, खालिदा जिया, चन्द्रिका कुमार तुंगे, मगर वहाँ तक पहुँचने में उन्हें सबसे पहले अपना स्त्री न होना ही सिद्ध करना पड़ा उनके शीर्ष पर होने ने स्त्री–उभार को बहुत बल दिया।

शायद उन्हीं की पृष्ठभूमि है कि आज चमत्कार की तरह अनेक क्षितिजों पर स्त्री अपनी शर्तों पर खड़ी दिखाई देती है। लेखिका अरूंधति राय तथा तसलीमा नसरीन आदि पुरूष–वर्चस्व की सबसे खूँखार सत्ताओं के खिलाफ खड़ी हैं। कृष्णा सोवती, मन्नू भंडारी, प्रभा खेतान, मैत्रीयी पुष्पा, क्षमा शर्मा, मृदुल गर्ग आदि दर्जनों समकालीन लेखिकाएं कलम की नोक से पुरूष के शोषण के अभेद्य दुर्ग को छेद रही हैं।

सामाजिक परिर्वतन की जरूरत को शिद्दत से महसूस करते हुए जिस प्रकार प्रेमचंद और यशपाल ने स्त्री पक्ष में उसकी पुरूष–निभर्रता, उसके कद को छोटा करने वाली सामाजिक रूढ़ियों परम्पराओं, उसे विस्थापित रखने वाली धार्मिक प्रथाओं, अन्धविश्वासों तथा उसके दैहिक शोषण की आचार संहिताओं पर प्रहार करने के अपने लक्ष्य को कभी शिथिल नहीं होने दिया ठीक उसी प्रकार राजेन्द्र यादव ने भी यथासंभव इस लक्ष्य को साधा था। डॉ0 नामवर सिंह जैसा विद्वान समीक्षक, शताब्दी के मशहूर लेखक के समक्ष भी राजेन्द्र यादव पूरे साहस विश्वास तथा अपनी साहित्यिक अह्र्ता के साथ खड़े होते थे। अनेक विरोधाभासों, अंतर्विरोधों तथा प्रवादों में रहकर भी उन्होंने अपना पंथ नहीं बदला। यह सही है कि ''आदमी की निगाह में औरत'' नारी विमर्श की गंभीर और विशेषणात्मक पुस्तक है। इसके चौदह निबंधों में, जो प्रायः हंस की भूमिकाएं है तथा अन्य उनके नारी–विषेयक विमर्श तथा समीक्षात्मक आलेख हैं। कहा जा सकता है कि उन्होंने 'हंस' के द्वारा अनेक महिला–लेखिकाओं को साहित्य–क्षितिज पर अवतरित होने का अवसर दिया है और अपने चरित्र की शुचिता को दांव पर लगाया है लेकिन बिना किसी झिझक के उन्होंनें अपने 'लेखन' तथा 'वक्तव्य शक्ति' से सबको निस्तेज किया है। ■

हार्दिक बधाई!

हिल (इंडिया) लिमिटेड के पंजाब में स्थित बठिंडा यूनिट में कार्यरत श्री अशोक कुमार, मुख्य औषधयोजक की सुपुत्री सुश्री आयुषी ने 100% दृष्टिबाधित दिव्यांग होते हुए भी भारत की सिविल सेवा परीक्षा 2021 में 48वां अंक प्राप्त कर अपने परिवार के साथ–साथ हिल परिवार के सदस्यों को भी गौरवांवित किया है। इनकी सफलता का श्रेय इनकी कड़ी मेहनत के साथ–साथ इनके माता–पिता, भाई, दोस्त एवं शिक्षकों को जाता है।

इनकी इस उपलब्धि के लिए हिल परिवार की ओर से हार्दिक बधाई।

आधुनिक नारी

नीतू चौधरी
लेखा प्रबन्धक, स्टनिंग डेंटिस्ट्री
धर्मपत्नी श्री मनोज कुमार चौधरी
उप प्रबंधक (सतर्कता), निगमित कार्यालय

आज के वर्तमान समाज में महिलायें विकास एवं तरक्की में महत्वपूर्ण भूमिका निभा रही है। उनके बिना विकसित और समृद्ध समाज की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

नारी को ही बच्चों का पथ प्रदर्शक और पहला गुरु माना गया है। नारी ही शिशु के संस्कार और शिक्षा के लिए उत्तरदायी है। जहाँ एक तरफ नारी अपने घर परिवार को एकता के सूत्र में बांधने की अहम भूमिका निभाती है तो वहीं दूसरी तरफ नारी बच्चों को एक आदर्श और अच्छा इंसान बनने की शिक्षा प्रदान करती है।

यही नहीं ब्रिघम यंग के द्वारा एक प्रसिद्ध कहावत है की 'अगर आप एक आदमी को शिक्षित कर रहे है तो आप सिर्फ एक आदमी को शिक्षित कर रहे है पर अगर आप एक महिला को शिक्षित कर रहे है तो आप आने वाली पूरी पीढ़ी को शिक्षित कर रहे है'। समाज के विकास के लिए यह बेहद जरुरी है की लड़कियों को शिक्षा में किसी तरह की कमी न आने दे क्योंकि उन्हें ही आने वाले समय में लड़कों के साथ समाज को एक नई दिशा देनी है। ब्रिघम यंग की बात को अगर सच माना जाए तो उस हिसाब से अगर कोई आदमी शिक्षित होगा तो वह सिर्फ अपना विकास कर पायेगा पर वहीं अगर कोई महिला सही शिक्षा हासिल करती है तो वह अपने साथ–साथ पूरे समाज को बदलने की ताकत रखती है।

हमारी वेदो मे उल्लेखित है एक श्लोक सर्वविदित है। "यत्र पूज्यन्ते नार्यस्तु, तत्र रमन्ते देवताः" अर्थात जहाँ नारी का सम्मान होता है देवता भी वहीं प्रसन्न होकर निवास करते हैं।

महिलाओं के बिना मनुष्य के जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती। भारत की लगभग आधी जनसंख्या का प्रतिनिधित्व महिलाएं करती है। अगर महिलाएं ही पढ़ी लिखी नहीं होगी तो वह कोई भी देश कभी प्रगति नहीं कर पाएगा। हमें यह बात समझनी होगी की अगर एक महिला अनपढ़ होते हुए भी घर इतना अच्छा संभाल लेती है तो पढ़ी लिखी महिला समाज और देश को कितनी अच्छी तरह से संभाल लेगी।

महिलाएं परिवार बनाती है, परिवार घर बनाता है, घर समाज बनाता है और समाज ही देश बनाता है। इसका सीधा–सीधा अर्थ यही है की महिला का योगदान हर जगह है। महिला की क्षमता को नज़रअंदाज करके समाज की कल्पना करना व्यर्थ है। शिक्षा और महिला सशक्तिकरण के बिना परिवार, समाज और देश का विकास नहीं हो सकता।

हमारे देश मे पहले महिलाओं की दशा दासियों से भी बदतर थी। अगर कोई महिला लड़की को जन्म देती तो उसे या तो मार दिया जाता था। लड़की को जन्म देना पाप माना जाता था। उनसे सिर्फ यही अपेक्षा की जाती थी कि वे लड़के को ही जन्म दे। पर बदलते वक्त के साथ हालात बदलते गए। अब लोग पहले से ज्यादा जागरूक है और महिलाओं कि मदद करने के लिए आगे आने लगे है। अभी भी इस दिशा में बहुत कुछ किया जाना बाकी है।

नारी में विद्यमान उसकी प्रतिभा और प्रगति समाज के लिए आवश्यक है और आने वाला पल नारी के लिए निर्भय और स्वछन्द वातावरण का निर्माण करेगा, जहाँ आधुनिकाता के परिवेश में वैचारिक समानता होगी। नारी के प्रति सोच में सम्मान होगा और सुमित्रानन्दन पंत की पंक्तियाँ साकार होंगी –

मुक्त करो नारी को मानव, चिर वन्दिनी नारी को।

युग–युग की निर्मम कारा से, जननी सखि प्यारी को।।

फलतः आज नारी पुरुषों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर चल रही है। विज्ञान व तकनीकी सहित लगभग सभी क्षेत्रों में उसने अपनी उपयोगिता सिद्ध की है। उसने समाज व राष्ट्र को यह सिद्ध कर दिखाया है कि शक्ति अथवा क्षमता की दृष्टि से वह पुरुषों से किसी भी भाँति कम नहीं है ।

निस्संदेह नारी की वर्तमान दशा में निरंतर सुधार राष्ट्र की प्रगति का मापदंड है। वह दिन दूर नहीं जब नर–नारी, सभी के सम्मिलित प्रयास फलीभूत होंगे और हमारा देश विश्व के अन्य अग्रणी देशों में से एक होगा। ■

अपने जीवन की कदर जानो

अभिप्रेरणा

परम प्रकाश खरे
ई.एम.पी.आई. बिजनेस स्कुल, छत्तरपुर, दिल्ली

मैं, परम प्रकाश खरे संसारिक दायित्वों का निर्वहन करते हुए अच्छी तरह से जीवन व्यतीत कर रहा था। मेरे जीवन में किसी भी चीज की कमी नहीं थी। लेकिन शुरू से ही मेरे अंतर्मन में हमेशा यह जानने की जिज्ञासा होती थी कि मैं कौन हूं? मैं कहां से आया हूं? यह जीवन क्यों मिला है? जीवन को सफल कैसे किया जाता है? आदि। इन प्रश्नों की जिज्ञासा तब जाकर शान्त हुई जब मेरे पिताजी श्री वी.एन. खरे जी ने श्री प्रेम रावत जी के शान्ति का संदेश से अवगत करवाया। श्री प्रेम रावत जी का संदेश मेरे हृदय को छू गया। उनका संदेश बहुत ही सरल एवं जाति, धर्म, देश से ऊपर उठकर प्रत्येक मनुष्य के लिए है। उनका संदेश है कि "जिस सुख व शान्ति की तलाश आपको है वह पहले से ही आपके अंदर है। जरूरत है सच्चे मार्गदर्शक की जो आपका परिचय आपसे करा दे।" उनके शांति के संदेश तथा ज्ञान रूपी उपहार से मैं अपने जीवन में प्रतिदिन सच्ची शान्ति का अनुभव करता हूं। जीवन में अनेक चुनौतियों के बावजूद हमारे हृदय में परमात्मा के प्रति आभार बना रहता है। उनका संदेश मेरे जीवन पथ पर एक दीया की तरह प्रकाश देता रहता है और मैं अपने आपको सौभाग्यशाली महसूस करता हूं। बरेली में दिए गए उनके सम्बोधन का एक अंश मैं यहां पर इस आशा के साथ उद्धृत कर रहा हूं कि आप सभी अवश्य पसंद करेंगे एवं लाभान्वित होंगे।

मैं कहता हूं लोगों कि अच्छाई भी तुममें है और बुराई भी तुममें हैं। इसका मतलब समझते हो? गुस्सा भी तुम ही करते हो और जब तुम दया करते हो तो दया भी तुम ही करते हो ! गुस्सा तुम्हारे अंदर से आता है और दया भी तुम्हारे अंदर से आती है। क्या तुमको मालूम है? गुस्सा बाहर से नहीं आता है। तुम्हारे अंदर से आ रहा है।

दया भी तुम्हारे अंदर है, गुस्सा भी तुम्हारे अंदर है। ज्ञान भी तुम्हारे अंदर है, अज्ञान भी तुम्हारे अंदर है। अंधेरा भी तुम्हारे अंदर है, प्रकाश भी तुम्हारे अंदर है। प्यार भी तुम्हारे अंदर है और नफरत भी तुम्हारे अंदर है। और कोई ऐसा समय नहीं है कि दोनों की दोनों चीजें तुम्हारे अंदर न हों। जहां तुम जाते हो, जो तुम करते हो, ये दोनों की दोनों चीजें– अच्छाई भी और बुराई भी तुम्हारे अंदर सदा हैं। तो और सुनो! शैतान भी तुम्हारे अंदर है और भगवान भी तुम्हारे अंदर है। शैतान नरक में नहीं बैठा हुआ है। वो तुम्हारे अंदर बैठा है। नरक भी तुम्हारे अंदर है और स्वर्ग भी तुम्हारे अंदर है। नरक भी तुम्हारे अंदर है और स्वर्ग भी तुम्हारे अंदर है।

अब लोग पूछते हैं कि "जी! दुनिया में क्या हो रहा है?" शैतान की लीला हो रही है! ये सब जो देख रहे हो बुरा, ये सब की सब शैतान की लीला है। अब लोग कहते हैं, "भगवान की लीला क्यों नहीं हो रही है?" हम तुमको भगवान की लीला के बारे में सुनाते हैं। शैतान की लीला देखनी है तो अखबार उठाओं! शैतान की लीला देखनी है तो अखबार उठाओ, भगवान की लीला देखनी है तो हमसे बात करो! क्या लीला है? भगवान की लीला!

नर तन भव बारिधि कहुं बेरो। क्यों मिला है ये नर तन?
इस भगवान से पार करने का एक तरीका है, एक साधन है।
नर तन भव बारिध कहुं बेरो। सनमुख मरूत अनुग्रह मेरो।।

इस स्वांस का आना–जाना ही मेरी कृपा है! ये कैसी लीला? यही है लीला! कृपा! इस स्वांस का आना–जाना ही मेरी कृपा है। सबसे अंदर ये लीला हो रही है। वो लीलाधारी अंदर है और लीला भी कर रहा है।

प्यार करना तुम्हारा स्वभाव है। इससे तुमको हानि नहीं पहुंचेगी। नफरत करना तुम्हारा स्वभाव नहीं, इससे तुमको हानि पहुंचेगी। जो तुम करोगे, जो तुम्हारे स्वभाव में नहीं है, उससे तुमको हानि पहुंचेगी। अज्ञानता में रहोगे, तुमको हानि पहुंचेगी। ज्ञान में रहोगे तुमको हानि नहीं पहुंचेगी। आनंद में रहोगे, तुमको कोई हानि नहीं पहुंचेगी। क्योकि ये तुम्हारा स्वभाव है। तुमको बनाया ही इसलिए गया है।

भीखा भूखा कोई नहीं, सबकी गठरी लाल।
गठरी खोलना भूल गए, इस विधि भए कंगाल।।

कोई अभागा नहीं है। पर जो मिला है, उसको खोला ही नहीं, उसको पाया ही नहीं, उसको समझा ही नहीं। वो सब जगह व्यापक है! तो सबसे बड़ी चीज है कि वो तुम्हारे अंदर भी व्यापक है। अचंभे की बात तो यह हो जाती है न कि –

एक राम दशरथ का बेटा। एक राम घट घट में बैठा।।
एक राम का जगत पसारा। एक राम जगत से न्यारा।।

एक बार एक व्यक्ति ने बड़े प्यार से, प्रेम से ये पूछा हमसे कि "जी! किसकी पूजा करें?" एक राम दशरथ का बेटा। वो तो एक समय था कि वो राम नहीं थे। उनका जन्म हुआ। उसके बारे में तो सब जानते हैं। उसकी तो फोटो लगाते हैं, उनकी पूजा करते हैं एक राम का जगत पसारा। मंदिर बने हुए हैं। लोग उनकी चर्चा करते हैं।

एक राम जगत से न्यारा।

उसके बारे में भी बड़ा सुनाते हैं। वो तो उसका इस दुनिया से कुछ लेना देना ही नहीं है। वो तो वहां है। वो तो ये करता हैं, वो करता है, ये है। तो तीन राम के पीछे सब लगे हैं। एक राम बेचारा रह गया, और वो राम है–

घट घट में बैठा।

उसी राम की गाथा हम गाते हैं। तो हम क्यों करते है? क्योंकि हमने उस राम को पहचाना है अपने अंदर। अपने अंदर। अगर अपना कल्याण करना चाहते है तो कौन करेगा? वो जो तुम्हारे घट में बैठा है, वो करेगा। वो कब तक तुम्हारे साथ है? जब तक तुम्हारे अंदर ये स्वांस आ रहा है, जा रहा है। अगर समझ गए तो तुम्हारा कल्याण है। अनुभव करो! मालूम करो। जानों! अपने जीवन की कदर जानों! अपने जीवन के अंदर क्या संभावनाएं हैं, इसको जानों! जो है सच में, उसको जानो! उसको पहचानो! तुम्हारे जीवन के अंदर आनंद ही आनंद हो जाएगा। ■

स्वामी विवेकानंद की अध्यात्मिक अनुभूतियां

अजीत कुमार
सहायक प्रबंधक (राजभाषा),
निगमित कार्यालय

अध्यात्म के शिखर पुरूष स्वामी विवेकानंद का जीवन चरित्र सचमुच उनकी दिव्य आध्यात्मिक अनुभूतियों का एक ऐसा लहराता, उफनता सागर है, महासागर है, जिसमें उठती हुई लहरें सहसा हमें अपने आगोश में लेकर, हमारे चित्त को नहलाकर हमें असीम आत्मिक, आध्यात्मिक में डुबो देती हैं। अपने पूर्व जन्म के प्रबल, प्रचंड आध्यात्मिक संस्कार के कारण विवेकानंद को अपने बाल्यकाल से ही ईश्वर के प्रति विशेष अनुराग था, प्रेम था। उन्हें बचपन से ही दिव्य अनुभूतियाँ हुआ करती थीं। प्रतिदिन शयन के पूर्व उन्हें एक दिव्यदर्शन हुआ करता था। आँखें मूँदते ही उन्हें अपनी भौंहो के बीच निरंतर परिवर्तनशील रंगों का एक ज्योतिबिंदु दिख पड़ता था। वह ज्योतिबिंदु क्रमशः बढ़ते हुए एक गोला के आकार का होकर फट जाता था और उससे निस्सृत होने वाले एक शुभ्र ज्योतिपुंज से उनका संपूर्ण शरीर नहा उठता था। उस आलोक का अवलोकन करते हुए वे धीरे–धीरे निद्रा में डूब जाते।

बचपन में नरेंद्र शिव जी की मूर्ति के समक्ष बैठकर ध्यान किया करते थे। ध्यान के समय प्रायः ही उनकी बाह्य संज्ञा का लोप हो जाया करता था। एक बार उन्हें हाथ में दंड एवं कमंडल लिए हुए एक ज्योतिर्मय पुरूष का दर्शन हुआ, जिनके मुखमंडल से दिव्य प्रशांति निस्सृत हो रही थी। वे दिव्यपुरूष मानो कुछ कहना ही चाहते थे कि नरेंद्र भय पूर्वक कमरे से बाहर निकल आए। बाद में आगे चलकर उन्होंने समझा कि उस बार संभवतः उन्हें बुद्ध देव का दर्शन हुआ।

पंद्रह वर्ष की आयु में उन्हें पुनः एक दिव्य आध्यात्मिक अनुभूति हुई। तब वे अपने परिवार के साथ मध्यप्रदेश के रायपुर नगर को जा रहे थे। यात्रा का कुछ भाग बैलगाड़ी में तय किया जा रहा था। उस दिन शीतल और मंद वायु प्रवाहित हो रही थी। वृक्ष और लताएँ रंग–बिरंगे पत्र–पुष्पों से झुके जा रहे थे, तरह–तरह के पक्षी कलरव कर रहे थे। चलते–चलते बैलगाड़ी एक ऐसी सँकरी घाटी के समीप पहुँची, जहाँ दो ऊँचे पर्वत शिखर मानो एक दूसरे को चूम रहे थे। मुग्ध होकर निहारते हुए नरेंद्र ने देखा कि पर्वत की एक दरार से धरती पर एक विशाल मधुचक्र लटक रहा है। यह अद्भुत–अपूर्व दृश्य देखकर उनका मन ईश्वर की अनंत शक्ति की कल्पना करते हुए श्रद्धा एवं विस्मय से विभोर हो उठा और वे बाह्य संज्ञाशून्य होकर काफी देर तक बैलगाड़ी में ही पड़े रहे। बाह्य चेतना लौटने के पश्चात भी उनके मन में आनंद की हिलोरें उठती रहीं।

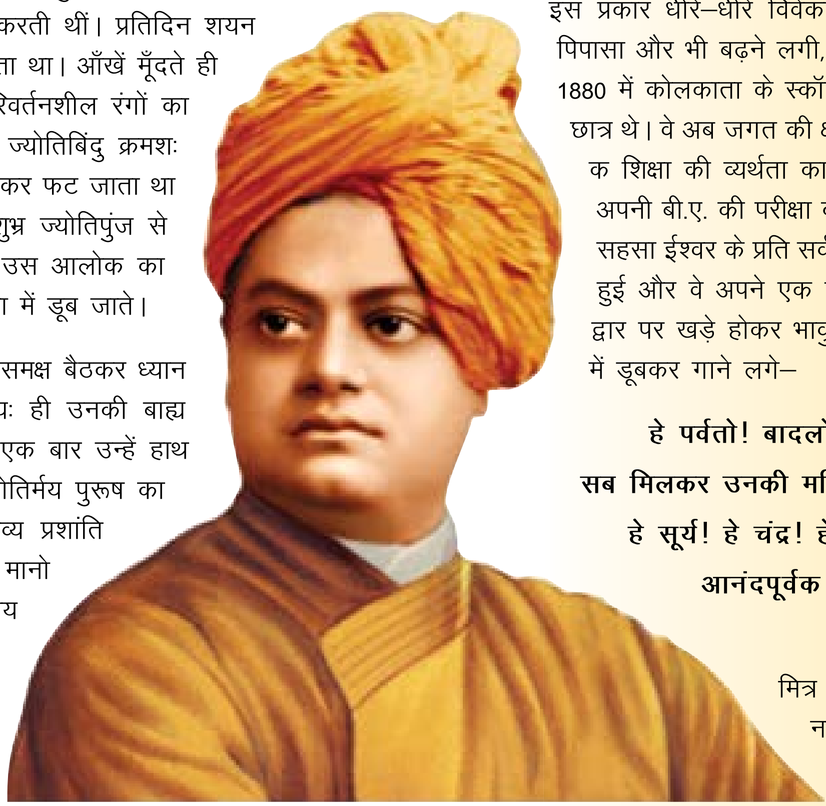

इस प्रकार धीरे–धीरे विवेकानंद की आध्यात्मिक पिपासा और भी बढ़ने लगी, जगने लगी। वे सन् 1880 में कोलकाता के स्कॉटिश चर्च में बी.ए. के छात्र थे। वे अब जगत की क्षणभंगुरता तथा बौद्धिक शिक्षा की व्यर्थता का बोध करने लगे थे। अपनी बी.ए. की परीक्षा के पहले दिन ही उन्हें सहसा ईश्वर के प्रति सर्वग्राही प्रेम की अनुभूति हुई और वे अपने एक सहपाठी के कमरे के द्वार पर खड़े होकर भावुकतापूर्वक ईश्वर प्रेम में डूबकर गाने लगे–

हे पर्वतो! बादलो! हवाओ!
सब मिलकर उनकी महिमा गाओ!
हे सूर्य! हे चंद्र! हे तारकाओ!
आनंदपूर्वक प्रभु की महिमा गाओ!

मित्र ने विस्मित होकर नरेंद्र को अगले दिन होने वाली परीक्षा की याद दिलाई तो भी उन्होंने ध्यान नहीं दिया। फिर भी वे परीक्षा में बैठे एवं आसानी से सफल हुए।

समय के साथ–साथ ईश्वर को पाने, जानने की उनकी इच्छा तीव्र से तीव्रतर होती गई। उन्होंने इस हेतु तत्कालीन प्रसिद्ध धार्मिक नेताओं

से भी भेंट की, किंतु उनसे भी उन्हें ईश्वर के अस्तित्व संबंधी प्रश्न का समाधान नहीं मिल सका। इससे उनकी आध्यात्मिक उत्कंठा और अधिक तीव्र हो गई। वे किसी ऐसे व्यक्ति से मिलना चाहते थे, जिसने स्वयं भी ईश्वर को देखा हो। ऐसे समय में उन्हें अपने अध्यापक विलियम हेस्टी के वे शब्द याद आए, जो उन्होंने वर्ड्सवर्थ की कविता 'दि एक्सकर्शन' पढ़ाते समय समाधि के संदर्भ में कोलकाता के समीप दक्षिणश्वर में रहने वाले संत श्रीरामकृष्ण परमहंस जी की चर्चा करते हुए कहे थे कि उनकी नजर में एकमात्र वे ही हैं, जिन्हें समाधि का अनुभव है उनके चचेरे भाई रामचंद्र दत्त ने भी उन्हें श्रीरामकृष्ण के पास जाने को प्रेरित किया।

इस प्रकार सन् 1881 के नवंबर में वे श्रीरामकृष्ण परमहंस जी के पास पहुँचे। यह सचमुच दो महान आत्माओं का, गुरू और शिष्य का ऐतिहासिक मिलन था। नरेंद्र ने पूछा– ''महर्षि! क्या आपने ईश्वर को देखा है ?'' श्रीरामकृष्ण ने तुरंत कहा– ''हाँ! मैंने ईश्वर को देखा है, वैसे ही जैसे तुम्हें देख रहा हूँ, बल्कि उससे कहीं अधिक स्पष्टता से। ईश्वर को देखा जा सकता है। उनसे बातें की जा सकती हैं, परंतु उन्हें चाहता ही कौन है ? लोग पत्नी–बच्चों के लिए, धन–दौलत के लिए घंटों आँसू बहाते हैं, परंतु ईश्वर के दर्शन नहीं हुए, इस कारण कौन रोता है ? यदि कोई उन्हें हृदय से पुकारे तो वे अवश्य ही दर्शन देंगे।''

यह सुनकर नरेन्द्र तो अवाक् रह गए। वे जीवन में पहली बार किसी ऐसे व्यक्ति से मिले, जो ईश्वर को देखने का दावा कर रहे थे। वे किसी के मुख से जीवन में प्रथम बार यह सुन रहे थे कि ईश्वर का दर्शन सम्भव है। उन्हें लगा कि श्री रामकृष्ण अपनी आंतरिक अनुभूतियों की गहराई से बोल रहे हैं और उनकी बातों पर अविश्वास नहीं किया जा सकता। यही वह पल था, जब एक सच्चे अध्यात्म पिपासु शिष्य ने अपने गुरू के समक्ष सम्पूर्ण समर्पण कर दिया। अपने हृदय की पूर्ण गहराई के साथ नरेंद्र ने श्रीरामकृष्ण क समक्ष कुछ भजन गाए–

मन! चल घर लौट चलें।

इस संसाररूपी विदेश में

विदेशी का वेश धारण किए

तू वृथा क्यों भटक रहा है ?

सौंदर्य, रूप, रस, गंध, स्पर्श – इंद्रियों के ये पाँच विषय तथा आकाश, वायु, अग्नि, जल, पृथ्वी ये पंचभूत इनमें से कोई भी तेरा अपना नहीं, सभी पराये हैं। तू क्यों व्यर्थ ही पराये प्रेम में पड़कर अपने प्रियतम को भूला जा रहा है ?

गाना समाप्त होते ही श्रीरामकृष्ण ने सहसा नरेंद्र का हाथ पकड़ लिया। उनके गालों से होकर आँसुओं की धार बहती देखकर नरेंद्र के विस्मय की सीमा न रही। श्रीरामकृष्ण करने लगे – ''अहा ! तू इतने दिनों बाद आया। तू बड़ा निर्मम है, इसीलिए तो इतनी प्रतीक्षा करवाई। विषयी भागों की व्यर्थ की बकवास सुनते–सुनते मेरे कान सुलग गए हैं। दिन की बातें किसी को न कह पाने के कारण कितने दिनों से मेरा पेट फूल रहा है।'' फिर हाथ जोड़ते हुए बोले– ''मैं जानता हूँ प्रभु! आप वे ही पुरातन ऋषि, नररूपी नारायण हैं, जीवों की दुर्गति नाश करने को आपने पुनः शरीर धारण किया है।''

श्रीरामकृष्ण के पास दूसरी बार आने पर नरेंद्र को और भी विचित्र अनुभव हुए। उनके आने के दो–चार मिनट बाद ही श्रीरामकृष्ण उनकी ओर बढ़ने लगे तथा अस्पष्ट स्वर में कुछ करते हुए उनकी ओर देखने लगे, फिर सहसा अपना दाहिना पैर उन्होंने नरेंद्र के शरीर पर रख दिया। इस स्पर्श के साथ ही नरेंद्र ने खुली आँखों से देखा कि कमरे की दीवारें, मंदिर का आँगन और यहाँ तक की पूरा विश्व–ब्रह्मांड ही घूमते हुए कहीं विलीन होने लगा। उन्हें ऐसा प्रतीत होने लगा कि मृत्यु आसन्न है। वे चिल्ला उठे– ''अजी, आपने मेरा यह क्या कर दिया? घर में माँ–बाप, भाई–बहन जो हैं।'' श्रीरामकृष्ण इस पर खिलखिलाकर हँस पड़े और नरेंद्र का सीना स्पर्श कर उनका सामान्य भूमि पर लाते हुए बोले– ''अच्छा, तो अभी रहने दे। समय आने पर सब होगा।''

तीसरी बार दक्षिणेश्वर आने पर नरेंद्र ने यथासंभव सावधान रहने का प्रयास किया, परंतु इस बार उनकी हालत पहले जैसी ही हो गई। श्रीरामकृष्ण नरेंद्र को साथ लेकर पड़ोस के एक उद्यान में टहलने चले गए और भावसमाधि की अवस्था में उन्होंने नरेंद्र को स्पर्श किया। नरेंद्र अभिभूत होकर बाह्य चेतना खो बैठे।

इस घटना का उल्लेख करते हुए बाद में श्रीरामकृष्ण ने बताया था कि उस दिन नरेंद्र को अचेतन अवस्था में ले जाकर मैंने उसके पूर्वजीवन के बारे में उनकी बातें, जगत में आने का उसका उद्देश्य तथा जगत् में उसके निवास की अवधि आदि पूछ लिए थे। श्रीरामकृष्ण ने अपने दूसरे शिष्यों को बताया था कि नरेंद्र ध्यानसिद्ध है, वह जन्म के पहले से ही पूर्णता की उपलब्धि कर चुका है और जिस दिन उसे अपने वास्तविक स्वरूप का बोध हो जाएगा, उस दिन वह योगमार्ग से स्वेच्छापूर्वक देह त्याग देगा।

पूर्व की भाँति एक बार फिर जब नरेंद्र श्रीरामकृष्ण से मिलने दक्षिणेश्वर पहुँचे तो रामकृष्ण ने एक बार फिर नरेंद्र का स्पर्श किया और फिर स्वयं गहन समाधि में डूब गए। उस स्पर्श ने जादू–सा असर किया और नरेंद्र को चेतना के नए ही जगत की अनुभूति होने लगी। वे देखने लगे कि संपूर्ण ब्रह्मांड ही ब्रह्म से ओत–प्रोत है। भावावस्था में वे घर लौटे। भोजन करते समय भी उन्हें सभी वस्तुओं में ब्रह्मानुभूति

होने लगी। रास्ता चलते उन्होंने देखा गाड़ियाँ, घोड़ें, भीड़–भाड़ और वे स्वयं भी मानो एक ही तत्व के बने हैं। इस प्रकार इस बार उन्हें अद्वैत की एक झलक भर मिली थी, जिसकी पूर्ण अनुभूति उन्हें परवर्तीकाल में होने को थी।

गुरू और शिष्य, दोनों एक दूसरे की परीक्षा लिया करते थे। नरेंद्र ने श्रीरामकृष्ण की परीक्षा लेकर उनके द्वारा प्रतिपादित आध्यात्मिक सत्यों की पूरी जाँच कर ली और श्रीरामकृष्ण ने नरेंद्र की परीक्षा लेकर उनके शिष्यत्व और पात्रता की परीक्षा ली। इसी क्रम में एक दिन जब नरेंद्र दक्षिणेश्वर आए तो श्रीरामकृष्ण ने उनकी ओर बिलकुल ही ध्यान नहीं दिया, कुशल तक नहीं पूछा। एक सप्ताह बाद आने पर ठाकुर ने पुनः उनके प्रति वैसे ही उदासीनता दिखाई। तीसरी और चौथी बार आने पर भी श्रीरामकृष्ण का व्यवहार वैसा ही रहा।

ऐसे ही महीना भर बीत जाने पर एक दिन उन्होंने नरेंद्र को निकट बुलाकर पूछा– ''अच्छा, मैं तो तेरे साथ जरा–सी भी बात नहीं करता, तो भी बतला तू यहाँ क्यों आता है ?'' नरेंद्र ने कहा– ''मैं आपसे प्रेम करता हूँ, आपको देखने की इच्छा होती है, इसलिए आता हूँ।'' सुनकर श्रीरामकृष्ण आनंद विभोर हो उठे और आनंदातिरेक में नरेंद्र को आलिंगन पाश में बाँधते हुए बोले– ''मैं तो तेरी परीक्षा मात्र ले रहा था। मैं यह देखना चाहता था कि उपेक्षा दिखाने पर कहीं तू भाग तो न जाएगा। तेरे जैसा आधार ही इतना सहन कर सकता है। दूसरा कोई होता तो कभी का भाग चुका होता।''

एक अन्य समय श्रीरामकृष्ण अपनी साधनाओं एवं अतींद्रिय अनुभूतियों द्वारा प्राप्त सिद्धियों को नरेंद्र के अंदर संचार कर देना चाह रहे थे। इस पर नरेंद्र ने पूछा– ''क्या उन सिद्धियों से मुझे ईश्वर प्राप्ति में कुछ सहायता मिल सकेगी।'' श्रीरामकृष्ण ने कहा– ''नहीं पर आचार्य के रूप में भावी कर्मों में अवश्य सहायक सिद्ध होंगी।'' इस पर नरेंद्र ने कहा– ''तो पहले ईश्वरलाभ हो जाए, फिर उन अलौकिक सिद्धियों को लेने या न लेने के बारे में सोचा जाएगा। उन्हें अभी स्वीकार कर लेने पर संभव है कि मैं ईश्वर को भूल जाऊँ और अपने स्वार्थ के लिए उनका दुरूपयोग कर सर्वनाश ही कर बैठूँ।''

अपने प्रिय शिष्य की अटल भक्ति देखकर श्रीरामकृष्ण को असीम आनंद हुआ। नरेंद्र ने श्रीरामकृष्ण के निर्देशन में अपनी ध्यानतन्मयता और भी बढ़ा दी तथा देहबोध से परे जाकर आंतरिक शांति का अनुभव करने लगे। ध्यान से उठने पर भी उनके मन में शांति का तारतम्य बना ही रहता था। उन्हें प्रायः ही यह अनुभव होने लगा कि आत्मा शरीर से पृथक है। स्वप्न में भी उन्हें दिव्य दर्शन होने लगे, जिसके फलस्वरूप जागने के बाद भी उन्हें एक विशेष आनंद का अनुभव होता रहता था।

सन् 1884 में पिता के देहावसान के बाद उनके परिवार पर विपत्ति आ गई। घर की माली हालत खराब हो गई। सो एक दिन वे रामकृष्ण से बोले– ''जगन्माता तो आपकी प्रार्थना सुना करती हैं, तो फिर आप मेरे परिवार के दुःखनिवारण के लिए, जगन्माता से प्रार्थना कर दीजिए।'' इस पर श्रीरामकृष्ण बोले– ''तू स्वयं माँ के पास जाकर क्यों नहीं कह देता ? आज मंगलवार है। आज रात काली मंदिर में जाकर माँ से जो भी माँगेगा, माँ उसे पूरा करेंगी। मेरी माँ प्रेम व करूणा की मूर्ति हैं। वे चिन्मयी ब्रह्मशक्ति हैं। उन्होंने अपनी इच्छा मात्र से जगत् को प्रसव दिया है।'' रात को नौ बजे नरेंद्र ने काली मंदिर में प्रवेश किया। आँगन से होकर जाते हुए उन्हें भावावेश होने लगा, जगदंबा के दर्शन की आशा में उनका हृदय उछलने लगा।

देवालय में प्रवेशकर मूर्ति की ओर दृष्टिपात करने पर उन्हें लगा कि वहाँ पाषाण–प्रतिमा नहीं, साक्षात् जगदंबा ही विराज रही हैं और वे उनकी इच्छानुसार सांसारिक सुख अथवा आध्यात्मिक आनंद का कोई भी वर देने को प्रस्तुत हैं। वे भावविह्वल होकर बार–बार प्रार्थना करने लगे – ''माँ! मुझे विवेक दो, वैराग्य दो, ज्ञान दो, भक्ति दो, परंतु वे धन माँगना भूल गए।'' वे लौटकर जब ठाकुर के पास आए तो ठाकुर ने कहा– ''क्यों, माँ से गृहस्थी का अभाव दूर करने की प्रार्थना की है न ? ''तो नरेंद्र बाले– ''नहीं महाराज! मैं तो भूल ही गया था।'' ठाकुर के कहने पर नरेंद्र माँ के पास दोबारा गए, पर फिर भूल गए। तीसरी बार भी ऐसा ही हुआ।

नरेंद्र ठाकुर माँ की लीला समझ गए। वे समझ गए कि माँ चाहती हैं कि मैं त्यागमय जीवन जीऊँ, पर ठाकुर ने उन्हें दिलासा देते हुए कहा कि उनके परिवार को भोजन–वस्त्र का अभाव नहीं रहेगा। उपर्युक्त घटना नरेंद्र के मन पर गहरी छाप छोड़ गई। इससे उन्हे ईश्वर एवं जागतिक कार्यों के बारे में एक नवीन प्रकाश की उपलब्धि हुई। अब उन्हें बोध हुआ कि ईश्वर अपनी संपूर्ण सृष्टि में ओत–प्रोत हैं। एक अन्य दिन श्रीरामकृष्ण ने नरेंद्र से कहा– ''ईश्वर रस के समुद्र हैं। क्या तू इस समुद्र में डुबकी लगाएगा। अच्छा, मान ले एक नाद में रस है और तू मक्खी हो गया है, तो तू कहाँ बैठकर रस पिएगा ?'' नरेंद्र ने कहा– ''मैं नाद के किनारे बैठकर रसपान करूँगा; क्योंकि ज्यादा बढ़ने पर डूब जाऊँगा और इस प्रकार जान से भी हाथ धोना पड़ेगा।''

इस पर ठाकुर बोले– ''बेटा! तुम क्यों भूल जाता है कि यह सच्चिदानंद सागर है। मैं अमृत के सागर की बात कर रहा हूँ। इसमें मृत्यु का भय नहीं है। मूर्ख लोग ही कहा करते हैं कि भक्तिभाव में अति उचित नहीं। भला कहीं ईश्वर प्रेम में भी अति हो सकती है ? सच्चिदानंद सागर में गहराई तक डूब जा।'' सचमुच यदि हम भी अपने जीवन में ईश्वर लाभ करना चाहते हैं, अपने प्रियतम को पाना चाहते हैं तो हमें भी इस सच्चिदानंद सागर में अब उतर ही जाना चाहिए; क्योंकि इसमें डूबने का कोई भय नहीं। क्यों न हम भी नित्य दिन ऐसे ही महापुरूषों की आध्यात्मिक अनुभूतियों के सागर में डूब–डूबकर चित्त की शुद्धि कर लें और परमात्मा को पाकर भवसागर से पार चले जाएँ। ■

सतनाम पंथ संत गुरू घासीदास

डॉ0 स्वर्णलता सिन्हा
सहायक अध्यापक, गुरू धासीदास विश्वविद्यालय, बिलासपुर
धर्मपत्नी डॉ0 विशेष श्रीवास्तव, राजभाषा अधिकारी, रसायनी यूनिट

सतनाम, यह एक ऐसा शब्द है जो अपने आप में दिव्यशक्ति संपन्न है। कहते है कि सतनाम मंत्र अस्पष्ट ध्वनियों से बना है जिनको बीज कहा जा सकता है। यही अक्षर ब्रह्म कहलाते है। जब सतनाम का आहत या अनाहत उच्चारण होता है तो साधक में परम शक्ति, प्राण ऊर्जा का प्रादुर्भाव होता है। यौगिक तंत्र के रुप में चौका, चक्र और पद्म का प्रतीक है इन्हीं सबसे गुजरते हुए कोई जीव सिद्ध जीवन मुक्ति की व्यवस्था तक पहुंचता है।

लोक–कथा के अनुसार, सन् 1672 में वर्तमान हरियाणा के नारनौल नामक स्थान पर साध बीरभान और जोगीदास नामक दो भाइयों ने सतनामी साध मत का प्रचार किया था। सतनामी साध मत के अनुयायी किसी भी मनुष्य के सामने नहीं झुकने के सिद्धांत को मानते थे। वे सम्मान करते थे लेकिन किसी के सामने झुक कर नहीं। एक बार एक किसान ने तत्कालीन मुगल बादशाह औरंगजेब के कारिंदे को झुक कर सलाम नहीं किया तो उसने इसको अपना अपमान मानते हुए उस पर लाठी से प्रहार किया जिसके प्रत्युत्तर में उस सतनामी साध ने भी उस कारिंदे को लाठी से पीट दिया। यह विवाद यहीं खत्म न होकर तूल पकड़ते गया और धीरे–धीरे मुगल बादशाह औरंगजेब तक पहुँच गया कि सतनामियों ने बगावत कर दी है। यहीं से औरंगजेब और सतनामियों का ऐतिहासिक युद्ध हुआ था। जिसका नेतृत्व सतनामी साध बीरभान और साध जोगीदास ने किया था। युद्ध कई दिनों तक चला, जिसमें शाही फौज निहत्थे सतनामी समूह से मात खाती चली जा रही थी। शाही फौज में ये बात भी फैल गई कि सतनामी समूह कोई जादू टोना करके शाही फौज को हरा रहे हैं। इसके लिए औरंगजेब ने अपने फौजियों को कुरान की आयतें लिखे तावीज भी बंधवाए थे लेकिन इसके बावजूद कोई फर्क नहीं पड़ा था लेकिन उन्हें ये पता नहीं था कि सतनामी साधों के पास आध्यात्मिक शक्ति के कारण यह स्थिति थी। चूंकि सतनामी साधों के तप का समय पूरा हो गया था उनमें अद्भुत ताकत थी। वे गुरू के समक्ष अपना समर्पण कर वीरगति को प्राप्त हुए। बचे हुए सतनामी सैनिक पंजाब, मध्य प्रदेश की ओर चले गये। मध्य प्रदेश जो वर्तमान छत्तीसगढ़ है, वहां संत गुरु घासीदास जी का जन्म हुआ और वहाँ पर उन्होंने सतनाम पंथ का प्रचार तथा प्रसार किया। इसलिए छत्तीसगढ़ की संत परंपरा में गुरु घासीदास जी का नाम सर्वोपरि है।

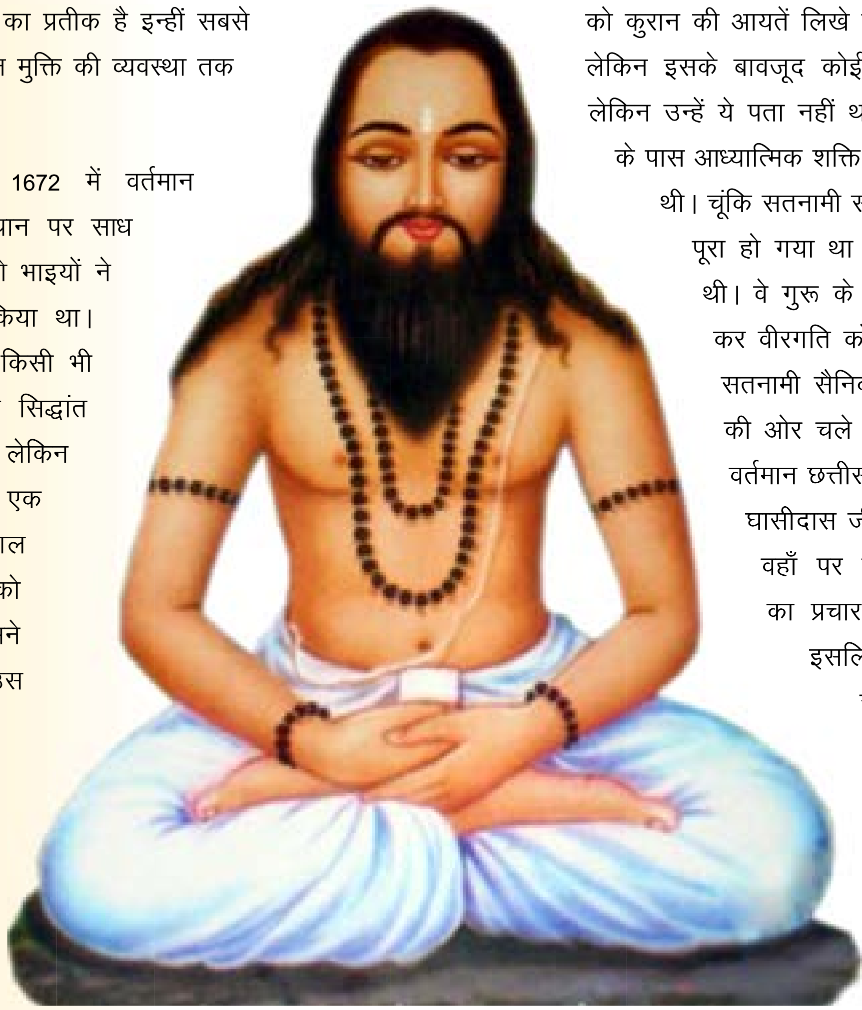

छत्तीसगढ़ की पावन माटी में महान मानवतावादी

सामाजिक आंदोलन एवं सामाजिक क्रांति के जनक, सतनाम पंथ के संस्थापक संत गुरु घासीदास जी का जन्म अगहन पूर्णिमा दिन सोमवार 18 दिसम्बर 1756 ई. को गिरौदपुरी जिला रायपुर तहसील बलौदा बाजार के एक गरीब और साधारण कृषक परिवार में हुए था। इनकी माता का नाम अमरौतिन तथा पिता का नाम महगूंदास था। गुरु घासीदास जी के पूर्वज पवित्रदास एक सम्पन्न कृषक थे। बाबाजी की पीढ़ी 1756 से 1850 तक मानी गई है। घासीदास जी का विवाह सिरपुर निवासी संपन्न कृषक अंजोरीदास की पुत्री सफुरा से बचपन में ही हो गया था। घासीदास जी और सफुरा से चार पुत्र और एक पुत्री हुई, जिनका नाम क्रमशः पुत्र अमरदास, बालकदास, आगरदास, अडगडियादास, पुत्री सुभद्रा बाई था। बाल्याकाल से ही इनके ह्रदय में वैराग्य का भाव प्रस्फुटित होने के कारण समाज में व्याप्त पशुबलि तथा अन्य कुप्रथाओं का बचपन से ही विरोध करते रहे। वैराग्य प्रवृत्ति को देखते हुए गुरु जी का विवाह सुफरा बाई से कर दिया गया लेकिन गृहस्थ कर्तव्यों का भार वहन करते हुए, अंधविश्वास से जकड़े, विषमताग्रस्त समाज के संबंध में उनका विचार–प्रवाह यथावत् रहा।

गुरु घासीदास जी के पथ पर चलकर और सत्य का अनुसरण कर सभी मानव अपने परिवार में ही रहकर मोक्ष को प्राप्त कर सकते हैं। बाबा ने समाज को नई दिशा, नई चेतना, जागृति और प्रज्ञा का संदेश देकर संतनाम पंथ का प्रवर्तन किया। बाबा ने मानवता, समानता, प्रेम, भाई–चारे, विश्व बंधुत्व, विश्व कल्याण, सद्भावना, समरसता और सत्य अहिंसा का संदेश मानव कल्याण के लिए दिया था। उनका कहना था कि मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर जाने की जरुरत नहीं है। स्वयं को जानों, आत्मा ईश्वर है, अपने शरीर को मंदिर के समान स्वच्छ, सुन्दर रखो। शरीर को सुख मिलेगा तो आत्मा प्रसन्न होगी यही बाबाजी के उपदेशों का सार भी है। गुरु घासीदास सन् 1807 में सत्य की खोज में जगन्नाथपुरी की यात्रा पर निकल पड़े थे। अपने साथियों के साथ सारंगढ़ तक ही पहुंच पाये थे और यहां से सतनाम का उच्चारण करते हुए वापस लौट आये और सन्यासी जीवन स्वीकार कर लिया। एक बार घासीदास ने सांप के डसने से मृत ग्रमीण को अपनी भक्तिपूर्ण प्रार्थना से जीवित कर दिया जिसके फलस्वरुप वह एक चमत्कारिक संत के रुप में विख्यात हो गये।

बाबा जी के पांच नाम–आदि नाम, अजर नाम, आमीन नाम, पताले नाम, सदा सिन्धु नाम, आकाशी अदाली नीर नाम, चारों गुरु पांचों नाम साहेब गुरु सतनाम। सतनाम पंथ के प्रवर्तक गुरु घासीदास एक महामानव थे। जिनमें मानवता प्रेम, दया, क्षमा, करुणा, समता, समाजिक समरसता भरी पड़ी थी। वे सभी को समान समझते थे। प्रकृति झरनों में जीवन का रुप देखते थे तथा प्रकृति प्रेमी थे और मानव के कल्याण के लिये हमेशा चिंतित रहते थे। वे इस चिंता में रहते थे कि दलित, शोषित, पीड़ितजनों को किस प्रकार सत का मार्ग बताया जाये जिससे इनको मोक्ष प्राप्त हो। गुरू घासीदास जातियों में भेदभाव व समाज में भाईचारे के अभाव को देखकर बहुत दुखी थे। वे लगातार प्रयास करते रहे कि समाज को इससे मुक्ति दिलाई जाए। लेकिन उन्हें इसका कोई हल दिखाई नहीं देता था। सत्य की तलाश के लिए गुरु घासीदास जी घर परिवार छोड़कर गिरौदपुरी से सोनाखान के जंगल छाता पहाड़ पर समाधि लगाये इस बीच बाबा जी ने गिरौदपुरी में अपना आश्रम बनाया तथा सोनाखान के जंगलों में सत्य और ज्ञान की खोज के लिए लंबी तपस्या भी की तथा जंगल में एकांत चिंतन और तपस्या करते हुए औराधौरा, तेंदू वृक्ष के नीचे आमज्ञान की अनुभूति में लीन हो गये। छाता पहाड़ के सघन वन के बीच ध्यान मुद्रा में लीन बाबा का शरीर अग्नि के समान तपने लगा जिससे जंगल में हाहाकार मच गया। जंगली जीव जंतु, शेर, चीता, हिरन, सियार, गाय, बैल, हाथी इत्यादि पशु–पक्षी भागने लगे। इसी बीच बाबा जी को सत्य पुरुष साहेब जी के दर्शन हुए और वे सत्य का संदेश देकर सतनाम के प्रचार हेतु बाबा को आदेशित कर अंतर्ध्यान हो गये। तप समाप्त करके सत्य की अनुभूति हुई और नई चेतना ऊर्जा प्राप्त हुई। बाबा जी ने 28 दिसम्बर 1820 को प्रतिक्षारत अनुयायियों के समक्ष सतनाम संदेश दिया–सादा जीवन उच्च विचार रखें और कहा–सत्य ही ईश्वर है सत्य ही मानव का आभूषण है। मांसाहार पाप है। सभी जीव समान हैं। पशु बलि जीव हत्या है। मादक पदार्थ का सेवन मत करो। मूर्ति पूजा बंद करो इससे जड़ता आती है। गायों को हल से न जोतो, दोपहर में हल चलाना अथवा भोजन ले जाना बंद करो। छुआ–छूत को दूर कर चेतना का विस्तार करो। निरंकार सतनाम साहेब का जप करो और पर नारी को माता जानों। सतनाम जाप करने से मोक्ष प्राप्त होगा। सूर्य के समक्ष सुबह शाम सतनाम के जाप करने से मन पवित्र होगा इत्यादि। बाबाजी ने समाज में व्याप्त जातिगत विषमताओं को नकारा। गुरू घासीदास पशुओं से भी प्रेम करने की सीख देते थे। वे उन पर क्रूरता पूर्वक व्यवहार करने के विरूद्ध थे। सतनाम पंथ के अनुसार खेती के लिए गायों का इस्तेमाल नहीं किया जाना चाहिये। गुरु घासीदास जी ने सात शिक्षाएँ भी दी–सतनाम् पर विश्वास रखना, जीव हत्या नहीं करना, मांसाहार नहीं करना, चोरी–जुआ से दूर रहना, नशा सेवन नहीं करना, जाति–पाति के प्रपंच में नहीं पड़ना, व्यभिचार नहीं करना।

सतगुरु घासीदास जी के दिव्य संदेश सुनने एवं देखने के लिए हजारों की संखया में भक्तजन गिरौदपुरी में एकत्र होने लगते थे। बाबाजी को देखकर भक्त भाव–विभोर हो जाते जय–जयकार की आवाज से आकाश गूंजने लगता, जंगल के पशु–पक्षी कलरव करके स्वागत करते जन–समूह को बाबाजी स्वागत के बाद संबोधित करते और दिव्य सतनाम संदेश देते, जय सतनाम के मंत्रों और सतनाम के जयघोष से आकाश गूंज उठता। गुरु घासीदास जी ने सतनाम का गांव–गांव भ्रमण कर उपदेश दिया और समग्र सामाजिक आंदोलन चलाये। उनके सामाजिक आंदोलन से जन चेतना का विकास हुआ जिससे जन–समूह जुड़ते गये।

गुरु घासीदास जी एवं पुत्र अमरदास जी ने तेलासी गांव में सतनाम संदेश सन् 1842 ई0 में दिये थे। गांव के सभी जाति के लोग जैसे तेली, साहू, राऊत, अहीर, लोधी, कुर्मी, लोहार, सोनार, बैगा एवं अन्य जाति के लोग सतनाम धर्म स्वीकार कर सतनामी बन गये। पूरा गांव सतनाममय हो गया। इसके बाद बाबाजी की ख्याति संपूर्ण छत्तीसगढ़, महाराष्ट्र, उड़ीसा, मध्य प्रदेश, बिहार, आसाम, पश्चिम बंगाल इत्यादि में फैल गई इनके अनुयायियों की संख्या करोड़ों में हो गयी। गुरु जी ने पंथ अनुयायियों के लिए जैतखाम आना अनिवार्य कर दिये। जैतखाम समाज में फैले बुराई, अंधविश्वास रुढ़िवादी, अज्ञान पर विजय का प्रतिक है जो कि समाज को धरा से ऊर्जा लेकर सूर्य चन्द्र से किरण लेकर समाज को शक्तिशाली ऊर्जावान बलशाली और प्रज्ञावान बनता है। संत गुरु घासीदास जी के बताये सतमार्ग में चलने वाले सतनाम पंथ के अनुयायी सतनामी कहलाये। ग्राण्ट के अनुसार, सतगुरु घासीदास जी ने अंतिम समाधि 1850 ई0 में ली।

सतनाम पंथ को एवं सामाजिक आंदोलन को आगे बढ़ाने का दायित्व द्वितीय पुत्र बालक दास जी ने लिया। बालक दास जी का जन्म 17 फरवरी 1786 ई0 को ग्राम गिरौदपुरी में हुआ था। गुरु बालकदास जी को अंग्रेजों ने महाराजा की उपाधि से विभूषित किया था। यह तार्किक एवं ज्ञानी पुरुष थे। समाज को बलशाली बनाने, शक्तिशाली बनाने के लिये वे अखाड़ा बनाये और लाठी, तलवार, कुश्ती, अस्त्र–शस्त्र चलाने की शिक्षा दिये जिससे सांमतवादी जमींदार राजपूतों की नजर में वे चढ़ गये। राजपूतों ने योजना बनाकर और बांधा में सामूहिक रुप से गुरु बालकदास की हत्या कर दी। इससे समाज हतप्रभ एवं आक्रोशित हो गया। अंग्रेज लेखक ग्राण्ट ने 1878 एवं चीशम 1868 में हत्या होना लिखा है। इस प्रकार गुरु बालकदास जी के साथ ही एक सामाजिक आंदोलन का अंत हो गया। गुरु बालकदास जी का अपराध केवल इतना था कि वे सोने की कंठी, जनेऊ, आभूषण पहने हुए थे। न्याय के मार्ग में चलकर समाज को विकास की ओर अग्रसर कर रहे थे। युवाओं में आत्मबल, मानवता, प्रेम, त्याग, बलिदान, समानता, चारित्रिक शुद्धता की भावना जागृत कर रहे थे। बालक दास जी के सामाजिक आंदोलन को गुरु के वंशजों ने आगे बढ़ाया और समाज को संगठित किया। सतनामी समाज में उस समय छः हजार सतनामी जमीदार थे जिन्होंने शिक्षा पर जोर दिया। वे अपने पुत्र–पुत्रियों को उच्च शिक्षा हेतु भेजने लगे इससे समाज में शिक्षा का प्रसार हुआ। पढ़े–लिखे लोगों को शासकीय नौकरियों में स्थान मिलने लगा। समाज को राजनीति में प्रतिनिधित्व मिलने लगा।

सन् 1820 से 1830 तक का समय सतनामी समाज के लिए स्वर्ण युग के नाम से जाना जाता है क्योंकि उस समय सतनामी समाज अपनी समाजिकता की दृष्टि से ओत–प्रोत और गतिशील था और चारों ओर क्रांति की लहर फैल चुकी थी। उन्होंने सामाजिक कुरीतियों पर कुठाराघात किया। जिसका असर आज तक दिखाई पड़ रहा है। इनके जीवन का लक्ष्य सत्य से साक्षात्कार करना था। समाज को नई दिशा प्रदान करने में इनका अतुलनीय योगदान है। गुरु जी के उपदेशों से समाज के असहाय लोगों में आत्मविश्वास, व्यक्तित्व की पहचान और अन्याय से जूझने की शक्ति का संचार हुआ। सामाजिक तथा आध्यात्मिक जागरण की आधारशिला स्थापित करने में सफल हुए। बाबा का जीवन दर्शन युगों तक मानवता का संदेश देता रहेगा। वह आधुनिक युग के सशक्त क्रान्तिदर्शी गुरु हैं। उनका व्यक्तित्व ऐसा प्रकाश स्तंभ है जिसमें सत्य, अहिंसा, करुणा तथा जीवन का ध्येय उदात्त रुप से प्रकट है। छत्तीसगढ़ शासन ने उनकी स्मृति में सामाजिक चेतना एवं सामाजिक न्याय के क्षेत्र में गुरु घासीदास सम्मान भी स्थापित किया है।

गुरू घासीदास जी के संदेशों का समाज के पिछड़े समुदाय में गहरा असर पड़ा। सन् 1901 की जनगणना के अनुसार उस वक्त लगभग 4 लाख लोग सतनाम पंथ से जुड़ चुके थे और गुरू घासीदास के अनुयायी थे। छत्तीसगढ़ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम सेनानी वीर नारायण सिंह पर भी गुरू घासीदास के सिद्धांतों का गहरा प्रभाव था। गुरू घासीदास के संदेशों और उनकी जीवनी का प्रसार पंथी गीत व नृत्यों के जरिए भी व्यापक रूप से हुआ। यह छत्तीसगढ़ की प्रख्यात लोक विधा भी मानी जाती है। सतनामी समाज सन् 1950 के बाद से आर्थिक और सामाजिक रूप से पिछड़े होने के कारण अनुसूचित जाति मे शामिल कर लिया गया। ■

ख़ुशी का राज

दयावती
वरिष्ठ सहायक (विशेष श्रेणी), निगमित कार्यालय

एक बार की बात है। एक गांव में एक महान ऋषि रहता था। उस गांव के लोग उस ऋषि का बहुत ही सम्मान करते थे। गांव के सभी लोग जब भी कोई समस्या में होते तो वे ऋषि उस समस्या का हल जरूर बताते। सभी गांव वाले उस ऋषि से बहुत प्रसन्न थे। हर बार कोई नई समस्या लेकर उस ऋषि के पास आते और महान ऋषि उस समस्या का हल बताते।

एक बार एक व्यक्ति उस ऋषि के पास एक सवाल लेकर आया और ऋषि से पूछा कि गुरू जी मैं एक प्रश्न पूछना चाहता हूं। तो ऋषि ने कहा पूछो तुम्हारा क्या प्रश्न है। तो वह व्यक्ति कहता है "मैं खुश कैसे रह सकता हूं मेरी खुशी का राज क्या है?" तभी ऋषि ने जवाब दिया कि इसका जवाब पाने के लिए तुम्हे मेरे साथ जंगल में चलना होगा।

कुछ समय बाद वह व्यक्ति खुशी का राज जानने के लिए ऋषि के साथ जंगल में जाने के लिए निकल लेता है और दोनों जंगल में जाते हैं। तभी रास्ते में एक बड़ा पत्थर आता है और ऋषि उस पत्थर को अपने साथ लेने के लिए उस व्यक्ति को कहते है। वह व्यक्ति ऋषि के आदेश को मानते हुए उस पत्थर को अपने हाथों में उठा लेता है।

कुछ समय बाद उस व्यक्ति को उस भरी पत्थर से हल्का दर्द होने लग जाता है। वह व्यक्ति इस दर्द को सहन कर लेता और चलता रहता है। काफी समय तक वह व्यक्ति उस दर्द को सहन कर लेता है। लेकिन जब उसे दर्द ज्यादा होने लगता है तो वह महान ऋषि से कहता है कि मुझे दर्द हो रहा है और मैं थक गया हूं।

तभी ऋषि कहते हैं कि इसे नीचे रख दो। वह व्यक्ति पत्थर को नीचे रखता है और उसे राहत मिलती है। फिर मुनि कहते हैं कि ये ही तुम्हारी खुशी का राज है। वह व्यक्ति वापस पूछता है कि गुरु मैं कुछ समझा नहीं।

फिर ऋषि वापस उस व्यक्ति को जवाब देते हैं कि जिस तरह तुमने इस भारी पत्थर को 10 मिनट के लिए उठाकर रखा तो तुम्हे थोड़ा दर्द हुआ। 20 मिनट तक उठाया तो उससे ज्यादा और अधिक समय तक उठाकर रखा तो ज्यादा दर्द होने लगा। ठीक उसी प्रकार जितनी देर तक हम अपने पर दुखों का बोझ लिए फिरेंगे हमें खुशी नहीं मिलेगी। निराशा ही मिलती रहेगी। हमारी खुशी का राज सिर्फ इस पर निर्भर करता है कि हम कितनी देर तक दुखों का बोझ अपने ऊपर रखते हैं।

यदि तुम्हे अपने जीवन में खुश रहना है तो कभी अपने ऊपर दुःख को हावी होने मत दो। दुःख इस भारी पत्थर की तरह है जिसे हम जितना रखेंगे उतना ही हमें दर्द और कष्ट देता रहेगा। ■

अनुशासन

अजय कुमार सिंह
वरिष्ठ सहायक, निगमित कार्यालय

उत्तम स्वास्थ्य का आनन्द पाने के लिए, परिवार में खुशी लाने के लिए और सबको शान्ति प्रदान करने के लिए सबसे पहले अनुशासित बनने और मस्तिष्क पर नियंत्रण प्राप्त करने की आवश्यकता है।'' भगवान बुद्ध द्वारा सम्पूर्ण जगत् को दिए गए इस सन्देश में अनुशासन को महिमामण्डित किया गया है।' अनुशासन' शब्द 'शासन' में 'अनु' उपसर्ग के जुड़ने से बना है, इस तरह अनुशासन का शाब्दिक अर्थ है– शासन के पीछे चलना प्रायः माता–पिता एवं गुरूजनों के आदेशानुसार चलना ही अनुशासन कहलाता है, किन्तु यह अनुशासन के अर्थ को सीमित करने जैसा है। व्यापक रूप से देखा जाए, तो स्वशासन अर्थात् आवश्यकतानुरूप स्वयं को नियंत्रण में रखना भी अनुशासन ही है। अनुशासन के व्यापक अर्थ में, शासकीय कानून के पालन से लेकर सामाजिक मान्यताओं का सम्मान करना ही नहीं, अपितु स्वस्थ रहने के लिए शारीरिक नियमों का पालन करना भी सम्मिलित है।

इस प्रकार, सामान्य एवं व्यावहारिक रूप में, व्यक्ति जहाँ रहता है, वहाँ के नियम, कानून एवं सामाजिक मान्यताओं के अनुरूप आचरण एवं व्यवहार करना ही अनुशासन कहलाता है। माइकल जे. फॉक्स ने इसे परिभाषित करते हुए कहा है– ''इस बात पर ध्यान दिए बिना कि कोई हमें देख रहा है अथवा नहीं, किसी कार्य को सही ढंग से करना ही अनुशासन है।''

जैसा कि प्रारम्भ में बताया गया है 'अनुशासन' का अर्थ होता है– शासन के पीछे चलना। इस अर्थ से देखा जाए, तो जैसा शासन होगा, वैसा ही अनुशासन होगा। इस प्रकार, यदि कहीं अनुशासनहीनता व्याप्त है, तो कहीं–न–कहीं इसमें अच्छे शासन का अभाव भी उत्तरदायी होता है। यदि परिवार के मुखिया का शासन सही नहीं है, तो परिवार में अव्यवस्था व्याप्त रहेगी ही। यदि किसी स्थान का प्रशासन सही नहीं है, तो वहाँ अपराध का ग्राफ स्वाभाविक रूप से ऊपर ही रहेगा। यदि राजनेता कानून का पालन नहीं करेंगे, तो जनता से इसके पालन की उम्मीद नहीं की जा सकती।

यदि खेल के मैदान में कैप्टन स्वयं अनुशासित नहीं रहेगा, तो टीम के अन्य सदस्यों से अनुशासन की आशा करना व्यर्थ है। और यदि टीम अनुशासित नहीं है, तो उसकी पराजय से उसे कोई नहीं बचा सकता। इसी तरह, यदि देश की सीमा पर तैनात सैनिकों का कैप्टन ही अनुशासित न हो, तो उसकी सैन्य टुकड़ी कभी अनुशासित नहीं

रह सकती, परिणामस्वरूप देश की सुरक्षा निश्चित रूप से खतरे में पड़ जाएगी। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी के शब्दों में– ''अनुशासन के बिना न तो परिवार चल सकता है और न संस्था या राष्ट्र ही।'' सचमुच यदि परिवार के सदस्य अनुशासित न हों, तो उस परिवार का अव्यवस्थित होना स्वाभाविक है। सरकारी कार्यालयों में यदि कर्मचारीगण अनुशासित न हों तो वहाँ भ्रष्टाचार का बोलबाला हो जाता है। अनुशासन के अभाव में किसी भी समाज में अराजकता व्याप्त हो जाती है। अतः अनुशासन किसी सभ्य समाज की मूलभूत आवश्यकता है। अनुशासन न केवल व्यक्तिगत हित, अपितु सामाजिक हित के दृष्टिकोण से भी अनिवार्य है।

एक बच्चे का जीवन उसके परिवार से प्रारम्भ होता है। यदि परिवार के सदस्य आचरण करते हैं। तो बच्चा भी उनका अनुसरण करेगा। परिवार के बाद बच्चा अपने समाज एवं स्कूल से सीखता है। उसके साथियों का आचरण खराब होगा, तो उससे भी प्रभावित होने की पूरी सम्भावना बनी रहेगी। यदि शिक्षक का आचरण गलत है, तो भला बच्चे कैसे सही हो सकते हैं। इसलिए आवश्यक है कि हम अपने आचरण में सुधार लाकर स्वयं अनुशासित रहते हुए बाल्यकाल से ही बच्चों में अनुशासित रहने की आदत डालें। वही व्यक्ति अपने जीवन में अनुशासित रह सकता है, जिसे बाल्यकाल में ही अनुशासन की शिक्षा दी गई हो। बाल्यकाल में जिन बच्चों पर उनके माता–पिता लाड़–प्यार के कारण नियंत्रण नहीं रख पाते, वही बच्चे आगे चलकर गलत रास्ते पर चल पड़ते हैं एवं अपने जीवन में कभी सफल नहीं होते। अनुशासन के अभाव में कई प्रकार की बुराइयाँ समाज में अपनी जड़े जमा लेती हैं। नित्य–प्रति होने वाले छात्रों के विरोध–प्रदर्शन, परीक्षा में नकल, शिक्षकों से बदसलूकी अनुशासनहीनता के ही उदाहरण हैं। इसका दुष्परिणाम उन्हें बाद में जीवन की असफलताओं के रूप में भुगतना पड़ता है, किन्तु जब तक वे समझते हैं, तब तक देर हो चुकी होती है।

विद्या अर्जित करने के लिए विद्यार्थियों को अपने शिक्षकों के निर्देशों का अनुसरण करना पड़ता है। यदि कोई संगीत में निपुण होना चाहता है, तो उसे नियमित रूप से इसका अभ्यास करना ही पड़ेगा। स्वस्थ बनने के लिए व्यक्ति को नियमित रूप से शारीरिक व्यायाम करने के साथ–साथ अपने आहार–व्यवहार का भी ध्यान रखना पड़ता है। यदि मनुष्य अपने खान–पान का ध्यान न रखे, तो उसका शरीर भी उसका साथ नही देता और अनेक प्रकार की बीमारियों के कारण उसे कई प्रकार के कष्टों को भोगना पड़ता है।

किसी मनुष्य की व्यक्तिगत सफलता में भी उसके अनुशासित जीवन की भूमिका महत्त्वपूर्ण होती है। जो छात्र अपना प्रत्येक कार्य नियम एवं अनुशासन का पालन करते हुए सम्पन्न करते हैं, वे अपने अन्य साथियों से न केवल श्रेष्ठ माने जाते हैं, अपितु सभी के प्रिय भी बन जाते हैं। महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानन्द, सुभाष चन्द्र बोस, लोकमान्य बालगंगाधर तिलक, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, दयानन्द सरस्वती जैसेः– महापुरूषों का जीवन अनुशासन के कारण ही समाज के लिए उपयोगी और हम सबके लिए प्रेरणा–स्रोत बन सका। रॉय स्मिथ ने ठीक ही कहा है ''अनुशासन वह निर्मल अग्नि है, जिसमें प्रतिभा, क्षमता में रूपान्तरित हो जाती है।''

किसी भी राष्ट्र की प्रगति तभी हो सकती है, जब उसके नागरिक अनुशासित हों। यदि हम चाहते हैं कि हमारा समाज एवं राष्ट्र प्रगति के पथ पर निरन्तर अग्रसर रहे, तो हमें अनुशासित रहना ही पड़ेगा, क्योंकि जब हम स्वयं अनुशासित रहेंगे, तभी किसी दूसरे को अनुशासित रख सकेंगे। अनुशासन ही देश को महान् बनाता है, यह कोई अतिश्योक्ति नहीं, बल्कि वास्तविकता है। देश का नागरिक होने के नाते प्रत्येक व्यक्ति का देश के प्रति कुछ कर्त्तव्य होता है, जिसका पालन अनुशासित होकर ही किया जा सकता है। अतः हम सभी देशवासियों को जीवन में अनुशासन को महत्व देते हुए कर्त्तव्य–पथ पर निष्ठापूर्वक चलने और देश की सेवा करने का संकल्प लेना होगा, तभी हम सच्चे अर्थो में अपनी मातृभूमि और भारत माता का कर्ज चुका पाएँगे। ■

एक भारत - श्रेष्ठ भारत

विनोद कुमार एस.एस
स्पे. ग्रेड लेखाकार, उद्योगमंडल यूनिट

किसी भी राष्ट्र के लिए सबसे ज़रूरी है उस देश की पहचान और उस देश की समृद्धि। हमारा भारत देश भी अखंड है और विश्व में श्रेष्ठ है। हमारे देश में विभिन्न धर्म और समुदाय के लोग रहते हैं। इसके बावजूद हमारे देश में लोगों के बीच एकता और एक दूसरे के प्रति सम्मान की भावना देखने को मिलती है।

देश को एक करने वाले सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती पर एकता दिवस के रूप में लागू किया है। इस पहल का मुख्य उद्देश्य है देश में लोगों की एकता को जोड़ें रखना और देश के अलग–अलग राज्यों की संस्कृति और विरासत को एक विशेष पहचान देना है।

राष्ट्रीय एकता दिवस, 31 अक्टूबर (सरदार वल्लभभाई पटेल के जन्मोत्सव) अवसर पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने एक योजना के बारे में बात की। इस योजना का नाम "एक भारत श्रेष्ठ भारत" हैं जो निकट भविष्य में देश की संस्कृति और परंपरा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से शुरु की जायेगी। प्रधानमंत्री ने ये भी घोषणा की कि भारत की सरकार देश के विभिन्न भागों में सांस्कृतिक संबंधों को बढ़ावा देने के लिये एक नई पहल आरंभ करेगी। ये विभिन्न राज्यों में रह रहे लोगों के बीच आपसी संबंधों को बढ़ावा देने के लिये भी लोगों को लोगों से जोड़ेगा।

इस पहल के अंतर्गत पारंपरिक आधार पर हर साल देश के एक राज्य को दूसरे राज्य से जोड़ने की योजना निश्चित गयी है। जिसमें एक राज्य दूसरे राज्य की समृद्ध विरासत को लोकप्रिय कर सकते हैं। इसकी समृद्ध विरासत को विभिन्न कार्यक्रमों जैसे अपने राज्य में साहित्यिक आयोजन, बुक फेस्टिवल, फूड फेस्टिवल, सॉन्ग फेस्टिवल्स, पर्यटन आदि के प्रयोग से प्रदर्शित किया जा सकेगा। इस तरह, एक राज्य दूसरे राज्य से जुड़ेगा और अपने राज्य की धरोहर को बढ़ावा देगा। इस तरह पूरे देश में लोग विभिन्न राज्यों की संस्कृति, परंपराओं और तौर–तरीकों के बारे में जानेंगे। ये लोगों के बीच आपसी समझ और संबंधों के साथ ही भारत में एकता और अखंडता को भी बढ़ावा देगा।

सरकार की एक पहल

भारत देश के प्रधान मंत्री नरेन्द्र मोदी इस योजना को एक पहल के रूप में लागू किया है। इस पहल का शुभारंभ 31 मार्च 2005 को सरदार वल्लभ भाई पटेल की 140वीं जन्म जयंती पर किया गया था। इस पहल का उद्देश्य देश के सभी नागरिकों को एक समूह में बांधे रखना है ताकि लोगों के बीच में शांति और निरपेक्षता बनी रहे।

एक भारत श्रेष्ठ भारत के संबंधित कुछ तथ्य

देश में इस पहल को लागू किया गया है और इस पहल/योजना के कुछ उद्देश्य भी निर्धारित किये गए हैं। भारत देश भौगोलिक स्थिति से काफी बडा है और फैला हुआ है। इसी कारण से इस योजना के कुछ बिंदु पहले से निर्धारित हैं जो इस प्रकार हैः–

- इस योजना को सरदार वल्लभ भाई पटेल की जन्म जयंती पर लागू किया गया है, जिसके मुख्य उद्देश्य देश में सामाजित और धार्मिक रूप से एकता बनाये रखना है। इसके साथ ही देश के विभिन्न हिस्सों की विरासत और विभिन्न राज्यों के मध्य सांस्कृतिक संबंधों को भी बढ़ावा देना है।

- इस योजना का एक उद्देश्य यह है कि लोग एक दूसरे राज्य

की संस्कृति और परंपरा का ज्ञान लेंगे ताकि वे देश की विभिन्न संस्कृतियों को समझ सकें।

- हमारे देश की विशेषता अखंडता में एकता है। इसी मुख्य उद्देश्य से इस पहल को लागू किया है। देश की सरकार द्वारा पूरे देश में सद्भाव और एकता को मजबूत करना हैं ताकि लोग एक दूसरे राज्य की संस्कृति, कला और एकता को समझ सकें।

- यह एक ऐसा प्रयास है, जिससे पूरे देश को आपस में एक दूसरे से जोड़े रखना है।

लोगों में राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना

हमारा भारत देश विश्व में सबसे महान माना जाता है। विश्व में भारत विश्वगुरू के रूप में ही जाना जाता है। भारत देश का इतिहास भी काफी प्राचीन माना जाता है। कहते है कि मानव की उत्पत्ति भी इसी देश से हुई थी। हमारा देश अखंडता में एकता का प्रतीक है, यही हमारे देश की विशेषता है, इसलिए हमारा देश एक भारत श्रेष्ठ भारत कहलाता है।

देश में लागू इस पहल के अंतर्गत देश के अन्य राज्यों को एक दूसरे से पारंपरिक और समाजिक स्तर पर जोड़ रखना है। ऐसे हम यानी देश के नागरिक और देश की सरकार एक दूसरे राज्यों, विरासत और संस्कृति को लोकप्रिय कर सकेंगे। अन्य राज्यों के संगीत, फेस्टिवल और विरासत को एक दूसरे से जोड़ा जा सके।

निष्कर्ष

एक भारत श्रेष्ठ भारत, इस पहल के माध्यम से लोग के मध्य एकता बढ़ावा देना है। इसके साथ ही देश में एक दूसरे राज्यों की संस्कृति और विरासत को लोकप्रिय बनाना है। देश के अन्य राज्यों की संस्कृति, लोक गीत, संगीत और त्योहारों को दूसरे राज्यों में लोकप्रिय बनाना भी इस पहल का उद्देश्य है। ■

एक भक्त को कैसा होना चाहिए

प्रकाश सिंह सौन
प्रचालक श्रेणी–II, निगमित कार्यालय

मेरा मतलब यह नहीं है की हम परमात्मा के गुलाम हैं। वैसे तो एक अर्थ में हम उसके गुलाम ही हैं। क्योंकि यह दुनिया उसी की तो है, बस उसने हमें गुलामी की जंजीरे नहीं पहना रखी हैं इतना ही फर्क है। उसने हमें आज़ाद छोड़ रखा है।

प्रस्तुत कहानी उन भक्तो के लिए हैं जो भक्ति में विश्वास रखते हैं।

यह उस समय की बात हैं जब राजा–महाराजा सेवा के लिए गुलाम ख़रीदा करते थे। एक बार राजा हजरत बलख अपने नगर के बाजार में निकलें, वहां उन्होंने बहुत से गुलाम देखे फिर उन्होंने उनमें से एक गुलाम खरीदा और उसे राज–महल में ले आए।

राजा ने अपनी स्वाभाविक उदारता से गुलाम से पूछा – ''तेरा नाम क्या है ?''

''जिस नाम से आप मुझे पुकारें'' – गुलाम ने उत्तर दिया।

राजा ने उसी उदारता के साथ पुनः गुलाम से पूछा – ''

तू क्या खायेगा ?''

गुलाम ने उत्तर दिया – जो आप खिलायें।

राजा ने फिर पूछा – तुझे कपडे कैसे पंसद है ?

गुलाम ने विनम्रता से उत्तर दिया – ''जो आप पहना दें''।

राजा ने पूछा – तू क्या करेगा ?

''जो आप कराएं'' – गुलाम ने स्वाभाविक नम्रता से कहा।

राजा ने पूछा – ''तू क्या चाहता हैं ?''

गुलाम ने विनम्रता से उत्तर दिया – ''हुजूर गुलाम की अपनी चाह क्या''

हजरत बलख तख्त से उतर आये और उसे गले लगाकर बोले – ''तुम मेरे उस्ताद हो। तुमने मुझे सिखा दिया कि प्रभु के सेवक को कैसा होना चाहिए।''

इस कहानी से हमें यह गहन शिक्षा मिलती हैं की हमें हमारे परमात्मा के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। यह संसार सब उसी का है और हम उसी की नगरी में रहकर अपना हुक्म चलाते हैं, कहते हैं ऐसा होना चाहिए था, यह गलत है, वह बुरा है, हम पर थोड़ा सा संकट आते ही हम भला–बुरा कहना शुरू कर देतें हैं। हमें भी परमात्मा के समक्ष नतमस्तक रहना चाहिए। एक भक्त को इस गुलाम की तरह होना चाहिए वही सच्चा भक्त होगा। शिकायत नहीं जो मिले, जो दें वही स्वीकार है। ■

आइये मनायें – छठ महापर्व

डॉ0 बीरबल झा
शिक्षाविद् व चेयरमैन–मिथिलालोक फाउंडेशन

प्रकृति–पूजा उपासना का महापर्व छठ के पीछे जो दर्शन है, वह विश्वव्यापी है। शायद यही कारण है कि इस पर्व के प्रति लोगों में आस्था आज न सिर्फ देश में, बल्कि विदेशों में भी देखी जाती है। दरअसल, छठ पर्यावरण संरक्षण, रोग–निवारण व अनुशासन का पर्व है और इसका उल्लेख आदिग्रंथ ऋग्वेद में मिलाता है।

दीपावली पर लोग अपने चारों ओर की सफाई करते हैं। तो छठ पर नदी–तालाब, पोखर, जलाशयों आदि की सफाई करते हैं। जलाश्यों की सफाई की यह परंपरा मगध, मिथिला और उसके आसपास के क्षेत्र में प्राचीन काल से चली आ रही है।

छठ जलाशयों की सफाई का भी पर्व है। आज स्वच्छ भारत अभियान और नमामि गंगे योजना प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की मनपसंद परियोजनाओं में शुमार हैं। पिछले कुछ सालों से मोदी सरकार स्वच्छता अभियान और गंगा की सफाई को लेकर तेज मुहिम चला रही हैं। इन दोनों कार्यक्रमों का लोक–आस्था का पर्व छठ से सैद्धांतिक व व्यावहारिक ताल्लुकात हैं।

सैद्धांतिक रूप से मोदी सरकार का गंगा सफाई योजना का जो मकसद है, उसे बिहार, पूर्वी उत्तर प्रदेश और झारखंड में लोग सदियों से समझते है और छठ से पहले जलाशयों की सफाई करते हैं।

व्यावहारिक पक्ष की बात करें तो प्रधानमंत्री ने स्वच्छ भारत की जो परिकल्पना की है, वह जनभागीदारी के बिना संभव नहीं है। नीति व नियमों से किसी अभियान में लोगों को जोड़ना उतना आसान नहीं होता है, जितना कि आस्था व श्रद्धा से खासतौर से जिस देश में धर्म लोगों की जीवन–पद्धति हो, वहां धार्मिक विश्वास का विशेष महत्व होता है।

छठ पूजा में सूर्य की उपासना की जाती है। साथी ही, कठिन व्रत व नियमों का पालन किया जाता है। इस तरह यह प्रकृति पूजा के साथ–साथ शारीरिक, मानसिक और लोकाचार में अनुशासन का भी पर्व है। कार्तिक शुल्क पक्ष की षष्ठी व सप्तमी को दो दिन मनाए जाने वाले त्योहार के लिए व्रती महिला चतुर्थी से ही शुद्धि के विशेष नियमों का पालन करती है। पंचमी को खरना व षष्ठी को संध्या अर्घय और सप्तमी को प्रातः अर्घय देकर पूजोपासना का समापन होता है ।

छठ में कमर तक पानी में खड़े होकर सूर्य का ध्यान करने की प्रथा है। जल–चिकित्सा में यह 'कटि स्नान' कहलाता है। इससे शरीर के कई रोगों का निवारण होता है। नदी–तालाब व अन्य जलाशयों के जल में देर तक खड़े रहने से कुष्ठ रोग समेत कई चर्म रोगों का भी उपचार हो जाता है।

हम जानते हैं कि धरती पर वनस्पति व जीव–जंतुओं को सूर्य से ही ऊर्जा मिलती है। सूर्य की किरणों से ही विटामिन–डी मिलती है। पश्चिम के देशों में लोगों को सूर्य की रोशनी पर्याप्त नहीं मिलने से उनमें विटामिन–डी की कमी पाई जाती है और उन्हे इस विटामिन की कमी से होने वाले रोग का खतरा बना रहता है। इसलिए रोग से बचने के लिए लोग दवाओं से विटामिन–डी की अपनी जरूरत पूरी करते हैं।

भारत की अक्षांशीय स्थिति ऐसी है कि देश के हर भूभाग में सूर्य का भरपूर प्रकाश मिलता है। सूर्य को इसलिए भी रोगनाशक कहा जाता है। क्योंकि जिस सूर्य की किरणों जिस घर में सीधी पहुंचती है, उस घर में कीड़े–मकोड़ों का वास नहीं होता। यही कारण है कि यहां लोग पूर्वाभिमुख घर बनाना पसंद करते हैं।

छठ का त्योहार जाड़े की शुरूआत से पहले मनाया जाता है। जाहिर है, जाड़े में सूर्योष्मा का महत्व बढ़ जाता है। इसलिए सूर्य की उपासना कर लोग उनसे शीत ऋतु में कड़ाके की ठंड से बचाने का निवेदन करते हैं। वही, यह जल संरक्षण का भी पर्व है।

प्रकृति पूजा हिन्दू धर्म की संस्कृति है। इसमें यह परंपरा रही है कि जिस जीवन से या जीवेतर वस्तु से हम उपकृत होते हैं, उसके प्रति अपना आभार व्यक्त करते हैं। इसीलिए हमारे यहां नदी, तालाब, वृक्ष आदि की पूजा की परंपरा है। ऋग्वेद में भी सूर्य, नदी और पृथ्वी को देवी–देवताओं की श्रेणी में रखा गया है।

हिन्दू धर्म अपने आप में एक दर्शन है, जो हमें जीवन–शैली व जीना सिखलाता है। छठ आस्था का महापर्व होने के साथ–साथ जीवन–पद्धति की सीख देने वाला त्योहार है, जिसमें साफ–सफाई, शुद्धि व पवित्रता का विशेष महत्व होता है। इसलिए लेखक का मानना है कि लोक–आस्था के इस महापर्व को स्वच्छता का राष्ट्रीय त्योहार घोषित किया जाना चाहिए।

साथ ही, ऊर्जा संरक्षण, जल संरक्षण, रोग–निवारण व अनुशासन के इस पर्व को पूरे भारत में मनाया जाना चाहिए। इससे जनकल्याण के कार्यो के प्रति लोगों की दिलचस्पी बढ़ेगी और स्वच्छ भारत परिकल्पना को साकार करने में मदद मिलेगी।

छठ को राष्ट्रीय पर्व घोषित किए जाने से देश के कोने–कोने में फैले जलाशयों की सफाई के प्रति लोगों में जागरूकता आएगी और इससे जल–संरक्षण अभियान को भी गति मिलेगी। लोक–अस्था के इस पर्व के महत्व को स्वीकार करते हुए दिल्ली सरकार ने अपने बजट में छठ–पूजा के लिए विशेष व्यवस्था की है।

दिल्ली के अलावा, मुंबई, सूरत, अहमदाबाद समेत देश के विभिन्न महानगरों में पूर्वांचली प्रवासी धूमधाम से छठ मनाते हैं। यही नहीं, मॉरीशस, फिजी व अमेरिका समेत कई देशों में भी पूर्वांचली भारतीय प्रवासी छठ मनाने लगे हैं, जिसे देखकर विदेशी लोगों में इस पर्व के प्रति आकर्षण बढ़ा है।

प्रकृति पूजोपासना के पर्व छठ को पर्यावरण संरक्षण से जोड़ते हुए केन्द्र राज्य सरकारों की ओर से और श्रद्धालुओं की मदद से देश के विकास में पर्व का योगदान सुनिश्चित करना एक सकारात्मक पहल होगा। ■

मौत पीछा नहीं छोड़ती

सुखचंद
कनिष्ठ सहायक, निगमित कार्यालय

एक बादशाह ने एक दिन सपने में अपनी मौत को आते हुए देखा। उसने सपने में अपने पास खड़ी एक छाया देख, उससे पूछा–'तुम कौन हो? यहां क्यों आयी हो?'

उस छाया या साये ने उत्तर दिया–मैं तुम्हारी मौत हूं और मैं कल सूर्यास्त होते ही तुम्हें लेने तुम्हारे पास आऊंगी।

'बादशाह ने उससे पूछना भी चाहा कि क्या बचने का कोई उपाय है, लेकिन वह इतना अधिक डर गया था कि वह उससे कुछ भी न पूछ सका। तभी अचानक सपना टूट गया और वह छाया भी गायब हो गयी।

आधी रात को ही उसने अपने सभी अक्लमंद लोगों को बुलाकर पूछा–इस स्वप्न का क्या मतलब है, यह मुझे खोजकर बताओ।'

वे सभी लोग भागे–भागे अपने–अपने घर गए और वहां से अपने–अपने शास्त्र साथ लेकर लौटे। वे बड़े–बड़े मोटे पोथे थे। उन लोगों ने उन्हें उलटना–पलटना शुरू कर दिया और फिर उन लोगों में चर्चा–परिचर्चा के दौरान बहस छिड़ गयी। वे अपने–अपने तर्क देते हुए आपस में ही लड़ने–झगड़ने लगे। उन लोगों की बातें सुनकर बादशाह की उलझन बढ़ती ही जा रही थी। वे किसी एक बात पर सहमत ही नहीं हो पा रहे थे। वे लोग विभिन्न पंथों के थे। जैसा कि बुद्धिमान लोग हमेशा होते हैं, वे स्वयं भी स्वयं के न थे। उनमें एक हिन्दू, दूसरा मुसलमान और तीसरा ईसाई था। वे अपने साथ अपने–अपने शास्त्र लाये थे और उन पोथों को उलटते–पलटते, वे बादशाह की समस्या का हल खोजने की कोशिशों पर कोशिशें कर रहे थे। आपस में तर्क–वितर्क करते–करते वे जैसे पागल हो गये। बादशाह बहुत अधिक व्याकुल हो उठा क्योंकि सूरज निकलने लगा था और जिस सूर्य का उदय होता है, वह अस्त भी होता है क्योंकि उगना ही वास्तव में अस्त होना है। अस्त होने की शुरुआत हो चुकी है। यात्रा शुरू हो चुकी थी और सूर्य डूबने में सिर्फ बारह घंटे बचे थे।

उसने उन लोगों को टोकने की कोशिश की, लेकिन उन लोगों ने कहा–'आप कृपया बाधा उत्पन्न न करें। यह एक बहुत गम्भीर मसला है और हम लोग हल निकालकर रहेंगे।'

तभी एक बूढ़ा आदमी–जिसने बादशाह की पूरी उम्र खिदमत की थी–उसके पास आया और उसके कानों में फुसफुसाते हुए कहा–'यह अधिक अच्छा होगा कि आप इस स्थान से कहीं दूर भाग जायें क्योंकि ये लोग कभी किसी निष्कर्ष पर पहुंचेंगे नहीं और तर्क–वितर्क ही करते रहेंगे और मौत आ पहुंचेगी। मेरा आपको यही सुझाव है कि जब मौत ने आपको चेतावनी दी है, तो अच्छा यही है कि कम–से–कम आप इस स्थान से कहीं दूर सभी से पीछा छुड़ाकर चले जाइए। आप कहीं भी जाइएगा, बहुत तेजी से।'

यह सलाह बादशाह को अच्छी लगी–'यह बूढ़ा बिल्कुल ठीक कह रहा है। जब मनुष्य और कुछ नहीं कर सकता, वह भागने का, पीछा छुड़ाकर पलायन करने का प्रयास करता है।'

बादशाह के पास एक बहुत तेज़ दौड़ने वाला घोड़ा था। उसने घोड़ा मंगाकर बुद्धिमान लोगों से कहा–'मैं तो अब कहीं दूर जा रहा हूं और यदि जीवित लौटा, तो तुम लोग तय कर मुझे अपना निर्णय बतलाना, पर फिलहाल तो मैं अब जा रहा हूं।'

वह बहुत खुश–खुश जितनी तेजी से हो सकता था, घोड़े पर उड़ा चला जा रहा था क्योंकि आखिर यह जीवन और मौत का सवाल था। वह बार–बार पीछे लौट–लौटकर देखता था कि कहीं वह साया तो साथ नहीं आ रहा है, लेकिन वहां स्वप्न वाले साये का दूर–दूर तक पता न था। वह बहुत खुश था, मृत्यु पीछे नहीं आ रही थी और उससे पीछा छुड़ाकर दूर भागा जा रहा था। अब धीमे–धीमे सूरज डूबने लगा। वह अपनी राजधानी से कई सौ मील दूर आ गया था। आखिर एक बरगद के पेड़ के नीचे उसने अपना घोड़ा रोका।

घोड़े से उतरकर उसने उसे धन्यवाद देते हुए कहा–वह तुम्हीं हो, जिसने मुझे बचा लिया।'

वह घोड़े का शुक्रिया अदा करते हुए यह कह ही रहा था कि तभी अचानक उसने उसी हाथ को महसूस किया, जिसका अनुभव उसने ख्वाब में किया था। उसने पीछे मुड़कर देखा, वही मौत का साया वहां मौजूद था। मौत ने कहा–मैं भी तेरे घोड़े का शुक्रिया अदा करती हूं, जो बहुत तेज दौड़ता है। मैं सारे दिन इसी बरगद के पेड़ के नीचे खड़ी तेरा इन्तजार कर रही थी और मैं चिन्तित थी कि तू यहां तक आ भी पायेगा या नहीं क्योंकि फासला बहुत लंबा था। लेकिन तेरा घोड़ा भी वास्तव में कोई चीज है। तू ठीक उसी वक्त पर यहां आ पहुंचा है, जब तेरी जरूरत थी।'

तुम कहां जा रहे हो? तुम कहां पहुंचोगे? सारी भागदौड़ और पलायन आखिर तुम्हें बरगद के पेड़ तक ही ले जायेगी। और जैसे ही तुम अपने घोड़े या कार को धन्यवाद दे रहे होगे, तुम अपने कंधे पर मौत के हाथों का अनुभव करोगे। मौत कहेगी–'मैं एक लम्बे समय से तुम्हारी ही प्रतीक्षा कर रही थी। अच्छा हुआ, तुम खुद आ गये।' और प्रत्येक व्यक्ति ठीक समय पर ही आता है। वह एक क्षण भी नहीं खोता। प्रत्येक व्यक्ति ठीक वक्त पर ही पहुंचता है, कोई भी कभी देर लगाता ही नहीं। ■

खुद को पहचानो

मोनिका शर्मा
बाह्य साधनः वरिष्ठ सहायक (सूचना प्रौद्योगिकी), निगमित कार्यालय

एक जंगल में एक कौवा रहता था। वह बड़ा ही खुश और मस्ती में रहता। पर एक बार उसे जंगल में एक बहुत ही सुंदर पक्षी दिखाई दिया। वह तुरंत उस पक्षी के पास गया। उस पक्षी का रंग सफेद था।

कौए ने इस पक्षी से पूछा – तुम्हारा नाम क्या है ?

पक्षी ने मुस्कुरा कर कहा – हंस।

कौआ बड़ा खुश हुआ और खुश होकर बोला – यार! तुम तो बहुत सुंदर हो और तुम्हारा रंग भी सफेद है। तुम्हे तो जिंदगी में बड़ा मजा आता होगा।

हंस ने कहा – नहीं, मुझसे ज्यादा भी कोई और सुंदर है।

अब कौआ हैरान हो गया और कहा – वो कौन है जो तुमसे भी सुंदर है ?

हंस ने कहा – तोता।

कौआ वहां से तुरंत उड़कर तोते के पास पहुंचा अब कौआ उसे देखकर हैरान हो गया। तोते के गले का रंग लाल और तोता हरे रंग का था।

कौए ने उससे कहा – यार! तुम तो बड़े खुश रहते होगे। तुम इतने शानदार जो दिखते हो।

तोता मायूस हुआ और कहा – नहीं, मुझसे भी शानदार और सुंदर तो मोर है।

कौआ वहां से उड़कर मोर को ढूंढने लगा। उसने कई दिनों तक मोर को ढूंढा लेकिन मोर उसे नहीं मिला, लेकिन कुछ दिन बाद उसे पता चला कि मोर शहर के चिड़ियाघर में है। कौआ चिड़ियाघर पहुंचा और उसने मोर को देखा की वह एक बड़े से पिंजरे में बंद है और बहुत से लोग इसके साथ फोटो खिंचवा रहे थे। यह देखकर कौए को थोड़ी जलन हुई।

कौआ मोर के पास गया और कहा – यार! तुम्हारी जिंदगी में तो मजे ही मजे हैं।

मोर उदास हुआ और कहा – किस बात के मजे, भले ही दिखने में शानदार और सुंदर हूं लेकिन मेरी पूरी जिंदगी इस बंद पिंजरे में ही गुजरने वाली है।

मोर ने कौए से कहा – यार तुम तो बहुत किस्मत वाले हो। खुले आसमान में जहां चाहे वहां जा सकते हो और अपनी जिंदगी अपनी मर्जी से जी सकते हो।

दोस्तो एक बात हमेशा याद रखना की जिंदगी में कभी भी अपनी तुलना किसी से मत करना वरना ऐसा जरूर होगा की तुलना करके उसके जैसा तो कर नहीं पाओगे और फिर तुम्हारे पास भी वक्त नहीं होगा खुद का कुछ कर पाने की।

अजय कपिला
वरिष्ठ सहायक (विशेष श्रेणी), निगमित कार्यालय

झरने का पानी

बुद्ध जब वृद्ध हो गये थे, तब एक दोपहर एक वन में एक वृक्ष तले विश्राम को रुके थे। उन्हें प्यास लगी तो आनंद पास की पहाड़ी झरने पर पानी लेने गया था। पर झरने से अभी–अभी गाड़ियां निकली थी और उसका पानी गंदा हो गया था। कीचड़ ही कीचड़ और सड़े पत्ते उसमें उभर कर आ गये थे। आनंद उसका पानी बिना लिए लौट आया। उसने बुद्ध से कहा, 'झरने का पानी निर्मल नहीं है, मैं पीछे लौट कर नदी से पानी ले आता हूं।' नदी बहुत दूर थी। बुद्ध ने उसे झरने का पानी ही लाने को वापस लौटा दिया। आनंद थोड़ी देर में फिर खाली लौट आया। पानी उसे लाने जैसा नहीं लगा। पर बुद्ध ने उसे इस बार भी वापस लौटा दिया। तीसरी बार आनंद जब झरने पर पहुंचा, तो देखकर चकित हो गया। झरना अब बिलकुल निर्मल और शांत हो गया था, कीचड़ बैठ गयी थी और जल बिलकुल निर्मल हो गया था।

यही स्थिति हमारे मन की भी है। जीवन की गाड़ियां उसे विक्षुब्ध कर जाती हैं, मथ देती हैं। पर कोई यदि शांति और धीरज से उसे बैठा देखता ही रहे, तो कीचड़ अपने आप नीचे बैठ जाती है और सहज निर्मलता का आगमन हो जाता है। ■

अशोक
बाह्य साधनः वरिष्ठ सहायक, निगमित कार्यालय

तुम कभी न भर पाओगे

एक साधु ने एक सम्राट के द्वार पर दस्तक दी। सुबह का समय था और सम्राट बगीचे में घूमने निकला था। संयोग की बात सामने ही सम्राट मिल गए।

साधु ने अपना पात्र उसके सामने कर दिया सम्राट ने कहा – ''क्या चाहते हो ?''

साधु ने कहा – ''कुछ भी दे दो परन्तु शर्त एक है मेरा पात्र पूरा भर जाए। मैं थक गया हूँ, यह पात्र भरता ही नहीं। सम्राट हंसने लगा और कहा तुम पागल जान पड़ते हो। पागल न होते तो, साधु ही क्यों होते, यह छोटा सा पात्र भरता नहीं ?''

फिर सम्राट ने अपने मंत्री से कहा – ''लाओ स्वर्ण–अशर्फियों से भर दो, इस साधु का मुंह सदा के लिए बंद कर दो।

साधु ने कहा – मैं फिर याद दिला दूं कि भरने की कोशिश अगर आप करते हैं तो यह शर्त है की जब तक भरेगा नहीं पात्र मैं हटाऊंगा नहीं।''

सम्राट ने कहा – तू घबरा मत पागल भर देंगे। सोने से भर देंगे, हीरे जवाहरात से भर देंगे। लेकिन जल्द ही सम्राट को अपनी भूल समझ में आ गई अशर्फियां डाली गईं और खो गईं। हीरे डालें गए और खो गए। लेकिन सम्राट भी जिद्दी था और फिर साधु से हार माने यह भी तो जंचता न था। सारी राजधानी में खबर पहुंच गई हजारों लोग इकट्ठे हो गए।

सम्राट अपना खजाना उलीचता गया। उसने कहा – ''आज दांव पर लग जाना हैं सब डूबा दूंगा मगर उसका पात्र भरूंगा। शाम हो गई। सूरज ढलने लगा। सम्राट के कभी खाली न होने वाले खजाने खाली हो गए लेकिन पात्र नहीं भरा सो नहीं भरा।''

वह साधु के चरणों में गिर पड़ा और कहा – ''मुझे माफ़ कर दो। मेरी अकड़ मिटा दी अच्छा किया। मैं तो सोचता था यह अक्षत खजाना है, लेकिन यह तेरे छोटे से पात्र को भी न भर पाया। बस अब एक ही प्रार्थना है मैं तो हार गया मुझे क्षमा कर दो। मैंने व्यर्थ ही तुझे आश्वासन दिया था भरने का। मगर जाने से पहले एक छोटी सी बात मुझे बताते जाओ। दिन भर यही प्रश्न मेरे मन में उठेगा। यह पात्र क्या है, किस जादू से बनाया है। साधु हंसने लगा उसने कहा किसी जादू से नहीं 'इसे आदमी के हृदय से बनाया गया है, न आदमी का हृदय भरता है न यह पात्र भरता है।

इस जिंदगी में कोई और चीज तुम्हे छका न सकेगी। तुम्हारा पात्र खाली का खाली रहेगा। कितना ही धन डालो इसमें खो जाएगा। कितना ही पद डालो इसमें खो जायेगा, पात्र खाली का खाली ही रहेगा। भरता तो आदमी तो केवल परमात्मा से है। क्योंकि अनंत है हमारी प्यास, अनन्त है हमारा परमात्मा, तो अनंत को अनंत ही भर सकेगा। ■

भारत के भविष्य

आमोद–प्रमोद

सजल अग्रवाल
सहायक वित्त प्रबन्धक, निगमित कार्यालय

आपने देखा होगा बच्चों को,
यूनिफार्म में सज–धज कर स्कूल जाते हुए।
हंसते, खेलते, झूमते और मुस्कुराते हुए।
लंच में पराठे, सैंडविच, आइसक्रीम खाते हुए।
छुट्टी होने पर हाथ हिलाते घर जाते हुए।
ये बच्चें भारत के भविष्य हैं।

आपने देखा होगा रियल्टी शोज में.....
बच्चों को नाचते–गाते हुए,
और नाना प्रकार के पुरस्कार पाते हुए।
परीक्षा में प्रथम स्थान पाते हुए,
और आपने देखा होगा
उनके माता–पिता को इतराते हुए।
ये बच्चें भी भारत के भविष्य हैं।

इन फूल से बच्चों को चहकते देखकर
आप भी खुश हो जाते होंगे।
और हों भी क्यों ना ?
इन बच्चों में आपको भी
भारत का सुनहरा भविष्य दिखता होगा।
ये बच्चें वाकई भारत के भविष्य हैं।

लेकिन क्या आपने देखा है ?
भारत के उस भविष्य को..
जो आज भी अंधकार में जी रहा है।
सड़क की धुल फांक रहा,
अपमान का जहर पी रहा है।

क्या आपने देखा है भारत के भविष्य को ?
होटलों में बर्तन मांजते हुए.....
रेलवे स्टेशनों पर जूठे प्लेट चाटते हुए.....
रेल के डब्बों में बूट पोलिश करते हुए....
और चौक चौराहों पर भीख मांगते हुए।

क्या आपने देखा है भारत के भविष्य को ??
कचरे के ढेर से प्लास्टिक और
पानी के गड्ढों से केकड़े चुनते हुए.....
और क्या देखा है आपने उन्हें
टूटे झोपड़े में लेटकर सुनहरे सपने बुनते हुए.....
क्या आपने देखा है भारत के भविष्य को??
गर्मी की लू में जलते हुए ...
और कंकपाती ठण्ड में
नंगे बदन दौड़ते हुए....

देखा होगा आपने भी !
लेकिन ध्यान नहीं दिया होगा।
या फिर आपको इन बच्चों में
भारत का भविष्य नही दिखा होगा !

कितनी बार ये बच्चें आपके सामने भी आये होंगे !
कभी टकटकी लगाये तो कभी हाथ फैलाए होंगे !
पर क्या आपने कभी सोचा है कि
ये बच्चें भी भारत के भविष्य हैं ?

नहीं सोचा है तो सोचिये।
नहीं जाना है तो जानिए।
ये भी हैं भविष्य इस देश के,
इस बात को मानिये।
और मैं ये नहीं कहता....
अपना सर्वस्व इनको दीजिये।
लेकिन अगर जो बन पड़े,
इनके लिए कुछ कीजिए।

जिससे कि ये कुछ बन सकें
कुछ कर के भी दिखा सकें।
भारत के ये भविष्य है...
दुनिया को ये बता सकें। ■

सच्चा दोस्त

कान्ता
वरिष्ठ सहायक, निगमित कार्यालय

- अच्छा दोस्त सिर्फ मीठी–मीठी बातें ही नहीं कर सकता।
- अच्छे दोस्त का फर्ज है कभी–कभी कड़वा सच बोलकर अपनों को सावधान करता रहे।
- एक सच्चा दोस्त वह है जो आपकी कमजोरियों को जानने के बावजूद कभी भी गुस्से में आकर उसे बताकर आपको शर्मिंदा न करे।
- सच्चा दोस्त तब भी आपका दर्द समझ जाता है, जब आप दुनिया को यह दिखाने की कोशिश कर रहे होते हैं कि आप बिल्कुल ठीक–ठाक है।
- सच्चे दोस्त गलती करने पर फौरन सलाह देता है और आपके पीछे हमेशा आपका बचाव करता है।
- सच्चे दोस्त की पहचान संकट में दो लोग अच्छे दोस्त नजर आते हैं लेकिन एक की सफलता दूसरे को उससे दूर कर देती है।
- जरूरी नहीं कि रूचि और सोचने का तरीका आपसे मिलता–जुलता हो, जरूरी है वह आपको अच्छी तरह से समझता हो। दोनों दोस्त जानते हैं कि वो एक दूसरे को बदल नहीं सकते और न ही ऐसा करने की कोशिश करते हैं। ■

जाने के बाद

समय का मूल्य समझ आता है,
उसके गुजर जाने के बाद।

पत्तों का मूल्य समझ आता है,
पतझड़ का मौसम आने के बाद।

दोस्ती का मूल्य समझ आता है,
अपनों से दुश्मनी हो जाने के बाद।

सुख की कीमत समझ आती है,
दु:खों में धर जाने के बाद।

जीवन का मूल्य समझ आता है
मौत पास आ जाने के बाद।

इंसान की कीमत समझ आती है,
उसके दूर चले जाने के बाद। ■

अनजान मित्रता

डॉ0 विजयलक्ष्मी एस.
उप प्रबंधक (राजभाषा), उद्योगमंडल यूनिट

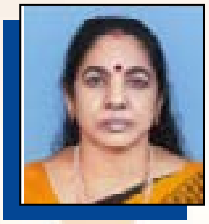

अनजान मित्रता नामक इस कविता सड़क को पार करते समय मेरे और तुम्हारे मन में उभर आनेवाली मित्रता है। इस में सड़क पार करने के लिए प्रतीक्षा करने वालों में से एक तो नेता और सहयात्री उनके टीम के सदस्य हो जाते हैं। सुनो मेरी कल्पना और तुम्हारी कल्पना में जो जो अर्थ आएगा वही कल्पना करें:–

भीड़ भरी सड़क के किनारे खड़ी थी,
गाडियों की पंक्तियों को देखकर चकित थी
सोच करती थी– इधर से उधर तक कैसे जाऊं
असफल हो जाऊंगी इस समस्या के आगे अब।

भय लगा कैसे जाऊं उधर तक, मुझे जाना है
दुर्घटना के भय से चल न पायी आगे,
जब चारों ओर चकित होकर देखा,
सहारे हेतु तब मिला उस व्यक्ति को,
जो चार कदम आगे खड़ा हो।

मेरे मन में जोश भरा, मित्रता उभर आयी उससे
तन में गति आई, चली उस अनजान मित्र के पास
अनजान व्यक्ति उसी पल मेरा आत्म मित्र हो गया
हम एक साथ चले, पार किया सडक को शीध्र ही।
मेरा मित्र तो और किसी रास्ते पर गया।

साथ जो लोग, हमसे अनजान मित्रता पाया
वे भी गये दूर अपनी अपनी मर्जी से
जो मित्रता पाया, वही सड़क पर ही खोया गया। ■

नारी शक्ति

पिंकी
कनिष्ठ सहायक, बठिंडा यूनिट

कोमल को कमजोर न समझो,
एक शक्ति का नाम नारी है,

कभी वो माँ कभी वो बहन,
कभी वो नन्हीं बिटिया प्यारी है,

सह जाती वो हर गम सबका,
न देखती चोट कितनी गहरी है,

खुशियों के पल वो चार गुणा कर देती,
लेती सबकी जिम्मेदारी है,

हर क्षेत्र में करती वो पुरुषों की बराबरी,
अब नहीं वो अबला बेचारी है,

हद कदम पर देती वो तुमको मात,
आज की एक नारी चार नर पर भारी है,

हिल, निगमित कार्यालय में हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा जारी निर्देशों के अनुसार कार्यालय में दिनांक 14 सितम्बर, 2022 से 29 सितम्बर, 2022 तक हिंदी पखवाड़ा मनाया गया। राजभाषा विभाग द्वारा 14 सितंबर, 2022 को सूरत में आयोजित किए गए हिंदी दिवस एवं पुरस्कार वितरण समारोह के साथ ही पखवाड़े का शुभारंभ किया गया।

तत्पश्चात् पखवाड़े के दौरान विभिन्न गतिविधियों एवं प्रतियोगिताओं के आयोजन के माध्यम से सभी कार्मिकों को अपना अधिकाधिक कार्य हिन्दी में करने के साथ–साथ आयोजित प्रतियोगिताओं में अधिक से अधिक कार्मिकों को भाग लेने के लिए प्रेरित किया गया।

पखवाड़े के दौरान निम्नानुसार प्रतियोगिताओं एवं कार्यक्रमों का आयोजन किया गया :–

1. हिन्दी निबंध लेखन प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 16.09.2022 को किया गया, जिसमें 17 कार्मिकों ने भाग लिया।
2. हिन्दी कविता/नारा लेखन प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 19.09.2022 को किया गया, जिसमें 30 कार्मिकों ने भाग लिया।
3. हिन्दी मुहावरे एवं लोकोक्तियां प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 20.09.2022 को किया गया, जिसमें 29 कार्मिकों ने भाग लिया।
4. कार्मिकों के लिए हिन्दी टंकण अभ्यास का आयोजन दिनांक 21.09.2022 को किया गया, जिसमें 36 कार्मिकों ने भाग लिया।
5. हिन्दी ई–मेल लेखन प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 22.09.2022 को किया गया, जिसमें 30 कार्मिकों ने भाग लिया।
6. हिन्दी टिप्पण एवं मसौदा लेखन प्रतियोगिता आयोजन दिनांक 23.09.2022 को किया गया, जिसमें 24 कार्मिकों ने भाग लिया।
7. प्रश्न मंच प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 26.09.2022 को किया गया, जिसमें 15 कार्मिकों ने भाग लिया।
8. इस वर्ष कार्मिकों के बच्चों के लिए भी दो आयु वर्ग में ऑनलाइन माध्यम से हिन्दी गायन प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 25.09.2022 को किया गया, जिसमें दोनों वर्गों में कुल 14 प्रतिभागी बच्चों ने भाग लिया।

हिंदी पखवाड़े का समापन दिनांक 29.09.2022 को किया गया। हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह में निदेशक (वित्त), महाप्रबन्धक (मा.सं. एवं प्र.)–प्रभारी, उप महाप्रबन्धक (विपणन–बीज) के साथ–साथ अन्य वरिष्ठ अधिकारी तथा सभी कार्मिक उपस्थित थे। सहायक प्रबन्धक (राजभाषा) द्वारा हिन्दी पखवाड़े की रिपोर्ट प्रस्तुत की गई।

इसके पश्चात्, हिंदी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त तथा मूल रूप से हिन्दी में टिप्पण एवं मसौदा लेखन करने वाले सभी कार्मिकों को निदेशक (वित्त) एवं महाप्रबन्धक (मा.सं. एवं प्र.)–प्रभारी महोदय के कर–कमलों से वस्तु रूप में पुरस्कार/प्रोत्साहन वितरित किए गए।

इसके पश्चात् निदेशक (वित्त) महोदय का संभाषण हुआ। महोदय ने अपने संभाषण में कहा कि सहायक प्रबन्धक (राजभाषा) द्वारा पखवाड़े के दौरान आयोजित कार्यक्रमों की रिपोर्ट से ज्ञात हुआ है कि इस पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं/कार्यक्रमों में प्रतिभागिता कुल 195 रही। मुझे इस बात की अत्यन्त प्रसन्नता है कि हमारी कंपनी को इस वर्ष भी राजभाषा कार्यान्वयन के श्रेष्ठ निष्पादन के लिए राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से गौरवमयी कीर्ति पुरस्कार (प्रथम), हिन्दी सलाहकार समिति से प्रथम पुरस्कार तथा नराकास (उपक्रम–2), दिल्ली से भी अलग–अलग श्रेणियों में भी दो पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, यह हम सभी के लिए एक गौरवपूर्ण उपलब्धि है। आप सभी इसके लिए बधाई के पात्र हैं। सभी कार्मिकों ने इस पखवाड़े के दौरान आयोजित सभी कार्यक्रमों में उत्साह पूर्वक भाग लिया है। हमारे प्रधान कार्यालय में ही नहीं अपितु अन्य यूनिटें जो ''ख'' तथा ''ग'' क्षेत्र में स्थित हैं, में भी कार्मिकों को हिन्दी का पर्याप्त ज्ञान है। केन्द्रीय सचिवालय हिन्दी परिषद तथा विभिन्न नराकासों द्वारा आयोजित प्रतियोगिताओं में हमारे संस्थान के कार्मिकों को सदैव पुरस्कार मिलते रहे हैं, यह इस बात का प्रमाण है कि हिन्दी में कार्य करने में सभी रूचि लेते हैं। गत वर्षों में यूनिकोड, हिन्दी की–बोर्ड, लीला सॉफ्टवेयर, मशीन अनुवाद, ई–महाशब्दकोश, गूगल वॉइस टाइपिंग, कंठस्थ आदि जैसे विकसित हुए अनेक हिन्दी टूल्स का प्रयोग करके हिन्दी के कार्यान्वयन की गति में तेज़ी लाई जा सकती है। कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए समय–समय पर विभिन्न कार्यशालाएं भी आयोजित की जाती हैं, जिनमें हिन्दी में टिप्पण एवं प्रारूप लेखन करने तथा कंप्यूटर पर यूनिकोड पर हिन्दी में कार्य करने का प्रशिक्षण दिया जाता है। तथापि, राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने की दिशा में निरंतर प्रयास करने की आवश्यकता है। हम सभी की जिम्मेदारी है कि हम भारत सरकार, गृह मंत्रालय द्वारा जारी निर्देशों का पालन करते हुए वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को प्राप्त करने का पूरा प्रयास करें, क्योंकि यह हमारा नैतिक तथा संवैधानिक दायित्व है। कंपनी राजभाषा से संबंधित नियम, अधिनियमों/लक्ष्यों के प्रति पूर्णतः वचनबद्ध है तथा उनके अनुपालन हेतु सतत प्रयासरत है। निदेशक (वित्त) महोदय ने पखवाड़े के दौरान आयोजित की गई सभी प्रतियोगिताओं में सफलता प्राप्त सभी कार्मिकों को बधाई दी।

इसके पश्चात् महाप्रबन्धक (मा.सं. एवं प्र.)–प्रभारी महोदय ने अपने संभाषण में सभी उपस्थित कार्मिकों को अपना अधिक से अधिक कार्य हिन्दी में करने के लिए कहा तथा पुरस्कार प्राप्त सभी विजेताओं को बधाई दी। अंत में धन्यवाद ज्ञापन के साथ हिन्दी पखवाड़े का समापन हुआ। ■

हिल (इंडिया) लिमिटेड हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

हिल (इंडिया) लिमिटेड के प्रधान कार्यालय के साथ–साथ अधीनस्थ तीनों यूनिटों में सितंबर माह के दौरान हिंदी पखवाड़े का अयोजन किया गया। पखवाड़े के दौरान सभी कार्यालयों में कार्मिकों के लिए हिन्दी की विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया था। हिन्दी पखवाड़ा समापन समारोह के दौरान विजेताओं को पुरस्कृत किया गया।

प्रधान कार्यालय

राजभाषा विचार संगोष्ठी

राजभाषा विभाग द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम में निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने तथा कार्यालय में हिन्दी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए निगमित कार्यालय में कार्मिकों के लिए दो विचार संगोष्ठियों का आयोजन किया गया।

21 सितंबर, 2022

27 सितंबर, 2022

हिंदी पखवाडा, 2022 समापन
निगमित

एवं पुरस्कार वितरण समारोह

कार्यालय

हिल (इंडिया) लिमिटेड हिन्दी पखवाड़े का आयोजन

हिल (इंडिया) लिमिटेड की पंजाब स्थित बठिंडा यूनिट में हिन्दी पखवाड़े का समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह का आयोजन किया गया। हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को यूनिट प्रमुख एवं उप महाप्रबन्धक (मा.सं. एवं प्र.) ने पुरस्कार प्रदान किए।

कार्मिक / प्रशासन कल्याण वाणिज्य विभाग

हिल (इंडिया) लिमिटेड में स्वतंत्रता दिवस समारोह 2022

गुरूग्राम

हिल (इंडिया) लिमिटेड के गुरूग्राम स्थित अनुसंधान एवं विकास केन्द्र में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर निदेशक (विपणन) श्री शशांक चतुर्वेदी द्वारा ध्वजारोहण किया गया।

उद्योगमंडल यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की केरल स्थित उद्योगमंडल यूनिट में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य पर यूनिट प्रमुख श्री पी. डी. संकपाल द्वारा अन्य कार्मिकों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया गया।

हिल (इंडिया) लिमिटेड में स्वतंत्रता दिवस समारोह 2022

रसायनी यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की महाराष्ट्र स्थित रसायनी यूनिट में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर श्री डी.डी. सोनवानी, यूनिट प्रमुख द्वारा सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण पश्चात् संबोधित किया गया ।

बठिंडा यूनिट

हिल (इंडिया) लिमिटेड की पंजाब स्थित बठिंडा यूनिट में स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर श्री बिजय कुमार महाराणा, यूनिट प्रमुख द्वारा सभी कर्मचारियों एवं अधिकारियों की उपस्थिति में ध्वजारोहण किया गया।

हिल में स्वच्छता पखवाड़ा - 2022

स्वच्छता पखवाड़ा 2022 के दौरान
हिल (इंडिया) लिमिटेड की गुरूग्राम स्थित अनुसंधान एवं विकास केन्द्र में आयोजित स्वच्छता जागरूकता अभियान में निदेशक (वित्त) एवं निदेशक (विपणन) सहित अन्य अधिकारीगणों ने स्वच्छता ड्राइव में अपना योगदान दिया।

हिल (इंडिया) लिमिटेड रक्तदान शिविर

हिल (इंडिया) लिमिटेड, निगमित कार्यालय ने रोटरी क्लब, दिल्ली के सहयोग से दिनांक 30.09.2022 को रक्तदान शिविर का आयोजन किया।

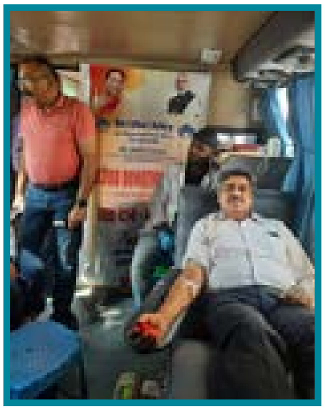

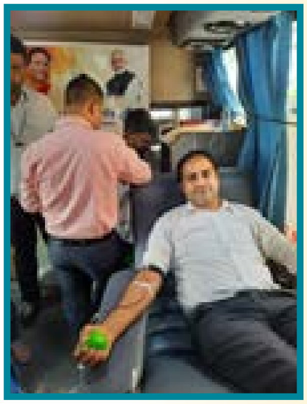

हिल की केरल स्थित उद्योगमंडल यूनिट में कंपनी के नव नियुक्त निदेशक (वित्त) श्री डी.एन.वी. श्रीनिवास राजू ने दौरा किया। उद्योगमंडल यूनिट में सेवानिवृत्ति विदाई समारोह के दौरान सेवानिवृत्त कार्मिकों के साथ निदेशक (वित्त)

सेवानिवृत्ति/स्वेच्छा सेवानिवृत्ति एवं त्याग पत्र के अवसर पर हिल (इंडिया) लिमिटेड परिवार अपने निम्नलिखित अधिकारियों एवं कर्मचारियों के सुखद भविष्य, उत्तम स्वास्थ्य एवं समृद्धि की कामना करता है।

(दिनांक अप्रैल, 2022 से सितंबर, 2022 तक सेवानिवृत्त/स्वेच्छा सेवानिवृत्त/ त्याग पत्र अधिकारी एवं कर्मचारी)

क्र.सं.	नाम (श्री/श्रीमती/सुश्री)	पदनाम	तैनाती स्थान
1.	शेफाली खन्ना	विधि अधिकारी	निगमित कार्यालय
2.	आशीष सविता	सहायक प्रबंधक (मां.सं. एवं प्र.)	निगमित कार्यालय
3.	आरती गुप्ता	उप वित्त प्रबंधक	निगमित कार्यालय
4.	फैज इस्माइल बुबरे	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
5.	नरायणजिपरू पाटिल	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
6.	वामन पांडुरंग चवहाण	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
7.	रामचंद्र कालूराम पाटिल	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
8.	लक्ष्मण बालू रसल	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
9.	पांडुरंग विष्णु जाधव	फिटर	रसायनी यूनिट
10.	बलिराम वरकु गताडे	ऑपरेटर श्रेणी–III	रसायनी यूनिट
11.	कुंडलिक राम जम्भले	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
12.	मधुकर जोमा भंडारकर	सुपरवाइजर	रसायनी यूनिट
13.	लक्ष्मण विट्ठल माली	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
14.	गुरूनाथ जम्मू पाटिल	अधिकारी (समय पाल)	रसायनी यूनिट
15.	आनंद शामराव संकपाल	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
16.	ज्ञानेश्र्वर मारूति दामाडे	इलेक्ट्रिशियन	रसायनी यूनिट
17.	महादेव रामचंद्र चोगले	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
18.	रमेश गजानन कडेकर	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
19.	रफीक युसूफ दखवे	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
20.	अन्ना गजानन पाटिल	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
21.	सुदाम कालूराम भगित	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
22.	ज्ञानेश्र्वर लक्ष्मण भगत	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
23.	गणेश लहू म्हात्रे	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
24.	प्रकाश नाथूराम कुमरोथकर	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
25.	भगवान राम कोली	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
26.	प्रकाश प्रीतम बहोत	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
27.	कृष्ण करमपुदी शिव राम	लैब एनालिस्ट	रसायनी यूनिट
28.	काशीनाथ शंकर मोकल	लैब एनालिस्ट	रसायनी यूनिट
29.	रश्मी प्रमोद देशपांडे	सहायक (वित्त)	रसायनी यूनिट

30.	रत्नादीप सखाराम देशमुख	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
31.	प्रदीप भास्कर फड़	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
32.	नितिन अनंत कुलकर्णी	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
33.	सुरेश मायति गायकवाड़	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
34.	हरिश्र्चद्र रामभाऊ म्हात्रे	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
35.	दयानंद दादू यादव	ऑपरेटर	रसायनी यूनिट
36.	सी.वी. रशीद	उत्पादक प्रबंधक	उद्योगमंडल यूनिट
37.	वी एम शशिकला	सहायक अधिकारी (कल्याण)	उद्योगमंडल यूनिट
38.	जयदेवन	मुख्य डिपसेन्सर	उद्योगमंडल यूनिट
39.	अजिता कुमारी एम.एस	लेखाकार विशेष ग्रेड	उद्योगमंडल यूनिट
40.	स्वागत साहू	इंजीनियर (इलेक्ट्रिकल)	बठिंडा यूनिट
41.	रमेश चंदर	इंस्ट्रमेंट मैकेनिक ग्रेड। (विशेष)	बठिंडा यूनिट
42.	महिंदर सिंह गुसाई	फिटर ग्रेड ।	बठिंडा यूनिट
43.	सुनील कुमार त्रिपाठी	उप विपणन प्रबंधक	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय, पूर्व
44.	पिंटु कुमार मंडल	सहायक विपणन प्रबंधक	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय, पूर्व
45.	आशीष कुमार श्रीवास्तव	सहायक विपणन प्रबंधक	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय, पूर्व
46.	दीपक मिश्रा	विपणन अधिकारी	क्षेत्रीय बिक्री कार्यालय, अहमदाबाद

हिल (इंडिया) लिमिटेड परिवार में शामिल होने पर निम्नलिखित नए कार्मिकों का स्वागत है।			
1.	आरती गुप्ता	वित्त प्रबंधक	निगमित कार्यालय

प्रशासनिक शब्दावली

Allocation	नियतन, आबंटन
Allocation of business	कार्य नियतन
Bargain price	रियायती कीमत, सौदा कीमत
Bargain sale	रियायती ब्रिकी
Commencement	प्रारंभ
Commensurate	अनुरूप होना
Destitute	निराश्रित
Detriment	अहित
Efficiency	दक्षता, कार्यकुशलता
Eligibility	पात्रता
Forthcoming	आगामी
Forthwith	तत्काल
Grantee	अनुदानग्राही, अनुदान पाने वाला
Grantor	अनुदाता
Hazardous goods	खतरनाक सामान
Hazardous waste	खतरनाक अपशिष्ट
Incitement	उद्दीपन, उकसाव
Inclination	रूझान, झुकाव, प्रवृत्ति
Juniority	कनिष्ठता
Juniormost	कनिष्ठतम
Know-how	तकनीकी जानकारी
Knowingly	जानबूझकर
Lapse	बीत जाना, व्यपगत होना
Lastly	अंततः
Mass consumption	व्यापक उपभोग
Mass production	बड़े पैमाने पर उत्पादन, पुंज उत्पादन
Nominal charge	नाममात्र प्रभार
Not negotiable	अ–परक्राम्य
Order of preference	अधिमान्यता क्रम
Order of priority	प्राथमिकता–क्रम
Orientation	अभिविन्यास
Oriented	अभिविन्यस्त, उन्मुख

Permissible	अनुज्ञेय, अनुमेय
Permitted	अनुमति प्राप्त, अनुज्ञप्त
Prefential purchase	अधिमानी क्रय
Preferential rate	अधिमानी दर
Qualifying factor	अर्हक कारक
Qualifying level	अर्हक स्तर
Quality	गुण, विशेषता, गुणता
Quantity	मात्रा, परिमाण
Relieve	भारतमुक्त करना
Renounce	त्यागना, छोड़ देना
Requisite	अपेक्षित
Requisition	मांग, अध्यपेक्षा
Screening	छानबीन, जांच–परख
Seniority	वरिष्ठता
Seniormost	वरिष्ठतम
Succession	उत्तराधिकार, उत्तरवर्तन
Technique	तकनीक, प्रविधि
Technology	प्रौद्योगिक
Telecommunications	दूर संचार
Teleconferencing	दूर–संलाप
Under privileged	अल्प सुविधा प्राप्त
Underweight	न्यूनभार
Vest	निहित होना
Vet	जांच करना, विधिक्षा
Vice Versa	विपर्यण, इसका उल्टा
Vis-à-vis	के समान, की तुलना में
Warranty	वारंटी, आश्वस्ति
Widely read	बहुपठित, सुपठित
Withdrawal	वापसी, प्रत्याहरण, निकासी
Year to Year	वर्षानुवर्ष, वर्षानुवर्शी
yielding Ability	उपज योग्यता
Yielding capacity	उपज क्षमता
Zonal office	आंचलिक कार्यालय

राजभाषा हिन्दी के क्षेत्र में योगदान के लिए

रसायन और उर्वरक मंत्रालय द्वारा दिनांक 23.06.2022 को माननीय रसायन और उर्वरक मंत्री श्री मनसुख मांडविया की अध्यक्षता में आयोजित हिन्दी सलाहकार समिति की बैठक में ''राजभाषा हिन्दी में उत्कृष्ट कार्य'' करने के लिए हिल (इंडिया) लिमिटेड को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार अध्यक्ष एवं प्रबन्ध निदेशक महोदय श्री एस.पी. मोहन्ती ने प्राप्त किया। इस अवसर पर रसायन और उर्वरक राज्य मंत्री श्री भगवंत खुबा के साथ–साथ अन्य सांसद गण भी उपस्थित थे।

हिल (इंडिया) लिमिटेड को नराकास (उपक्रम–2) दिल्ली की दिनांक 10.08.2022 को आयोजित छःमाही बैठक में वर्ष 2020–21 में दोहा पाठ प्रतियोगिता का आयोजन करने के लिए ''शील्ड पुरस्कार सम्मान'' तथा वर्ष 2020–21 एवं 2021–22 हेतु गृह पत्रिका 'रक्षक' के लिए उत्कृष्ट पत्रिका पुरस्कार प्राप्त हुआ। यह पुरस्कार निदेशक (विपणन) एवं सहायक प्रबन्धक (राजभाषा) ने प्राप्त किए।

हि इ लि

समृद्धि हेतु सुरक्षा

उद्देश्य

किसानों को पेस्टिसाइड्स की एक विशाल विविधता प्रदान करने के लिए उत्पाद प्रोफाइल का विस्तार करना।

कृषि समुदाय के लिए तीन क्षेत्रों अर्थात कृषि रसायन, बीज और उर्वरकों की एक पूर्ण बास्केट प्रदान करना।

दूरदर्शिता

जनस्वास्थ्य एवं फसल संरक्षण के क्षेत्र में एक अग्रणी प्रतिस्पर्द्धक बनना।

गुणवत्ता नीति

सरकार के जन–स्वास्थ्य/फसल संरक्षण कार्यक्रमों को बल प्रदान करना।

पेस्टिसाइड्स के उचित प्रयोग को उन्नत करना।

कार्मिक उत्पादकता में सुधार लाना।

कार्मिक सहभागिता को प्रोत्साहित करना।

कार्मिकों में सुरक्षा जागरूकता बढ़ाना।

हिल (इंडिया) लिमिटेड

(भारत सरकार का उद्यम)

निगमित कार्यालय

स्कोप काम्पलैक्स, कोर–6, द्वितीय मंजिल, 7, लोदी रोड, नई दिल्ली–110003

दूरभाष: 24362100, 24361107, फैक्स: 24362116

ई–मेल: headoffice@hil.gov.in   वेबसाइट: www.hil.gov.in

Pamm Advtg. & Mktg.